गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका जुलाई-2018

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका

जुलाई-2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvakaryalay.in

http://gk.yolasite.com/

www.shrigems.com

www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA

Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

कौन है गुरु?

हिन्दू सभ्यता का इतिहास जितना पुरातन है, गुरु शब्द भी उतना ही पुरातन है।
आजके आधुनिक युग में गुरु शब्द का अर्थ चाहे जितना बदला हो, लेकिन पारंपरिक हिन्दू धर्म शास्त्रों-ग्रंथों में गुरु शब्द की महिमा अपार हैं, हिन्दू धर्म शास्त्रों-ग्रंथों गुरु को भगवान के समान या भगवान से भी अधिक महत्व दिया गया हैं।

सरल शब्दों में वर्णन करे तो मनुष्य को छोटा हो या बड़ा किसे भी कार्य को सीखने के लिए किसी ना किसी रुप में गुरु की आवश्यक्ता होती हैं। फिर चाहे वह कार्य भौतिक जीवन से जुड़ा हो या आध्यात्मिक जीवन से से जुड़ा हो, वह कार्य गुरुकृपा के बिना संपन्न नहीं हो सकता।

सरल भाषा में गुरु की व्याख्या करनी हो, तो हमारे धर्मग्रंथ-शास्त्र एवं विद्वानों ने गुरु को ज्ञान का भंडार कहा है।

यदि हम गुरु शब्द का शाब्दिक अर्थ समझे तो, 'गु' यानी अंधकार, 'रु' यानी प्रकाश होता हैं,
अर्थात् जो अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर अग्रस्त करता है, वह गुरु है।

मनुष्य के जीवन में अनेक गुरु होते हैं। छोटे बालको को अक्षर ज्ञान देने वाले शिक्षक/शिक्षिका को 'विद्या गुरु' कहा जाता है। उसी प्रकार उपनयन-संस्कार, विवाह-संस्कार, इत्यादि धार्मिक षोडश संस्कार करने वाले को कुलगुरु या कुल पुरोहित कहा जाता है। नौकरी-व्यापार-कार्य क्षेत्र से संबंधित ज्ञान देने वाले को व्यवसाय गुरु कहा जाता है। इसी प्रकार अध्यात्म की ओर अग्रस्त करने वाले को अध्यात्म गुरु कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त भी जीवन में अनेक गुरु होते हैं। जिससे भी हम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में कुछ भी सीखते हैं, हिन्दू संस्कृति में उसे गुरु कहा जाता है।

महापुरुषो के मतानुशार व्यक्ति को अपने जीवन में पूर्णता किसी सद्‌गुरु गुरु की शरण में जाने से प्राप्त हो सकती हैं। भारतीय धर्मशास्त्रो में गुरुको ब्रह्म स्वरुप कहां गया हैं।
किसी सद्द गुरु के प्राप्त होने पर व्यक्ति के सभी धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि समाप्त हो जाते हैं।

यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम् ।

सः एव सर्वसम्पत्तिः तस्मात्संपूजयेद् गुरुम् ।।

अर्थात: जिनके स्मरण मात्र से ज्ञान अपने आप प्रकट होने लगता है और वे ही सर्व सम्पदा रूप हैं, अतः श्री गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए।
हमारे ऋषि मुनि के मतानुशार गुरु उसे मानना चाहिये जो

प्रेरकः सूचकश्वैव वाचको दर्शकस्तथा ।

शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः ॥

अर्थात: प्रेरणा देनेवाले, सूचन देनेवाले, सच बतानेवाले, सही रास्ता दिखानेवाले, शिक्षण देनेवाले, और बोध करानेवाले ये सब गुरु समान हैं।

गुरुशब्द की परिभाषा शब्दो में लिखना या बताना एक मूर्खता हैं एक ओछापन हैं। क्योकि गुरु की महिमा अनंत हैं अपार हैं। इस लिये कबिरजी ने लिखा हैं।

गुरु गोविंद दोनो खड़े काके लागू पांव,
गुरु बलिहारी आपने गोविंद दियो बताए।

गुरु की तुलना किसी अन्य से करना कभी भी संभव नहीं हैं। इस लिये शास्त्र कहते हैं।

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्‌गुरोर्ज्ञानदातुः
स्पर्शश्चेत्तत्र कलप्यः स नयति यदहो स्वहृतामश्मसारम् ।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरगुणयुगे सद्‌गुरुः
स्वीयशिष्ये स्वीयं साम्यं विधते भवति निरुपमस्तेवालौकिकोऽपि ॥

अर्थात: तीनों लोक, स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल में ज्ञान देनेवाले गुरु के लिए कोई उपमा नहीं दिखाई देती । गुरु को पारसमणि के जैसा मानते है, तो वह ठीक नहीं है, कारण पारसमणि केवल लोहे को सोना बनाता है, पर स्वयं जैसा नहि बनाता ! सद्‌बुरु तो अपने चरणों का आश्रय लेनेवाले शिष्य को अपने जैसा बना देता है; इस लिए गुरुदेव के लिए कोई उपमा नहि है, गुरु तो अलौकिक है ।

इस कलियुग में धर्म के नाम पर गुरुके नाम का ठोंगी चोला पहनने वालो की भी कमी नहीं हैं इस लिये शास्त्रो में लिखा हैं।

सर्वाभिलाषिणः सर्वभोजिनः सपरिग्रहाः ।
अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥

अर्थात: अभिलाषा रखनेवाले, सब भोग करनेवाले, संग्रह करनेवाले, ब्रह्मचर्य का पालन न करनेवाले, और मिथ्या उपदेश करनेवाले, गुरु नहि होते है ।

जो गुरु अविद्या, असंयम, अनाचार, कदाचार, दुराचार, पापाचार आदि से मुक्ति दिलाता है, वही गुरु नमस्कार योग्य है।

इस गुरु पूर्णिमा विशेषांक में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं…

चिंतन जोशी

***** गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित सूचना *****

- पत्रिका में गुरु पूर्णिमा विशेषांक में देवी उपासना से संबंधित लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- गुरु उपासना का विषय आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया हैं।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित सभी जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- गुरु पूर्णिमा विशेषांक में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

गुरु प्रार्थना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

भावार्थ: गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु हि शंकर हैं; गुरु हि साक्षात् परब्रह्म हैं; एसे सद्गुरु को नमन ।

ध्यानमूलं गुरुर्मूतिः पूजामूलम गुरुर पदम्।
मंत्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरुर कृपा।।

भावार्थ: गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल कारण है, गुरु के चरण पूजा का मूल कारण हैं, वाणी जगत के समस्त मंत्रों का और गुरु की कृपा मोक्ष प्राप्ति का मूल कारण हैं।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव
बंधुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति द्वंद्वातीतं
गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् । एकं नित्यं
विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभुतं भावातीतं त्रिगुणरहितं
सद्गुरुं तं नमामि ॥

भावार्थ: ब्रह्मा के आनंदरुप परम् सुखरुप, ज्ञानमूर्ति, द्वंद्व से परे, आकाश जैसे निर्लेप, और सूक्ष्म "तत्त्वमसि" इस ईशतत्त्व की अनुभूति हि जिसका लक्ष्य है; अद्वितीय, नित्य विमल, अचल, भावातीत, और त्रिगुणरहित - ऐसे सद्गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ ।

गुर्वष्टकम्

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं,
यशश्चारु चित्रं धनं मेरु तुल्यम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥१॥
कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादिसर्वं,
गृहो बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥२॥
षड़ंगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या,
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥३॥
विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः,
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥४॥
क्षमामण्डले भूपभूपलबृब्दैः,
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥५॥
यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्,
जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥६॥
न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ,
न कन्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥७॥
अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये,
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥८॥
गुरोरष्टकं यः पठेत्पुरायदेही,
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही।
लमेद्वाच्छिताथं पदं ब्रह्मसंज्ञं,
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम्॥९॥

॥इति श्रीमद आद्य शंकराचार्यविरचितम् गुर्वष्टकम् संपूर्णम्॥

भावार्थः (१) यदि शरीर रूपवान हो, पत्नी भी रूपसी हो और सत्कीर्ति चारों दिशाओं में विस्तरित हो, सुमेरु पर्वत के तुल्य अपार धन हो, किंतु गुरु के श्रीचरणों में यदि मन आसक्त न हो तो इन सारी उपलब्धियों से क्या लाभ?

(२) यदि पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र, कुटुंब, गृह एवं स्वजन, आदि प्रारब्ध से सर्व सुलभ हो किंतु गुरु के श्रीचरणों में यदि मन आसक्त न हो तो इस प्रारब्ध-सुख से क्या लाभ?

(३) यदि वेद एवं ६ वेदांगादि शास्त्र जिन्हें कंठस्थ हों, जिनमें सुन्दर काव्य निर्माण की प्रतिभा हो, किंतु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इन सदगुणों से क्या लाभ?

(४) जिन्हें विदेशों में समान आदर मिलता हो, अपने देश में जिनका नित्य जय-जयकार से स्वागत किया जाता हो और जिसके समान दूसरा कोई सदाचारी भक्त नहीं, यदि उनका भी मन गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो सदगुणों से क्या लाभ?

(५) जिन महानुभाव के चरण कमल भूमण्डल के राजा-महाराजाओं से नित्य पूजित रहते हों, किंतु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इस सदभाग्य से क्या लाभ?

(६) दानवृत्ति के प्रताप से जिनकी कीर्ति चारो दिशा में व्याप्त हो, अति उदार गुरु की सहज कृपा दृष्टि से जिन्हें संसार के सारे सुख-एश्वर्य हस्तगत हों, किंतु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों में आसक्तभाव न रखता हो तो इन सारे एशवर्यों से क्या लाभ?

(७) जिनका मन भोग, योग, अश्व, राज्य, स्त्री-सुख और धन भोग से कभी विचलित न होता हो, फिर भी गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न बन पाया हो तो मन की इस अटलता से क्या लाभ?

(८) जिनका मन वन या अपने विशाल भवन में, अपने कार्य या शरीर में तथा अमूल्य भण्डार में आसक्त न हो, पर गुरु के श्रीचरणों में भी वह मन आसक्त न हो पाये तो इन सारी अनासक्तियों का क्या लाभ?

(९) जो यति, राजा, ब्रह्मचारी एवं गृहस्थ इस गुरु अष्टक का पठन-पाठन करता है और जिसका मन गुरु के वचन में आसक्त है, वह पुण्यशाली शरीरधारी अपने इच्छितार्थ एवं ब्रह्मपद इन दोनों को संप्राप्त कर लेता है यह निश्चित है।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

गुरुमंत्र के प्रभाव से ईष्ट दर्शन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विद्वानो के अनुशार शास्त्रोक्त उल्लेख हैं की कोई भी मंत्र निश्चित रूप से अपना प्रभाव अवश्य रखते हैं।

जिस प्रकार पानी में कंकड़-पत्थर डालने से उसमें तरंगे उठती हैं उसी प्रकार से मंत्रजप के प्रभाव से हमारे भीतर आध्यात्मिक तरंग उत्पन्न होती हैं। जो हमारे इर्द-गिर्द सूक्ष्म रूप से एक सुरक्षा कवच जैसा प्रकाशित वलय (अर्थात ओरा) का निर्माण होता हैं। उन ओरा का सूक्ष्म जगत में उसका प्रभाव पड़ता है। जो खुली आंखो से सामान्य व्यक्ति को उसका प्रभाव दिखाई नहीं देता। उस सुरक्षा कवच से व्यक्ति को नकारात्मक प्रभावी जीव व शक्तिया उसके पास नहीं आ सकतीं।

श्रीमदभगवदगीता की 'श्री मधुसूदनी टीका' प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण टीकाओं में से एक हैं। इस टीका के रचयिता श्री मधुसूदन सरस्वतीजी जब संकल्प करके लेखनकार्य के लिए बैठे ही थे कि एक तेजस्वी आभा लिये परमहंस संन्यासी अचानक घर का द्वार खोलकर भीतर आये और बोलेः "अरे मधुसूदन! तू गीता पर टीका लिखता है तो गीताकार से मिला भी है कि ऐसे ही कलम उठाकर बैठ गया है? तूने कभी भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किये हैं कि ऐसे ही उनके वचनों पर टीका लिखने लग गया?"

श्री मधुसूदनजी तो थे वेदान्ती, अद्वैतवादी। वे बोलेः "दर्शन तो नहीं किये। निराकार ब्रह्म-परमात्मा सबमें एक ही है। श्रीकृष्ण के रूप में उनका दर्शन करने का हमारा प्रयोजन भी नहीं है। हमें तो केवल उनकी गीता का अर्थ स्पष्ट करना है।"

"संन्यासी बोले नहीं ....पहले उनके दर्शन करो फिर उनके शास्त्र पर टीका लिखो। लो यह मंत्र। छः महीने इसका अनुष्ठान करो। भगवान प्रकट होंगे। उनसे प्रेरणा मिले फिर लेखनकार्य का प्रारंभ करो।"

मंत्र देकर बाबाजी चले गये। श्री मधुसूदनजी ने अनुष्ठान शुरु किया। अनुष्ठान के छः महीने पूर्ण हो गये लेकिन श्रीकृष्ण के दर्शन न हुए। 'अनुष्ठान में कुछ त्रुटि रह गई होगी' ऐसा सोचकर श्री मधुसूदनजी ने दूसरे छः महीने में दूसरा अनुष्ठान किया फिर भी श्रीकृष्ण दर्शन न हुए।

दो बार अनुष्ठान के उरांत असफलता प्राप्त होने पर श्री मधुसूदन के चित्त में ग्लानि हो गई। सोचा किः 'किसी अजनबी बाबाजी के कहने से मैंने बारह मास बिगाड़ दिये अनुष्ठानों में।

सबमें ब्रह्म माननेवाला मैं 'हे कृष्ण ...हे भगवान ... दर्शन दो ...दर्शन दो...' ऐसे मेरा गिड़गिड़ाना?

जो श्रीकृष्ण की आत्मा है वही मेरी आत्मा है। उसी आत्मा में मस्त रहता तो ठीक रहता। श्रीकृष्ण आये नहीं और पूरा वर्ष भी चला गया। अब क्या टीका लिखना?"

वे ऊब गये। अब न टीका लिख सकते हैं न तीसरा अनुष्ठान कर सकते हैं। चले गये यात्रा करने को तीर्थ में। वहाँ पहुँचे तो सामने से एक चमार आ रहा था। उस चमार ने इनको पहली बार देखा और श्री मधुसूदनजी ने भी चमार को पहली बार देखा।

चमार ने कहाः "बस, स्वामीजी! थक गये न दो अनुष्ठान करके?"

श्रीमधुसूदन स्वामी चौंके! सोचाः "अरे मैंने अनुष्ठान किये, यह मेरे सिवा और कोई जानता नहीं। इस चमार को कैसे पता चला?"

वे चमार से बोलेः "तेरे को कैसे पता चला?", "कैसे भी पता चला। बात सच्ची करता हूँ कि नहीं? दो अनुष्ठान करके थककर आये हो। ऊब गये, तभी इधर आये हो। बोलो, सच कि नहीं?"

"भाई! तू भी अन्तर्यामी गुरु जैसा लग रहा है। सच बता, तूने कैसे जाना?"

"स्वामी जी! मैं अन्तर्यामी भी नहीं और गुरु भी नहीं। मैं तो हूँ जाति का चमार। मैंने भूत को अपने वश में

किया है। मेरे भूत ने बतायी आपके अन्तःकरण की बात।"

श्री मधुसूदनजी बोले "भाई! देख श्रीकृष्ण के तो दर्शन नहीं हुए, कोई बात नहीं। प्रणव का जप किया, कोई दर्शन नहीं हुए। गायत्री का जप किया, दर्शन नहीं हुए। अब तू अपने भूत का ही दर्शन करा दे, चल।"

चमार ने कहाः "स्वामी जी! मेरा भूत तो तीन दिन के अंदर ही दर्शन दे सकता है। 72घण्टे में ही वह आ जायेगा। लो यह मंत्र और उसकी विधि।"

श्री मधुसूदनजी ने चमार द्वारा बताई गई पूर्ण विधि जाप किया। एक दिन बीता, दूसरा बीता, तीसरा भी बीत गया और चौथा शुरु हो गया। 72घण्टे तो पूरे हो गये। भूत आया नहीं। गये चमार के पास। श्री मधुसूदनजी बोलेः "श्री कृष्ण के दर्शन तो नहीं हुए मुझे तेरा भूत भी नहीं दिखता?" चमार ने कहाः "स्वामी जी! दिखना चाहिए।"

श्री मधुसूदनजी ने कहाः "नहीं दिखा।"

चमार ने कहाः "मैं उसे रोज बुलाता हूँ, रोज देखता हूँ। ठहरिये, मैं बुलाता हूँ, उसे।" वह गया एक तरफ और अपनी विधि करके उस भूत को बुलाया, भूत से बात की और वापस आकर बोलाः

"बाबा जी! वह भूत बोलता है कि मधुसूदन स्वामी ने ज्यों ही मेरा नाम स्मरण किया, तो मैं खिंचकर आने लगा। लेकिन उनके करीब जाने से मेरे को आग जैसी तपन लगी। उनका तेज मेरे से सहा नहीं गया। उन्होंने सकारात्मक शक्तिओं का अनुष्ठान किया है तो उनका आध्यात्मिक ओज इतना बढ़ गया है कि हमारे जैसे तुच्छ शक्तियां उनके करीब खड़े नहीं रह सकते। अब तुम मेरी ओर से उनको हाथ जोड़कर प्रार्थना करना कि वे फिर से अनुष्ठान करें तो सब प्रतिबन्ध दूर हो जायेंगे और भगवान श्रीकृष्ण मिलेंगे। बाद में जो गीता की टीका लिखेंगे। वह बहुत प्रसिद्ध होगी।"

श्री मधुसूदन जी ने फिर से अनुष्ठान किया, भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन हुए और बाद में भगवदगीता पर टीका लिखी। आज भी वह 'श्री मधुसूदनी टीका' के नाम से पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

जिन्हें सद्द भाग्य से गुरुमंत्र मिला है और वहं पूर्ण निष्ठा व विश्वास से विधि-विधान से उसका जप करता है। उसे सभी प्रकार कि सिद्धिया स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। उसे नकारात्मक शक्तियां व प्रभावीजीव कष्ट नहीं पहूंचा सकते।

***

गुरुमंत्र के प्रभाव से रक्षा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

'स्कन्द पुराण' के ब्रह्मोत्तर खण्ड में उल्लेख हैः काशी नरेश की कन्या कलावती के साथ मथुरा के दाशार्ह नामक राजा का विवाह हुआ।

विवाह के बाद राजा ने अपनी पत्नी को बुलाया और संसार-व्यवहार स्थापीत करने की बात कहीं परंतु पत्नी ने इन्कार कर दिया। तब राजा ने जबर्दस्ती करने की बात कही।

पत्नी ने कहाः "स्त्री के साथ संसार-व्यवहार करना हो तो बल-प्रयोग नहीं, प्यार स्नेह-प्रयोग करना चाहिए।

पत्नी ने कहाः नाथ ! मैं आपकी पत्नी हूँ, फिर भी आप मेरे साथ बल-प्रयोग करके संसार-व्यवहार न करें।"

आखिर वह राजा था। पत्नी की बात सुनी-अनसुनी करके पत्नी के नजदीक गया। ज्यों ही उसने पत्नी का स्पर्श किया त्यों ही उसके शरीर में विद्युत जैसा करंट लगा।

उसका स्पर्श करते ही राजा का अंग-अंग जलने लगा। वह दूर हटा और बोलाः "क्या बात है? तुम इतनी सुन्दर और कोमल हो फिर भी तुम्हारे शरीर के स्पर्श से मुझे जलन होने लगी?"

पत्नीः "नाथ ! मैंने बाल्यकाल में दुर्वासा ऋषि से गुरुमंत्र लिया था। वह जपने से मेरी सात्त्विक ऊर्जा का विकास हुआ है।

जैसे, रात और दोपहर एक साथ नहीं रहते उसी तरह आपने शराब पीने वाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ जो संसार-भोग भोगा हैं, उससे आपके पाप के कण आपके शरीर में, मन में, बुद्धि में अधिक है और मैंने जो मंत्रजप किया है उसके कारण मेरे शरीर में ओज, तेज, आध्यात्मिक कण अधिक हैं।

इसलिए मैं आपके नजदीक नहीं आती थी बल्कि आपसे थोड़ी दूर रहकर आपसे प्रार्थना करती थी। आप बुद्धिमान हैं बलवान हैं, यशस्वी हैं धर्म की बात भी आपने सुन रखी है। फिर भी आपने शराब पीनेवाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ भोग भोगे हैं।"

राजाः "तुम्हें इस बात का पता कैसे चल गया?"

पत्नीः "नाथ ! हृदय शुद्ध होता है तो यह ख्याल स्वतः आ जाता है।"

राजा प्रभावित हुआ और रानी से बोलाः "तुम मुझे भी भगवान शिव का वह मंत्र दे दो।"

रानीः"आप मेरे पति हैं। मैं आपकी गुरु नहीं बन सकती। हम दोनों गर्गाचार्य महाराज के पास चलते हैं।"

दोनों गर्गाचार्यजी के पास गये और उनसे प्रार्थना की। उन्होंने स्नानादि से पवित्र हो, यमुना तट पर अपने शिवस्वरूप के ध्यान में बैठकर राजा-रानी को द्रष्टीपात से पावन किया। फिर शिवमंत्र देकर अपनी शांभवी दीक्षा से राजा पर शक्तिपात किया। विद्वानो के मतानुशार कथा मे उल्लेख हैं कि देखते-ही-देखते सैकडो तुच्छ परमाणु राजा के शरीर से निकल-निकलकर पलायन कर गये।

गुरुमंत्र के जप से अलौकिक सिद्धिया प्राप्त होती हैं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कौंडिण्यपुर में शशांगर नाम के राजा राज्य करते थे। वे प्रजापालक थे। उनकी रानी मंदाकिनी भी पतिव्रता, धर्मपरायण थी। लेकिन संतान न होने के कारण दोनों दुःखी रहते थे।

उन्होंने रामेश्वर जाकर संतान प्राप्ति के लिए शिवजी की पूजा, तपस्या का विचार किया। पत्नी को लेकर राजा रामेश्वर की ओर चल पड़े। मार्ग में कृष्णा-तुंगभद्रा नदी के संगम-स्थल पर दोनों ने स्नान किया और वहीं निवास करते हुए वे शिवजी की आराधना करने लगे।

एक दिन स्नान करके दोनों लौट रहे थे कि राजा को मित्रि सरोवर में एक शिवलिंग दिखाई पड़ा। उन्होंने वह शिवलिंग उठा लिया और अत्यंत श्रद्धा से उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की। राजा रानी पूर्ण निष्ठा से शिवजी की पूजा-अर्चना करने लगे। संगम में स्नान करके शिवलिंग की पूजा करना उनका नित्यक्रम बन गया।

एक दिन कृष्णा नदी में स्नान करके राजा सूर्यदेवता को अर्घ्य देने के लिए अंजलि में जल ले रहे थे, तभी उन्हें एक शिशु दिखाई दिया। उन्हें आसपास दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया। तब राजा ने सोचा कि 'जरूर भगवान शिवजी की कृपा से ही मुझे इस शिशु की प्राप्ति हुई है !' वे अत्यंत हर्षित हुए और अपनी पत्नी के पास जाकर उसको सब वृत्तांत सुनाया।

वह बालक गोद में रखते ही मंदाकिनी के आचल से दूध की धारा बहने लगी। रानी मंदाकिनी बालक को स्तनपान कराने लगी। धीरे-धीरे बालक बड़ा होने लगा। वह बालक कृष्णा नदी के संगम-स्थान पर प्राप्त होने के कारण उसका नाम '**कृष्णागर**' रखा गया।

राजा-रानी कृष्णागर को लेकर अपनी राजधानी कौंडिण्युपर में वापस लौट आये। ऐसे अलौकिक बालक को देखने के लिए सभी राज्यवासी राजभवन में आये। बड़े उत्साह के साथ समारोहपूर्वक उत्सव मनाया गया।

जब कृष्णागर 17 वर्ष का युवक हुआ तब राजा ने अपने मंत्रियों को कृष्णागर के लिए उत्तम कन्या ढूँढने की आज्ञा दी। परंतु कृष्णागर के योग्य कन्या उन्हें कहीं भी न मिली। उसके बाद कुछ ही दिनों में रानी मंदाकिनी की मृत्यु हो गयी। अपनी प्रिय रानी के मर जाने का राजा को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने वर्षभर श्राद्धादि सभी कार्य पूरे किये और अपनी मदन-पीड़ा के कारण चित्रकूट के राजा भुजध्वज की नवयौवना कन्या भुजावंती के साथ दूसरा विवाह किया। उस समय भुजावंती की उम्र 13 वर्ष की थी और राजा शशांगर का पुत्र कृष्णागर की उम्र 17 वर्ष की थी।

एक दिन राजा शिकार खेलने राजधानी से बाहर गये हुए थे। कृष्णागर महल के प्रांगण में खड़े होकर खेल रहा था। उसका शरीर अत्यंत सुंदर व आकर्षक होने के कारण भुजावंती उस पर आसक्त हो गयी। उसने एक दासी के द्वारा कृष्णागर को अपने पास बुलवाया और उसका हाथ पकड़कर कामेच्छा पूरण करने की माँग की।

तब कृष्णागर न कहाः "हे माते ! मैं तो आपका पुत्र हूँ और आप मेरी माता हैं। अतः आपको यह शोभा नहीं देता। आप माता होकर भी पुत्र से ऐसा पापकर्म करवाना चाहती हो !'

ऐसा कहकर गुस्से से कृष्णागर वहाँ से चला गया। कृष्णागर के वहां से चले जाने के बाद में भुजावंती को अपने पापकर्म पर पश्चाताप होने लगा। राजा को इस बात का पता चल जायेगा, इस भय के कारण वह आत्महत्या करने के लिए प्रेरित हुई। परंतु उसकी दासी ने उसे समझायाः 'राजा के आने के बाद तुम ही कृष्णागर के खिलाफ बोलना शुरु कर दो कि उसने मेरा सतीत्व लूटने की कोशिश की। यहाँ मेरे सतीत्व की रक्षा नहीं हो सकती। कृष्णागर बुरी नियत का है, अब आपको जो करना है सो करो, मेरी तो जीने की इच्छा नहीं।'

राजा के आने के बाद रानी ने सब वृत्तान्त इसी प्रकार राजा को बताया जिस प्रकार से दासी ने बताया। राजा ने कृष्णागर की ऐसी हरकत सुनकर क्रोध के आवेश में अपने मंत्रियों को उसके हाथ-पैर तोड़ने की आज्ञा दे दी।

आज्ञानुसार वे कृष्णागर को ले गये। परंतु राजसेवकों को लगा कि राजा ने आवेश में आकर आज्ञा दी है। कहीं अनर्थ न हो जाय ! इसलिए कुछ सेवक पुनः राजा के पास आये। राजा का मन परिवर्तन करने की अभिलाषा से वापस आये हुए कुछ राजसेवक और अन्य नगर निवासी अपनी आज्ञा वापस लेने के राजा से अनुनय-विनय करने लगे। परंतु राजा का आवेश शांत नहीं हुआ और फिर से वही आज्ञा दी।

फिर राजसेवक कृष्णागर को चौराहे पर ले आये। सोने के चौरंग (चौकी) पर बिठाया और उसके हाथ पैर बाँध दिये। यह दृश्य देखकर नगरवासियों की आँखों मे दयावश आँसू बह रहे थे। आखिर सेवकों ने आज्ञाधीन होकर कृष्णागर के हाथ-पैर तोड़ दिये। कृष्णागर वहीं चौराहे पर पड़ा रहा।

कुछ समय बाद दैवयोग से नाथ पंथ के योगी मछेंद्रनाथ अपने शिष्य गोरखनाथ के साथ उसी राज्य में आये। वहाँ लोगों के द्वारा कृष्णागर के विषय में चर्चा सुनी। परंतु ध्यान करके उन्होंने वास्तविक रहस्य का पता लगाया। दोनों ने कृष्णागर को चौरंग पर देखा, इसलिए उसका नाम 'चौरंगीनाथ' रख दिया। फिर राजा से स्वीकृति लेकर चौरंगीनाथ को गोद में उठा लिया और बदरिकाश्रम गये। मछेन्द्रनाथ ने गोरखनाथ से कहाः "तुम चौरंगी को नाथ पंथ की दीक्षा दो और सर्व विद्याओं में इसे पारंगत करके इसके द्वारा राजा को योग सामर्थ्य दिखाकर रानी को दंड दिलवाओ।"

गोरखनाथ ने कहाः "पहले मैं चौरंगी का तप सामर्थ्य देखूँगा।" गोरखनाथ के इस विचार को मछेंद्रनाथ ने स्वीकृति दी।

चौरंगीनाथ को पर्वत की गुफा में बिठाकर गोरखनाथ ने कहाः 'तुम्हारे मस्तक के ऊपर जो शिला है, उस पर दृष्टि टिकाये रखना और मैं जो मंत्र देता हूँ उसी का जप चालू रखना। अगर दृष्टि वहाँ से हटी तो शिला तुम पर गिर जायेगी और तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। इसलिए शिला पर ही दृष्टि टिका कर रखना।' ऐसा कहकर गोरखनाथ ने उसे मंत्रोपदेश दिया और गुफा का द्वार इस तरह से बंद किया कि अंदर कोई वन्य पशु प्रवेश न कर सके। फिर अपने योगबल से चामुण्डा देवी को प्रकट करके आज्ञा दी कि इसके लिए रोज फल लाकर रखना ताकि यह उन्हें खाकर जीवित रहे।

उसके बाद दोनों तीर्थयात्रा के लिए चले गये। चौरंगीनाथ शिला गिरने के भय से उसी पर दृष्टि जमाये बैठे थे। फल की ओर तो कभी देखा ही नहीं वायु भक्षण करके बैठे रहते। इस प्रकार की योगसाधना से उनका शरीर कृश हो गया।

मछेंद्रनाथ और गोरखनाथ तीर्थाटन करते हुए जब प्रयाग पहुँचे तो वहाँ उन्हें एक शिवमंदिर के पास राजा त्रिविक्रम का अंतिम संस्कार होते हुए दिखाई पड़ा। नगरवासियों को अत्यंत दुःखी देखकर गोरखनाथ को अत्यंत दयाभाव उमड़ आया और उन्होंने मछेन्द्रनाथ से प्रार्थना की कि राजा को पुनः जीवित करें। परंतु राजा ब्रह्मस्वरूप में लीन हुए थे इसलिए मछेन्द्रनाथ ने राजा को जीवित करने की स्वीकृति नहीं दी। परंतु गोरखनाथ ने कहाः "मैं राजा को जीवित करके प्रजा को सुखी

करूँगा। अगर मैं ऐसा नहीं कर पाया तो स्वयं देह त्याग दूँगा।"

प्रथम गोरखनाथ ने ध्यान के द्वारा राजा का जीवनकाल देखा तो सचमुच वह ब्रहम में लीन हो चुका था। फिर गुरुदेव को दिए हुए वचन की पूर्ति के लिए गोरखनाथ प्राणत्याग करने के लिए तैयार हुए। तब गुरु मछेंद्रनाथ ने कहाः "राजा की आत्मा ब्रहम में लीन हुई है तो मैं इसके शरीर में प्रवेश करके 12 वर्ष तक रहूँगा। बाद में मैं लोक कल्याण के लिए मैं मेरे शरीर में पुनः प्रवेश करूँगा। तब तक तू मेरा यह शरीर सँभाल कर रखना।"

मछेंद्रनाथ ने तुरंत देहत्याग करके राजा के मृत शरीर में प्रवेश किया। राजा उठकर बैठ गया। यह आश्चर्य देखकर सभी जनता हर्षित हुई। फिर प्रजा ने अग्नि को शांत करने के लिए राजा का सोने का पुतला बनाकर अंत्यसंस्कार-विधि की।

गोरखनाथ की भेंट शिवमंदिर की पुजारिन से हुई। उन्होंने उसे सब वृत्तान्त सुनाया और गुरुदेव का शरीर 12 वर्ष तक सुरक्षित रखने का योग्य स्थान पूछा। तब पुजारिन ने शिवमंदिर की गुफा दिखायी। गोरखनाथ ने गुरुवर के शरीर को गुफा में रखा। फिर वे राजा से आज्ञा लेकर आगे तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़े।

12 वर्ष बाद गोरखनाथ पुनः बदरिकाश्रम पहुँचे। वहाँ चौरंगीनाथ की गुफा में प्रवेश किया। देखा कि एकाग्रता, गुरुमंत्र का जप तथा तपस्या के प्रभाव से चौरंगीनाथ के कटे हुए हाथ-पैर पुनः निकल आये हैं।

यह देखकर गोरखनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए। फिर चौरंगीनाथ को सभी विद्याएँ सिखाकर तीर्थयात्रा करने साथ में ले गये। चलते-चलते वे कौंडिण्यपुर पहुँचे। वहाँ राजा शशांगर के बाग में रुक गये। गोरखनाथ ने चौरंगीनाथ तो आज्ञा दी कि राजा के सामने अपनी शक्ति प्रदर्शित करे।

चौरंगीनाथ ने वातास्त्र मंत्र से अभिमंत्रित भस्म का प्रयोग करके राजा के बाग में जोरों की आँधी चला दी। वृक्षादि टूट-टूटकर गिरने लगे, माली लोग ऊपर उठकर धरती पर गिरने लगे। इस आँधी का प्रभाव केवल बाग में ही दिखायी दे रहा था इसलिए लोगों ने राजा के पास समाचार पहुँचाया। राजा हाथी-घोड़े, लशकर आदि के साथ बाग में पहुँचे। चौरंगीनाथ ने वातास्त्र के द्वारा राजा का सम्पूर्ण लशकर आदि आकाश में उठाकर फिर नीचे पटकना शुरु किया। कुछ नगरवासियों ने चौरंगीनाथ को अनुनय-विनय किया तब उसने पर्वतास्त्र का प्रयोग करके राजा को उसके लशकर सहित पर्वत पर पहुँचा दिया और पर्वत को आकाश में उठाकर धरती पर पटक दिया।

फिर गोरखनाथ ने चौरंगीनाथ को आज्ञा दी कि वह अपने पिता का चरणस्पर्श करे। चौरंगीनाथ राजा का चरणस्पर्श करने लगे किंतु राजा ने उन्हें पहचाना नहीं। तब गोरखनाथ ने बतायाः "तुमने जिसके हाथ-पैर कटवाकर चौराहे पर डलवा दिया था, यह वही तुम्हारा पुत्र कृष्णागर अब योगी चौरंगीनाथ बन गया है।"

गोरखनाथ ने रानी भुजावंती का संपूर्ण वृत्तान्त राजा को सुनाया। राजा को अपने कृत्य पर पश्चाताप हुआ। उन्होंने रानी को राज्य से बाहर निकाल दिया। गोरखनाथ ने राजा से कहाः "अब तुम तीसरा विवाह करो। तीसरी रानी के द्वारा तुम्हें एक अत्यंत गुणवान, बुद्धिशाली और दीर्घजीवी पुत्र की प्राप्ति होगी। वही राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा और तुम्हारा नाम रोशन करेगा।" राजा ने तीसरा विवाह किया। उससे जो पुत्र प्राप्त हुआ, समय पाकर उस पर राज्य का भार सौंपकर राजा वन में चले गये और ईश्वरप्राप्ति के साधन में लग गये। गोरखनाथ के साथ तीर्थों की यात्रा करके चौरंगीनाथ बदरिकाश्रम में रहने लगे।

इस प्रकार गुरुकृपा से कृष्णागर को गुरुमंत्र प्राप्त हुवा गुरुमंत्र का निष्ठा से जप कर के उन्हें सिद्धिया प्राप्त हुई व अपना खोया हुवा मान-समान पूनः प्राप्त हुवा।

आरुणि की गुरुभक्ति

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुशार महर्षि आयोदधौम्य के आश्रम में बहुत से शिष्य थे। सभी शिष्य गुरुदेव महर्षि आयोदधौम्य की बड़े प्रेम से सेवा करते थे। एक दिन संध्या के समय वर्षा होने लगी। मौसम को देखते हुएं अंदाजा लगना मुश्किल था की अगले कुछ समय तक वर्षा होगी या नहीं, इसका कुछ ठीक-ठिकाना नहीं था। वर्षा बहुत जोरसे हो रही थी। महर्षिने सोचा कि कहीं अपने धान के खेत की मेड़ अधिक पानी भरने से टूट जायगी तो खेतमें से सब पानी बह जायगा। पीछे फिर वर्षा न हो तो धान बिना पानी के सूख जायेगा। हर्षिने आरुणि से कहा—'बेटा आरुणि !तुम खेत पर जाकर देखो, की कही मेड़ टूटनेसे खेत का पानी बह न जाय।'

आरुणि अपने गुरुदेव की आज्ञा पाकर वर्षा में भीगते हुए खेतपर चले गये। वहाँ जाकर उन्हेंने देखा कि खेतकी मेड़ एक स्थान पर टूट गयी है और वहाँ से बड़े जोरसे पानी बाहर निकल रहा है। आरुणि ने टूटे हुए स्थान पर मिट्टी रखकर मेड़ बाँधना चाहा। पानी वेग से निकल रहा था और वर्षा से मिट्टी भी गीली हो गयी थी, इस लिये आरुणि जितनी मिट्टी मेड़ बाँधने के लिये रखते थे, उसे पानी बहा ले जाता था। बहुत देर परिश्रम करके भी जब आरुणि मेड़ न बाँध सके तो वे उस टूटी मेड़के पास स्वयं लेट गये। उनके शरीरसे पानीका बहाव रुक गया।

उस दिन पूरी रात आरुणि पानीभरे खेतमें मेड़से सटे पड़े रहे। सर्दी से उनका सारा शरीर भी अकड़ गया, लेकिन गुरुदेव के खेतका पानी बहने न पाये, इस विचार से वे न तो तनिक भी हिले और न उन्होंने करवट बदली। इस कारण आरुणि के शरीरमें भयंकर पीड़ा होते रहने पर भी वे चुपचाप पड़े रहे। सबेरा होने पर पूजा और हवन करके सब शिष्य गुरुदेव को प्रणाम करते थे। महर्षि आयोदधौम्यने देखा कि आज सबेरे आरुणि प्रणाम करने नहीं आया।

महर्षिने दूसरे विद्यार्थियोंसे पूछा:'आरुणि कहाँ है?'

विद्यार्थियों ने कहा: 'कल शामको आपने आरुणि को खेतकी मेड़ बाँधनेको भेजा था, तबसे वह लौटकर नहीं आया।'

महर्षि उसी समय दूसरे विद्यर्थियों को साथ लेकर आरुणि को ढूँढ़ने निकल पड़े। महर्षि ने खेत पर जाकर आरुणि को पुकारा। आरुणि से ठण्ड के मारे बोला तक नहीं जाता था। उन्होंने किसी प्रकार अपने गुरुदेवकी को उत्तर दिया। महर्षि ने वहाँ पहुँच कर अपने आज्ञाकारी शिष्यको उठाकर हृदय से लगा लिया, आशीर्वाद दिया:'पुत्र आरुणि ! तुम्हें सब विद्याएँ अपने-आप ही आ जायँ।' अपने गुरुदेव के आशीर्वाद से आरुणि बड़े भारी विद्वान हो गए।

सद् गुरु के त्याग से दरिद्रता आती हैं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवाजी के गुरुदेव श्री समर्थ रामदास के इर्द-गिर्द राजसी और भोजन-भगत बहुत हो गये थे। तुकारामजी की भक्त सादगी युक्त रहते थे।

तुकारामजी कहीं भी भजन-कीर्तन करने जाते तो कीर्तन करानेवाले गृहस्थ का सीरा-पूड़ी, आदि भोजन ग्रहण नहीं करते थे। तुकारामजी सादी-सूदी रोटी, तंदूर की भाजी और छाछ लेते। घोड़ागाडी, ताँगा आदि का उपयोग नहीं करते और पैदल चलकर जाते। उनका जीवन एक तपस्वी का जीवन था।

तुकारामजी के कई सारे शिष्यो में से एक शिष्य न्व देखा कि समर्थ रामदास के साथ में जो लोग जाते हैं वे अच्छे कपड़े पहनते हैं, सीरा-पूड़ी आदि उत्तम प्रखार के व्यंजन खाते हैं। कुछ भी हो, समर्थ रामदास शिवाजी महाराज के गुरु हैं, अर्थात राजगुरु हैं। उनके यहां रहने वाले शिष्यों को खाने-पीने का, अमन-चमन आदि का, खूब मौज है। उनके शिष्यों को समाज में मान-सम्मान भी मिलता है। हमारे गुरु तुकारामजी महाराज के पास कुछ नहीं है। मखमल के गद्दी-तकिये नहीं, खाने-पहनने की ठीक व्यवस्था नहीं। यहाँ रहकर क्या करें ?

शिष्य के चितमें इस प्रकार का चिंतन-मनन करते-करते समर्थ रामदास की मण्डली में जाने का आकर्षण पैदा हो गया हुआ।

शिष्य पहुँचा समर्थजी के पास और हाथ जोड़कर प्रार्थना कीः "महाराज ! आप मुझे अपना शिष्य बनायें। आपकी मण्डली में रहूँगा, भजन-कीर्तन आदि करूँगा। आपकी सेवा में रहूँगा।"

समर्थ जी ने पूछाः "तू पहले कहाँ रहता था?"

शिष्य बोला: "तुकारामजी महाराज के वहाँ।" ।

"तुकारामजी महाराज से तूने गुरुमंत्र लिया है तो मैं तुझे कैसे मंत्र दूँ?

अगर मेरा शिष्य बनना है, मेरा मंत्र लेना है तो तुकारामजी को मंत्र और माला वापस दे आ। पहले गुरुमंत्र का त्याग कर तो मैं तेरा गुरु बनूँ।"

समर्थजी ने उसको सत्य समझाने के लिए वापस भेज दिया। शिष्य तो खुश हो गया कि मैं अभी तुकारामजी का त्याग करके आता हूँ।

तुकाराम जैसे सदगुरु का त्याग करने की कुबुद्धि शिष्य को आयी ?

समर्थजी ने उसको सबक सिखाने का निश्चय किया।

चेला खुश होता हुआ तुकारामजी के पास पहुँचाः

"महाराज ! मुझे आपका शिष्य अब नहीं रहना है।"

तुकारामजी ने कहाः "मैंने तुझे शिष्य बनाने के लिए खत लिखकर बुलाया ही कहाँ था ? तू ही अपने आप आकर शिष्य बना था, भाई ! कण्ठी मैंने कहाँ पहनाई है ? तूने ही अपने हाथ से बाँधी है। मेरे गुरुदेव ने जो मंत्र मुझे दिया था वह तुझे बता दिया। उसमें मेरा कुछ नहीं है।"
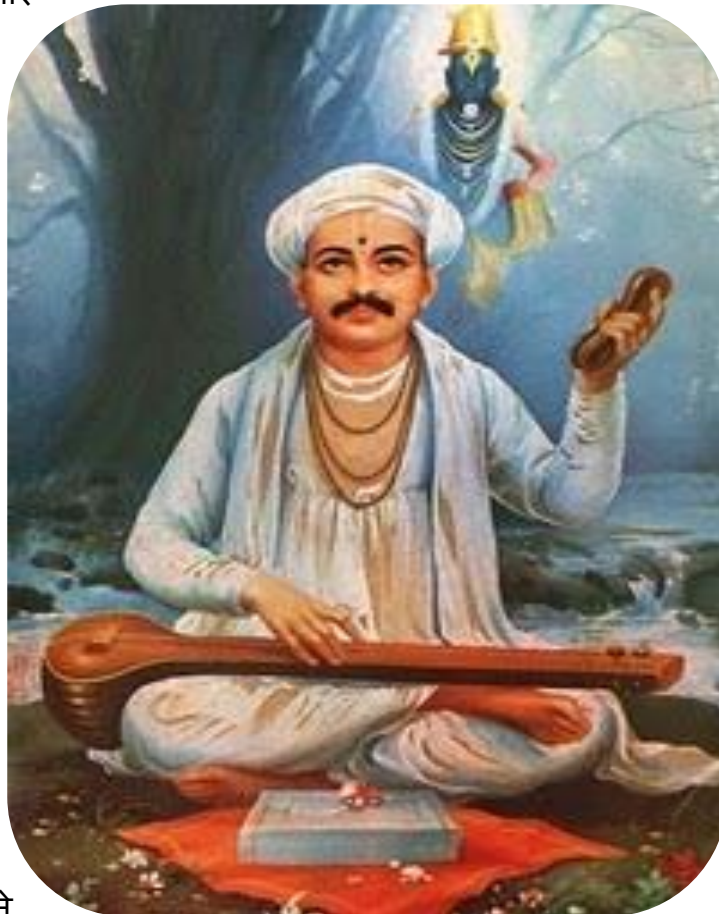
शिष्य: "फिर भी महाराज ! मुझे यह कण्ठी नहीं चाहिए।"

तुकारामजी: "नहीं चाहिए तो तोड़ दो।"

चेले ने खींचकर कण्ठी तोड़ दी। "अब आपका मंत्र ?"

तुकारामजी ने कहा:"वह तो मेरे गुरुदेव आपाजी चैतन्य का प्रसाद है। उसमें मेरा कुछ नहीं है।"

शिष्य बोला: "महाराज ! मुझे वह नहीं चाहिए। मुझे तो दूसरा गुरु करना है।"

तुकारामजी बोले: "अच्छा, तो मंत्र त्याग दे।"

"कैसे त्यागूँ ?"

"मंत्र बोलकर पत्थर पर थूक दे। मंत्र का त्याग हो जायगा।"

उस अभागे शिष्य ने गुरुमंत्र का त्याग करने के लिए मंत्र बोलकर पत्थर पर थूक दिया।

तब अनोखी घटना घटी। पत्थर पर थूकते ही वह मंत्र उस पत्थर पर अंकित हो गया।

शिष्य तुकारामजी के यहां से वह गया समर्थ जी के पास। बोलाः "महाराज ! मैं मंत्र और कण्ठी वापस दे आया हूँ। अब आप मुझे अपना शिष्य बनाओ।"

समर्थ जी ने पूछा: "मंत्र का त्याग किया उस समय क्या हुआ था ?"

शिष्य बोला: "वह मंत्र पत्थर पर अंकित हो गया था।"

समर्थजी बोले: "ऐसे गुरुदेव का त्याग करके आया जिनका मंत्र पत्थर पर अंकित हो जाता है ? पत्थर जैसे पत्थर पर मंत्र का प्रभाव पड़ा लेकिन तुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो कमबख्त तू मेरे पास क्या लेने आया है ? तू तो पत्थर से भी गया बीता है तो इधर तू क्या करेगा ? खाने के लिए आया है ?"

शिष्य बोला:"महाराज ! वहाँ गुरु का त्याग किया और यहाँ आपने मुझे लटकता रखा ?"

समर्थजी बोले: "तेरे जैसे लटकते ही रहते हैं। अब जा, घंटी बजाता रेह। अगले जन्म में तू बैल बन जाना, गधा बन जाना, घोड़ा बन जाना।"

विद्वानो के मतानुशार शास्त्र कहते हैं गुरु का दिया हुआ मंत्र त्यागने से आदमी दरिद्र हो जाता है।

समर्थजी ने सुनादियाः "तेरे जैसे गुरुद्रोही को मैं शिष्य बनाऊँगा ? जा भाई, जा। अपना रास्ता नाप।"

वह तो रामदासजी के समक्ष कान पकड़कर उठ-बैठ करने लगा, नाक रगड़ने लगा। रोते-रोते प्रार्थना करने लगा। तब करुणामूर्ति स्वामी रामदास ने कहाः "तुकारामजी उदार आत्मा हैं। वहाँ जा। मेरी ओर से प्रार्थना करना। कहना कि समर्थ ने प्रणाम कहे हैं। तू अपनी गलती की क्षमा माँगना।"

शिष्य अपने गुरु के पास वापस लौटा। तुकारामजी समझ गये कि समर्थ का भेजा हुआ है तो मैं इन्कार कैसे करूँ ?

बोलेः "अच्छा भाई ! तू आया था, कण्ठी लिया था। हमने दी, तूने छोड़ी। फिर लेने आया है तो फिर दे देते हैं। समर्थ ने भेजा है तो चलो ठीक है। समर्थ की जय हो !"

स्वयं भगवान शंकरजी ने कहां हैं:

गुरुत्यागात् भवेन्मृत्युः मंत्रत्यागात् दरिद्रता।
गुरुमंत्रपरित्यागी रौरवं नरकं व्रजेत्।। (गुरुगीता)

विद्वानो के अनुशार गुरुभक्तियोग के अनुशार एक बार गुरु कर लेने के बाद गुरु का त्याग नहीं करना चाहिए। गुरु का त्याग करने से तो यह अच्छा है कि शिष्य पहले से ही गुरु न करे और संसार में सड़ता रहे, भटकता रहे। एक बार गुरु करके उनका त्याग कभी नहीं करना चाहिए।

मंत्रजाप से शास्त्रज्ञान

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

रामवल्लभशरणजी किसी संत के दर्शनगये।

संत ने पूछाः तूम्हें "क्या चाहिए?"

रामवल्लभशरणः "महाराज ! भगवान इश्वर की भक्ति और शास्त्रों का ज्ञान चाहिए।"

रामवल्लभशरणजी ने ईमानदारी से माँगा था।

रामवल्लभशरजी का सच्चाई का जीवन था। कम बोलते थे। उनके भितर भगवान के लिए तड़प थी।

संत ने पूछाः "ठीक है। बस न?"

रामवल्लभशरणः "जी, महाराज।"

संत ने हनुमानजी का मंत्र दिया।

रामवल्लभशरजी एकाग्रचित्त होकर पूर्ण निष्ठा व तत्परता से मंत्र जप कर रहे थे। मंत्र जप करते समय हनुमानजी प्रकट हो गये।

हनुमान जी ने पूछाः "क्या चाहिए?"

"आपके दर्शन तो हो गये। शास्त्रों का ज्ञान चाहिए।"

हनुमानजीः "बस, इतनी सी बात? जाओ, तीन दिन के अंदर तूम जितने भी ग्रन्थ देखोगे उन सबका अर्थसहित अभिप्राय तुम्हारे हृदय में प्रकट हो जायेगा।"

रामवल्लभशरजी काशी चले गये और काशी के विश्वविद्यालय आदि के ग्रंथ देखे। वे बड़े भारी विद्वान हो गये। जिन्होंने रामवल्लभशरजी के साथ वार्तालाप किया और शास्त्र-विषयक प्रश्नोत्तर किये हैं वे ही लोग उन्हें भलीप्रकार से जानते हैं । दुनिया के अच्छे-अच्छे विद्वान उनका लोहा मानते हैं। रामवल्लभशरजी केवल मंत्रजाप करते-करते अनुष्ठान में सफल हुए। हनुमानजी के साक्षात दर्शन हो गये और तीन दिन के अंदर जितने शास्त्र देखे उन शास्त्रों का अभिप्राय उनके हृदय में प्रकट हो गया।

एकलव्य की गुरुभक्ति

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुशार हिरण्यधनु का एकलव्य नाम का एक लड़का था। हिरण्यधनु जाति से भील थे।

उस काल में धनुर्विद्या में द्रोणाचार्यजी को महारथ हासिल थी इस लिये उनका नाम व कीर्ति चारो और फेली हुई थी। द्रोणाचार्य जी कौरवों एवं पांडवों के गुरु थे इस लिये उन्हें धनुर्विद्या शिखाते थे। एकलव्य धनुर्विद्या सीखने के उद्देश्य से गुरु द्रोणाचार्य के पास गया लेकिन द्रोणाचार्य ने कहा कि वे राजकुमारों के अलावा और किसी को धनुर्विद्या नहीं सिखा सकते।

द्रोणाचार्य जी के मना करने के बावजुद एकलव्य ने मन-ही-मन द्रोणाचार्य को अपना गुरु मान लिया था। इस के लिए एकलव्य की गुरु द्रोणाचार्य जी के प्रति श्रद्धा कम नहीं हुई।

एकलव्य वहाँ से वापस घर न जाकर सीधे जंगल में चला गया। वहाँ जाकर उसने द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनायी। एकलव्य हररोज गुरुमूर्ति का पूजन करता, फिर उसकी तरफ एकटक देखते-देखते ध्यान करता और उससे प्रेरणा लेकर धनुर्विद्या का अभ्यास करता हुवा धनुर्विद्या सीखने लगा। एकाग्रता के कारण एकलव्य को प्रेरणा मिलने लगी। इस प्रकार अभ्यास करते-करते वह धनुर्विद्या में बहुत आगे बढ़ गया।

एक बार द्रोणाचार्य धनुर्विद्या के अभ्यास के लिए पांडवों और कौरवों को जंगल में ले गये। उनके साथ एक कुत्ता भी था, वह दौड़ते-दौड़ते आगे निकल गया। जहाँ एकलव्य धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था, वहाँ वह कुत्ता रुक गया। एकलव्य के विचित्र वेष को देखकर कुत्ता भौंकने लगा।

एकलव्य ने कुत्ते को चोट न लगे और उसका भौंकना भी बंद हो जाए इस प्रकार उसके मुँह में सात बाण भर दिये।

जब कुत्ता इस दशा में द्रोणाचार्य के पास पहुँचा तो कुत्ते की यह हालत देखकर अर्जुन को विचार आयाः 'कुत्ते के मुँह में चोट न लगे इस प्रकार बाण मारने की विद्या तो मैं भी नहीं जानता!'

अर्जुन ने गुरु द्रोणाचार्य से कहाः "गुरूदेव! आपने तो कहा था कि तेरी बराबरी कर सके ऐसा कोई भी धनुर्धारी नहीं होगा परंतु ऐसी अद्भुत और अनोखी विद्या तो मैं भी नहीं जानता।"

द्रोणाचार्य भी विचार में पड़ गये। इस जंगल में ऐसा कुशल धनुर्धर कौन होगा? आगे जाकर देखा तो उन्हे हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य दिखायी पड़ा।

द्रोणाचार्य ने पूछाः "बेटा! तुमने यह विद्या कहाँ से सीखी?"

एकलव्य ने कहाः "गुरुदेव! आपकी कृपा से ही सीखी है।"

द्रोणाचार्य तो अर्जुन को वचन दे चुके थे कि उसके जैसा कोई दूसरा धनुर्धर नहीं होगा किंतु एकलव्य तो अर्जुन से भी आगे बढ़ गया।

द्रोणाचार्य ने एकलव्य से कहाः "मेरी मूर्ति को सामने रखकर तुमने धनुर्विद्या तो सीखी परंतु गुरुदक्षिणा?"

एकलव्य ने कहाः "आप जो माँगें।" द्रोणाचार्य ने कहाः "तुम्हारे दाहिने हाथ का अँगूठा।" एकलव्य ने एक पल भी विचार किये बिना अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काट कर गुरुदेव के चरणों में अर्पित कर दिया।

द्रोणाचार्य ने कहाः "पुत्र! अर्जुन भले ही धनुर्विद्या में सबसे आगे रहे क्योंकि मैं उसको वचन दे चुका हूँ परन्तु जब तक सूर्य, चाँद और नक्षत्र रहेंगे, तुम्हारा गुणगान होता रहेगा।" एकलव्य की गुरुभक्ति उसे धनुर्विद्या में सफलता के साथ ही द्रोणाचार्य जैसे विद्रान को गुरुदक्षिणा में अपना अंगूठा देकर उनके हृदय में अपने लिए आदर प्रकट कर दिया। विद्रानो के मातानुशार गुरुभक्ति, श्रद्धा और लगनपूर्वक कोई भी कार्य करने से अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

***

श्रीकृष्ण की गुरूसेवा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सहस्त्र मुखो से भी गुरु की महिमा बखाण ना संभव नहीं हैं। क्योकी गुरु की महिमा अपरंपार हैं। इसी लिये तो स्वयं भगवान को भी जगत के कल्याणा हेतु जब मानवरूप में अवतरित होना पडता हैं तो ज्ञान प्राप्ति हेतु गुरू की आवश्यक्ता होती हैं।

पौराणिक शास्त्रो के अनुशार द्वापर युग में जब भगवान श्रीकृष्ण जब भूलोक पर अवतरित हुएं। कालांतर में कंस का विनाश होने के पश्चयात भगवान श्रीकृष्ण ने शास्त्रोक्त विधि-विधान से अपने हाथ में समिधा लेकर अपने गुरू श्रीसांदीपनी के आश्रम में गये। गुरुआश्रम में श्रीकृष्ण भक्तिपूर्वक गुरू की सेवा करने लगे। गुरू आश्रम में सेवा करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने वेद-वेदांग, उपनिषद, मीमांसादि षड्दर्शन, अस्त्र-शस्त्रविद्या, धर्मशास्त्र और राजनीति आदि अनेको विद्याएं प्राप्त की। श्रीकृष्ण नें अपनी प्रखर बुद्धि के कारण गुरू के एक बारबताने मात्र से ही सब सीख लिया। विष्णुपुराण के अनुशार श्रीकृष्ण ने 64 कलाएँ केवल64 दिन में ही सीख लीं। जब विद्या अभ्यास पूर्ण हुआ, तब श्रीकृष्ण ने गुरूदेव से दक्षिणा हेतु अनुरोध किया। श्रीकृष्णः "गुरूदेव ! आज्ञा कीजिए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?" गुरूः "कोई आवश्यकता नहीं है।" श्रीकृष्णः "गुरूदेव आपको तो कुछ नहीं चाहिए, किंतु हमें दिये बिना चैन नहीं पड़ेगा। कुछ तो आज्ञा करें !" गुरूः "अच्छा जाओ, अपनी गुरू माँ से पूछ लो।" श्रीकृष्ण गुरूपत्नी के पास गये और बोलेः "माँ ! कोई सेवा हो तो बताइये।"

गुरूपत्नी जानती थीं कि श्रीकृष्ण कोई साधारण मानव नहीं स्वयं भगवान हैं, अतः वे बोलीः "मेरा पुत्र प्रभास क्षेत्र में मर गया है। उसे लाकर दे दो ताकि मैं उसे पयः पान करा सकूँ।"

श्रीकृष्ण बोले: "जो आज्ञा।"

श्रीकृष्ण रथ पर सवार होकर प्रभास क्षेत्र पहुँचे। समुद्र ने उन्हें देखकर उनकी यथायोग्य पूजा की। श्रीकृष्ण बोलेः "तुमने अपनी बड़ी बड़ी लहरों से हमारे गुरूपुत्र को हर लिया था। अब उसे शीघ्र लौटा दो।"

समुद्रः "मैंने बालक को नहीं हरा है, मेरे भीतर शंखरूप से पंचजन नामक एक बड़ा दैत्य रहता है, निसंदेह उसी ने आपके गुरूपुत्र का हरण किया है।"

श्रीकृष्ण ने उसीक्षण जल के भीतर घुसकर पंचजन नामक दैत्य को मार डाला, पर उसके पेट में गुरूपुत्र नहीं मिला। तब उसके शरीर का पांचजन्य शंख लेकर श्रीकृष्ण जल से बाहर निकल कर यमराज की यमनी पुरी में गये। वहाँ भगवान ने उस शंख को बजाया। कथा कहती हैं कि शंख ध्वनि को सुनकर नारकीय जीवों के पाप नष्ट हो गये और वे सभी जीव वैकुंठ पहुँच गये।

यमराज ने श्रीकृष्ण को देखकर उनकी बड़ी भक्ति के साथ पूजा की और प्रार्थना करते हुए कहाः "हे पुरूषोत्तम ! मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?"

श्रीकृष्णः "तुम्हारे दूत कर्मबंधन के अनुसार हमारे गुरूपुत्र को यहाँ ले आये हैं। उसे मेरी आज्ञा से वापस दे दो।"
'जो आज्ञा' कहकर यमराज उस बालक को ले आये।
श्रीकृष्ण ने गुरूपुत्र को, जिस रुप में वह मरा था उसी रुपमें पूनः उसका शरीर बनाकर, रत्नादि के साथ गुरूचरणों में अर्पित कर दिया।
श्रीकृष्ण ने कहा:"गुरूदेव ! और जो कुछ भी आप चाहें, आज्ञा करें।"
गुरूदेवः "वत्स ! तुमने अपनी गुरूदक्षिणा भली प्रकार से संपन्न कर दी। तुम्हारे जैसे शिष्य से गुरू की कौन-सी कामना अवशेष रह सकती है?
वत्स ! अब तुम अपने घर जाओ।
गुरूदेव ने श्रीकृष्ण को आशिर्वाद देते हुवे कहां वत्स ! तुम्हारी कीर्ति श्रोताओं को पवित्र करने वाली होगी और तुम्हारे द्वारा **अर्जित ज्ञान व विद्या हर समय उपस्थित और नवीन बनी रहकर सभीलोक में तुम्हारे अभीष्ट फल को देने में समर्थ हों।"**

देवर्षि नारद ने एक मल्लाह को अपना गुरु बनाया

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुशार एक बार देवर्षि नारद ने वैकुण्ठ में प्रवेश किया। प्रवेश करते ही भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी "देवर्षि नारद" का खूब आदर-सत्कार करने लगे।

भगवान विष्णु ने नारदजी का हाथ पकड़ा और आराम करने को कहा। एक तरफ भगवान विष्णु नारद जी की सेवा कर रहे हैं और दूसरी तरफ लक्ष्मी जी पंखा हाँक रही हैं।

नारद जी कहते हैं- "भगवान ! अब छोड़ो। यह लीला किस बात की है ?

नाथ ! यह क्या राज समझाने की युक्ति है ? आप मेरी सेवा कर रहे हैं और माता जी पंखा हाँक रही हैं ?"

"नारद ! तू गुरूओं के लोक से आया है। यमपुरी में पाप भोगे जाते हैं, वैकुण्ठ में पुण्यों का फल भोगा जाता है लेकिन मृत्युलोक में सदगुरू की प्राप्ति होती है और जीव सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

मालूम होता है, तू किसी गुरू की शरण ग्रहण करके आया है।"

नारदजी को अपनी भूल का अहसास कराने के लिए भगवान ये सब प्रयास कर रहे थे।

नारद जी ने कहाः "प्रभु ! मैं भक्त हूँ लेकिन निगुरा (निगुरा अर्थात जिसका कोई गुरु नहीं) हूँ।

गुरू क्या देते हैं ? गुरू का माहात्म्य क्या होता है आप यह बताने की कृपा करो भगवान !"

"गुरू क्या देते हैं..... गुरु का माहात्म्य क्या होता है यह जानना हो तो गुरूओं के पास जाओ। यह वैकुण्ठ है।

"नारद ! जा, तू किसी गुरू की शरण ले। बाद में इधर आ।"

देवर्षि नारद गुरू की खोज करने मृत्युलोक में आये। सोचा कि मुझे प्रभातकाल में जो सर्वप्रथम मिलेगा उसको मैं गुरू मानूँगा। प्रातःकाल में सरिता के तीर पर गये। देखा तो एक आदमी शायद स्नान करके आ रहा है। हाथ में जलती अगरबत्ती है। नारद जी ने मन ही मन उसको गुरू मान लिया। पास पहुँचे तो पता चला कि वह माछीमार है, हिंसक है। (मल्लाह के रूप में आदिनारायण ही आये थे।) नारदजी ने अपना संकल्प बताते हुएं कहां: "हे मल्लाह ! मैंने आपको गुरू मान लिया है।"

मल्लाह ने कहाः "गुरू का मतलब क्या होता है ? हम नहीं जानते गुरू क्या होता है ?"
गुरु का मतलब समझाते हेतु देवर्षि नारद बोले: "गु माने अन्धकार। रू माने प्रकाश। अर्थात्:जो अज्ञानरूपी अन्धकार को हटाकर ज्ञानरूपी प्रकाश कर दें उन्हें गुरू कहा जाता है।
आप मेरे आन्तरिक जीवन के गुरू हैं।" नारदजी ने मल्लाह के पैर पकड़ लिये।
मल्लाह बोला: "छोड़ो मुझे !" नारद: "आप मुझे शिष्य के रूप में स्वीकार कर लो गुरूदेव!"
मल्लाह ने पीछा छुड़ाने के लिए कहाः "अच्छा, स्वीकार है, जा।"
नारदजी आये वैकुण्ठ में। भगवान ने कहाः "नारद ! अब तू निगुरा तो नहीं है ?"
"नहीं भगवान ! मैं गुरू करके आया हूँ।" "कैसे हैं तेरे गुरू ?" "जरा धोखा खा गया मैं। वह **कमबख्त मल्लाह** मिल गया। अब क्या करें ? आपकी आज्ञा मानी। उसी को गुरू बना लिया।"
नारद की बात से भगवान नाराज हो गये और बोलेः "तूने गुरू शब्द का अपमान किया है।"जा, तुझे चौरासी लाख जन्मों तक माता के गर्भों में नर्क भोगना पड़ेगा।" नारद रोये, छटपटाये। भगवान ने कहाः "इसका इलाज यहाँ नहीं है। यह तो पुण्यों का फल भोगने की जगह है। नर्क पाप का फल भोगने की जगह है। कर्मों से छूटने की जगह तो वहीं है। तू जा उन गुरूओं के पास मृत्युलोक में।" नारद आये मृत्युलोक में । उस गुरु बनाये हुए मल्लाह के पैर पकड़ेः "गुरूदेव ! उपाय बताओ। चौरासी के चक्कर से छूटने का उपाय बताओ।" गुरूजी ने पूरी बात जान ली और कुछ संकेत दिये। नारद फिर वैकुण्ठ में पहुँचे। भगवान को कहाः "मैं चौरासी लाख योनियाँ तो भोग लूँगा लेकिन कृपा करके उसका नक्शा तो बना दो ! जरा दिखा तो दो नाथ ! कैसी होती है चौरासी ?
भगवान ने नक्शा बना दिया। नारद उसी नक्शे में लोटने-पोटने लगे।
"अरे ! यह क्या करते हो नारद ?"
"भगवान ! वह चौरासी भी आपकी बनाई हुई है और यह चौरासी भी आपकी ही बनायी हुई है। मैं इसी में चक्कर लगाकर अपनी चौरासी पूरी कर रहा हूँ।"

भगवान ने कहाः "महापुरूषों(गुरु) के नुस्खे भी अनोखे होते हैं। यह युक्ति भी तुझे उन्हीं से मिली नारद !

श्रीमद् आद्य शंकराचार्य सदगुरू

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक संत नर्मदा किनारे ओंकारेश्वर तीर्थ में एकान्त गुफा में आत्मशान्ति व परब्रह्म परमात्मा की शान्ति में ध्यानमग्न थे। उनके ध्यान की चर्चा दूर-दूर तक चारों और फेली हुई थी। वहं संत भगवान गोविन्दपादाचार्य थे। जिन्होने अपने स्वरूप का बोध हो गया है।

नर्मदा किनारे तप करने वाले अन्य तपस्वी श्री गोविन्दपादाचार्य के दर्शन करने हेतु उसी गुफा के निकट कुटिया नाकर रहने लगे। उनका कहना था की इसी स्थान पर वे रहते-रहते बूढ़े हो गये लेकिन अभी तक श्री विन्दपादाचार्यजी की समाधि नहीं खुली। इसी विषय पर अन्य योगी, संत-स्नयासि उपस्थित लोग चर्चा कर रहे थे। तने में उसी स्थान पर दक्षिण भारत के केरल प्रांत से पैदल चलते हुए दो महीने से भी अधिक समय की यात्रा करके शंकर नाम का बालक पहुँचा।

बालक बोला: "मैंने नाम सुना है भगवान गोविन्दपादाचार्य का। वे पूज्यपाद आचार्य कहाँ रहते हैं?"

संन्यासियों ने बताया किः "हम भी उनके दर्शन का इन्तजार कर रहे है। उनकी समाधि खुले, और उनकी अमृत बरसाने वाली निगाहें हम पर पड़ें, उनके ब्रह्मानुभव के वचनो से हमारे कान पवित्र हों इसी इन्तजार में हम भी नर्मदा किनारे अपनी कुटियाएँ बनाकर बैठे हैं।"

संन्यासियों ने उस बालक को निहारा। वह बालक बड़ा तेजस्वी लग रहा था। इस बाल संन्यासी का सम्यक् परिचय पाकर उनका विस्मय बढ़ गया। कितनी दूर केरल प्रदेश ! और यह बच्चा वहाँ से अकेला ही आया है श्रीगुरू की आश में। जब उन्होंने देखा कि इस अल्प अवस्था में ही वह भाष्य समेत सभी शास्त्रों में पारंगत है और इसके फलस्वरूप उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है तो उन सबका मन प्रसन्नता से भर गया।

वहां उपस्थित किसी ने पूछाः "क्या नाम है बेटे ?"

"मेरा नाम शंकर है।"

बच्चे की ओजस्वी वाणी और तीव्र जिज्ञासा देखकर उन्होंने समाधिस्थ बैठे महायोगी गुरूवर्य श्री गोविन्दपादाचार्य के बारे में कुछ बातें कही। तो वह निर्दोष बालक भगवान गोविन्दपादाचार्य के दर्शन के लिए तड़प उठा।

संन्यासियों ने कहाः "वह दूर जो गुफा दिखाई दे रही है उसमें वे समाधिस्थ हैं। अन्धेरी गुफा में दिखाई नहीं पड़ेगा इसलिए यह दीपक ले जा।"

दीया जलाकर उस बालक ने गुफा में प्रवेश किया। विस्मयता से विमुग्ध होकर देखा तो एक अति दीर्घकाय, विशाल-भाल-प्रदेशवाले, शान्त मुद्रा, लम्बी जटा और कृश देहवाले फिर भी दिव्य तेज से आलोकित एक महापुरूष पद्मासन में समाधिस्थ बैठे थे। उनके शरीर की त्वचा सूख चुकी थी फिर भी उनका शरीर ज्योतिर्मय था।

भगवान गोविन्दपादाचार्य का दर्शन करते ही शंकर का रोम-रोम पुलकित हो उठा। उसका मन एक प्रकार से अनिर्वचनीय दिव्य आनन्द से भर उठा। निरन्तर आखो से बहते अश्रुजल से उनका वक्षः स्थल प्लावित हो गया। उसकी यात्रा का परिश्रम सार्थक हो गया और उसकी सारी थकान पलभर में ही उतर गयी।

करबद्ध होकर बह बालक स्तुति करने लगाः

इस सुन्दर भगवान की स्तुति से गुफा गुन्ज उठी। तब अन्य संन्यासी भी गुफा में आ इकट्ठे हुए। शंकर तब तक स्तवगान में ही मग्न थे। विस्मय विमुग्ध चित्त से सबने देखा कि भगवान गोविन्दपाद की वह निश्चल निस्पन्द देह बार-बार कम्पित हो रही है। प्राणों का स्पन्दन दिखाई देने लगा। क्षणभर में ही उन्होंने एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर चक्षु खोले किये।

शंकर ने गोविन्दपादाचार्य भगवान को साष्टांग प्रणाम किया। दूसरे संन्यासी भी योगीश्वर के चरणों में प्रणत हुए। आनंदध्वनि से गुफा गुंजित हो उठी। तब प्रवीण संन्यासीगण योगीराज को समाधि से सम्पूर्ण रूप से व्यथित कराने के लिए यौगिक प्रकियाओं में नियुक्त हो गये। क्रम से योगीराज का मन जीवभूमि पर उतर आया। यथा समय आसन का परित्याग कर वे गुफा से बाहर निकले।

योगीराज की सहस्रों वर्षों की समाधि एक बालक संन्यासी के आने से छूट गई है, यह बात द्रुतगति से चारौ दिशा में फैल गयी। दूर स्थानों से यतिवर के दर्शन की आकांक्षा से लोगो ने आकर ओंकारनाथ को एक तीर्थक्षेत्र में परिणत कर दिया। शंकर का परिचय प्राप्त कर गोविन्दापादाचार्य ने जान लिया कि यही वह शिवावतार शंकर है, जिसे अद्वैत ब्रह्मविद्या का उपदेश करने के लिए उन्होने सहस्र वर्षों तक समाधि में अवस्थान किया और अब यही शंकर वेद-व्यास रचित ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखकर जगत में अद्वैत ब्रह्मविद्या का प्रचार करेगा।

एक शुभ दिन श्रीगोविन्दपादाचार्यजी ने शंकर को शिष्य रूप में ग्रहण कर लिया और उसे योगादि की शिक्षा देने लगे। शंकर के साथ-साथ अन्यान्य संन्यासियों ने भी उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। प्रथम वर्ष उन्होंने शंकर को हठयोग की शिक्षा दी। वर्ष पूरा होने के पूर्व ही शंकर ने हठयोग में पूर्ण सिद्ध प्राप्त कर ली। द्वितीय वर्ष में शंकर राजयोग में सिद्ध हो गये। हठयोग और राजयोग की सिद्धि प्राप्ति करने के फलस्वरूप शंकर बहुत बड़ी अलौकिक शक्ति के अधिकारी बन गये। दूरश्रवण, दूरदर्शन, सूक्ष्म देह से व्योममार्ग में गमन, अणिमा, लघिमा, देहान्तर में प्रवेश एवं सर्वोपरि इच्छामृत्यु शक्ति के वे अधिकारी हो गये। तृतीय वर्ष में गोविन्दपादाचार्य अपने शिष्य को विशेष यत्नपूर्वक ज्ञानयोग की शिक्षा देने लगे। श्रवण, मनन, निदिध्यासन, ध्यान, धारणा, समाधि का प्रकृत रहस्य सिखा देने के बाद उन्होंने अपने शिष्य को साधनकर्मानुसार अपरोक्षनुभूति के उच्च स्तर में दृढ़ प्रतिष्ठित कर दिया।

ध्यानबल से समाधिस्थ होकर हर क्षण दिव्यानुभूति से शंकर का मन अब सदैव एक अतीन्द्रिय राज्य में विचरण करने लगा। उनकी देह में ब्रह्मज्योति प्रस्फुटित हो उठी।

उनके मुखमण्डल पर अनुपम लावण्य और स्वर्गीय हास झलकने लगा। उनके मन की सहज गति अब समाधि की ओर थी। बलपूर्वक उनके मन को जीवभूमि पर रखना पड़ता था। क्रमशः उनका मन निर्विकल्प भूमि पर अधिरूढ़ हो गया।

गोविन्दपादाचार्य ने देखा कि शंकर की साधना और शिक्षा अब समाप्त हो चुकी है। शिष्य उस ब्राह्मी स्थिति में पहूंच गया है जहाँ प्रतिष्ठित होने से श्रुति कहती हैः

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

अर्थातः यह परावर ब्रह्म दृष्ट होने पर दृष्टा का अविद्या आदि संस्काररूप हृदयग्रन्थि-समूह नष्ट हो जाता है एवं (प्रारब्धभिन्न) कर्मराशि का क्षय होने लगता है।

शंकर अब उसी दुर्लभ अवस्था में प्रतिष्ठित हो गये।

वर्षा ऋतु का आगमन हुआ। नर्मदा-वेष्टित ओंकारनाथ की शोभा अनुपम हो गयी। कुछ दिनों तक अविराम दृष्टि होती रही। नर्मदा का जल क्रमशः बढ़ने लगा। सब कुछ जलमय ही दिखाई देने लगा।

ग्रामवासियों ने पालतू पशुओं समेत ग्राम का त्यागकर निरापद उच्च स्थानों में आश्रय ले लिया।

गुरूदेव कुछ दिनों से गुफा में समाधिस्थ हुए बैठे थे। बाढ़ का जल बढ़ते-बढ़ते गुफा के द्वार तक आ पहुँचा।

संन्यासीगण गुरूदेव का जीवन विपन्न देखकर बहुत शंकित होने लगे। गुफा में बाढ़ के जल का प्रवेश रोकना आवश्याक था क्योंकि वहाँ गुरूदेव समाधिस्थ थे। समाधि से दूर कर उन्हे किसी निरापद स्थान पर ले चलने के लिये सभी व्यग्र हो उठे।

यह व्यग्रता देखकर शंकर कहीं से मिट्टी का एक कुंभ ले आये और उसे गुफा के द्वार पर रख दिया और अन्य संन्यासियों को आश्वासन देते हुए बोलेः "आप चिन्तित न हों।

गुरूदेव की समाधि भंग करने की कोई आवश्यकता नहीं। बाढ़ का जल इस कुंभ में प्रविष्ट होते ही प्रतिहत हो जायेगा, गुफा में प्रविष्ट नहीं हो सकेगा।"

सबको शंकर का यह कार्य बाल सुलभ खेल जैसा लगा किन्तु सभी ने विस्मित होकर देखा कि जल कुंभ में प्रवेश करते ही प्रतिहत एवं रूद्ध हो गया है। गुफा अब निरापद हो गई है। शंकर की यह अलौकिक शक्ति देखकर सभी अवाक् रह गये।

क्रमशः बाढ़ शांत हो गई। गोविन्दपादाचार्य भी समाधि से निकल गये। उन्होंने शिष्यों के मुख से शंकर के उक्त कार्य की बात सुनी तो प्रसन्न होकर उसके मस्तक पर हाथ रखकर कहाः

"वत्स ! तुम्हीं शंकर के अंश से उदभूत लोक-शंकर हो। अपने गुरू गौड़पादचार्य के श्रीमुख से मैंने सुना था कि तुम आओगे और जिस प्रकार सहस्रधारा नर्मदा का स्रोत एक कुंभ में अवरूद्ध कर दिया है उसी प्रकार तुम व्यासकृत ब्रह्मसूत्र पर भाष्यरचना कर अद्वैत वेदान्त को आपात विरोधी सब धर्ममतों से उच्चतम आसन पर प्रतिष्ठित करने में सफल होंगे तथा अन्य धर्मों को सार्वभौम अद्वैत ब्रह्मज्ञान के अन्तर्भुक्त कर दोगे।

ऐसा ही गुरूदेव भगवान गौड़पादाचार्य ने अपने गुरूदेव शुकदेव जी महाराज के श्रीमुख से सुना था। इन विशिष्ट कार्यो के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम समग्र वेदार्थ ब्रह्मसूत्र भाष्य में लिपिबद्ध करने में सफल होंगे।"

श्री गोविन्दपादाचार्य ने जान लिया कि शंकर की शिक्षा समाप्त हो गई है। उनका कार्य भी सम्पूर्ण हो गया है। एक दिन उन्होंने शंकर को अपने निकट बुलाकर पूछा कीः वत्स ! क्या तुम्हारे मन में किसी प्रकार का कोई सन्देह है ? क्या तुम भीतर किसी प्रकार अपूर्णता का अनुभव कर रहे हो ? अथवा तुम्हें अब क्या कोई जिज्ञासा है ?"

शंकर ने आनन्दित हो गुरूदेव को प्रणाम करके कहाः "भगवन ! आपकी कृपा से अब मेरे लिए ज्ञातव्य अथवा प्राप्तव्य कुछ भी नहीं रहा। आपने मुझे पूर्णमनोरथ कर दिया है। अब आप अनुमति दें कि मैं समाहित चित्त होकर चिरनिर्वाण लाभ करूँ।"

कुछ देर मौर रहकर श्री गोविन्दपादाचार्य ने शान्त स्वर में कहाः "वत्स ! वैदिक धर्म-संस्थापन के लिए देवाधिदेव शंकर के अंश से तुम्हारा जन्म हुआ है। तुम्हें अद्वैत ब्रह्मज्ञान का उपदेश करने के लिए मैं गुरूदेव की आज्ञा से सहस्रों वर्षों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। अन्यथा ज्ञान प्राप्त करते ही देहत्याग कर मुक्तिलाभ कर लेता।

अब मेरा कार्य समाप्त हो गया है। अब मैं समाधियोग से स्वस्वरूप में लीन हो जाऊँगा। तुम अब अविमुक्त क्षेत्र में जाओ। वहाँ तुम्हें भवानिपति शंकर के दर्शन प्राप्त होंगे। वे तुम्हें जिस प्रकार का आदेश देंगे उसी प्रकार तुम करना।"

शंकर ने श्रीगुरूदेव का आदेश शिरोधार्य किया। तदनन्तर एक शुभ दिन श्रीगोविन्दपादाचार्य ने सभी शिष्यों को आशीर्वाद प्रदान कर समाधि योग से देहत्याग कर दिया। शिष्यों ने यथाचार गुरूदेव की देह का नर्मदाजल में योगीजनोचित संस्कार किया।

गुरूदेव की आज्ञा के अनुसार शंकर पैदल चलते-चलते काशी आये। वहाँ काशी विश्वनाथ के दर्शन किये। भगवान वेदव्यास का स्मरण किया तो उन्होंने भी दर्शन दिये। अपनी की हुई साधना, वेदान्त के अभ्यास और सदगुरू की कृपा से अपने शिवस्वरूप में जगे हुए शंकर **'भगवान श्रीमद् आद्य शंकराचार्य'** हो गये।

श्री गुरु स्तोत्रम्

पार्वती उवाच

गुरुर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा ।
विशेषस्तु महादेव ! तद् वदस्व दयानिधे ॥
महादेव उवाच

जीवात्मनं परमात्मनं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम्।
उत्कल काशीगंगामरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥१॥
प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम्।
भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥२॥
वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकचरितम्।
साधोः सेवां बहुसुखभुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥३॥
विष्णो भक्तिं पूजनरक्तिं वैष्णवसेवां मातरि भक्तिम्।
विष्णोरिव पितृसेवनयोगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥४॥
प्रत्याहारं चेन्द्रिययजनं प्राणायां न्यासविधानम्।
इष्टे पूजा जप तपभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥५॥
काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा।
श्रीमातंगी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥६॥
मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम्।
नरनारायण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥७॥
श्रीभृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम्।
अवतारा दश वेदविधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥८॥
गंगा काशी कान्ची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा।
यमुना रेवा पुष्करतीर्थ न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥९॥
गोकुलगमनं गोपुररमणं श्रीवृन्दावन-मधुपुर-रटनम्।
एतत् सर्वं सुन्दरि ! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥१०॥
तुलसीसेवा हरिहरभक्तिः गंगासागर-संगममुक्तिः।
किमपरमधिकं कृष्णेभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥११॥
एतत् स्तोत्रम् पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽपि च धन्यम् ।
ब्रह्माण्डान्तर्यद्-यद् ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥१२॥
॥ वृहदविज्ञान परमेश्वरतंत्रे त्रिपुराशिवसंवादे श्रीगुरोःस्तोत्रम् ॥

भावार्थ: माता पार्वती ने कहा हे दयानिधि शंभु ! गुरुमंत्र के देवता अर्थात् गुरुदेव एवं उनका आचारादि धर्म क्या है - इस बारे विस्तार से बताये। महादेव ने कहा जीवात्मा-परमात्मा का ज्ञान, दान, ध्यान, योग पुरी, काशी या गंगा तट पर मृत्यु - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥१॥ प्राण, शरीर, गृह, राज्य, स्वर्ग, भोग, योग, मुक्ति, पत्नी, इष्ट, पुत्र, मित्र - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥२॥ वानप्रस्थ धर्म, यति विषयक धर्म, परमहंस के धर्म, भिक्षुक अर्थात् याचक के धर्म - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥३॥ भगवान विष्णु की भक्ति, उनके पूजन में अनुरक्ति, विष्णु भक्तों की सेवा, माता की भक्ति, श्रीविष्णु ही पिता रूप में हैं, इस प्रकार की पिता सेवा - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥४॥ प्रत्याहार और इन्द्रियों का दमन, प्राणायाम, न्यास-विन्यास का विधान, इष्टदेव की पूजा, मंत्र जप, तपस्या व भक्ति - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥५॥ काली, दुर्गा, लक्ष्मी, भुवनेश्वरि, त्रिपुरासुन्दरी, भीमा, बगलामुखी (पूर्णा), मातंगी, धूमावती व तारा ये सभी मातृशक्तियाँ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥६॥ भगवान के मत्स्य, कूर्म, वाराह, नरसिंह, वामन, नर-नारायण आदि अवतार, उनकी लीलाएँ, चरित्र एवं तप आदि भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥७॥ भगवान के श्री भृगु, राम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि आदि वेदों में वर्णित दस अवतार गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥८॥ गंगा, यमुना, रेवा आदि पवित्र नदियाँ, काशी, कांची, पुरी, हरिद्वार, द्वारिका, उज्जयिनी, मथुरा, अयोध्या आदि पवित्र पुरियाँ व पुष्करादि तीर्थ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥९॥ हे सुन्दरी ! हे मातेश्वरी ! गोकुल यात्रा, गौशालाओं में भ्रमण एवं श्री वृन्दावन व मधुपुर आदि शुभ नामों का रटन - ये सब भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है,गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥१०॥ तुलसी की सेवा, विष्णु व शिव की भक्ति, गंगा सागर के संगम पर देह त्याग और अधिक क्या कहूँ परात्पर भगवान श्री कृष्ण की भक्ति भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥११॥ इस स्तोत्र का जो नित्य पाठ करता है वह आत्मज्ञान एवं मोक्ष दोनों को पाकर धन्य हो जाता है | निश्चित ही समस्त ब्रह्माण्ड मे जिस-जिसका भी ध्यान किया जाता है, उनमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥१२॥

उपरोक्त गुरुस्तोत्र वृहद विज्ञान परमेश्वरतंत्र मं त्रिपुरा-शिव संवाद में वर्णित हैं।

श्री गुरु अष्टोत्तरशत नामावलि

ॐ सद्गुरवे नमः॥
ॐ अज्ञाननाशकाय नमः॥
ॐ अदम्भिने नमः॥
ॐ अद्वैतप्रकाशकाय नमः॥
ॐ अनपेक्षाय नमः॥
ॐ अनसूयवे नमः॥
ॐ अनुपमाय नमः॥
ॐ अभयप्रदात्रे नमः॥
ॐ अमानिने नमः॥
ॐ अहिंसामूर्तये नमः॥
ॐ अहैतुक दयासिन्धवे नमः॥
ॐ अहंकार नाशकाय नमः॥
ॐ अहंकार वर्जिताय नमः॥
ॐ आचार्येन्द्राय नमः॥
ॐ आत्मसन्तुष्टाय नमः॥
ॐ आनन्दमूर्तये नमः॥
ॐ आर्जवयुक्ताय नमः॥
ॐ उचितवाचे नमः॥
ॐ उत्साहिने नमः॥
ॐ उदासीनाय नमः॥
ॐ उपरताय नमः॥
ॐ ऐश्वर्ययुक्ताय नमः॥
ॐ कृत कृत्याय नमः॥
ॐ क्षमावते नमः॥
ॐ गुणातीताय नमः॥
ॐ चारुवाग्विलासाय नमः॥
ॐ चारुहासाय नमः॥
ॐ छिन्नसंशयाय नमः॥
ॐ ज्ञानदात्रे नमः॥
ॐ ज्ञानयज्ञतत्पराय नमः॥
ॐ तत्त्वदर्शिने नमः॥
ॐ तपस्विने नमः॥
ॐ तापहराय नमः॥
ॐ तुल्यनिन्दास्तुतये नमः॥
ॐ तुल्यप्रियाप्रियाय नमः॥
ॐ तुल्यमानापमानाय नमः॥
ॐ तेजस्विने नमः॥
ॐ त्यक्तसर्वपरिग्रहाय नमः॥
ॐ त्यागिने नमः॥
ॐ दक्षाय नमः॥
ॐ दान्ताय नमः॥
ॐ दृढव्रताय नमः॥
ॐ दोषवर्जिताय नमः॥
ॐ द्वन्द्वातीताय नमः॥
ॐ धीमते नमः॥
ॐ धीराय नमः॥
ॐ नित्यसन्तुष्टाय नमः॥
ॐ निरहंकाराय नमः॥
ॐ निराश्रयाय नमः॥
ॐ निर्भयाय नमः॥
ॐ निर्मदाय नमः॥
ॐ निर्ममाय नमः॥
ॐ निर्मलाय नमः॥
ॐ निर्मोहाय नमः॥
ॐ निर्योगक्षेमाय नमः॥
ॐ निर्लोभाय नमः॥
ॐ निष्कामाय नमः॥
ॐ निष्क्रोधाय नमः॥
ॐ निःसंगाय नमः॥
ॐ परमसुखदाय नमः॥
ॐ पण्डिताय नमः॥
ॐ पूर्णाय नमः॥
ॐ प्रमाणप्रवर्तकाय नमः॥
ॐ प्रियभाषिणे नमः॥
ॐ ब्रह्मकर्मसमाधये नमः॥
ॐ ब्रह्मात्मनिष्ठाय नमः॥
ॐ ब्रह्मात्मविदे नमः॥
ॐ भक्ताय नमः॥
ॐ भवरोगहराय नमः॥
ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदात्रे नमः॥
ॐ मंगलकर्त्रे नमः॥
ॐ मधुरभाषिणे नमः॥
ॐ महात्मने नमः॥
ॐ महावाक्योपदेशकर्त्रे नमः॥
ॐ मितभाषिणे नमः॥
ॐ मुक्ताय नमः॥
ॐ मौनिने नमः॥
ॐ यतचित्ताय नमः॥
ॐ यतये नमः॥
ॐ यदृच्छालाभसन्तुष्टाय नमः॥
ॐ युक्ताय नमः॥
ॐ रागद्वेषवर्जिताय नमः॥
ॐ विदिताखिलशास्त्राय नमः॥
ॐ विद्याविनयसम्पन्नाय नमः॥
ॐ विमत्सराय नमः॥
ॐ विवेकिने नमः॥
ॐ विशालहृदयाय नमः॥
ॐ व्यवसायिने नमः॥
ॐ शरणागतवत्सलाय नमः॥
ॐ शान्ताय नमः॥
ॐ शुद्धमानसाय नमः॥
ॐ शिष्यप्रियाय नमः॥
ॐ श्रद्धावते नमः॥
ॐ श्रोत्रियाय नमः॥
ॐ सत्यवाचे नमः॥
ॐ सदामुदितवदनाय नमः॥
ॐ समचित्ताय नमः॥
ॐ समाधिक-वर्जिताय नमः॥
ॐ समाहितचित्ताय नमः॥
ॐ सर्वभूतहिताय नमः॥
ॐ सिद्धाय नमः॥
ॐ सुलभाय नमः॥
ॐ सुशीलाय नमः॥
ॐ सुहृदे नमः॥
ॐ सूक्ष्मबुद्धये नमः॥
ॐ संकल्पवर्जिताय नमः॥
ॐ सम्प्रदायविदे नमः॥
ॐ स्वतन्त्राय नमः॥

श्री गुरु प्रार्थना

शुक्लाम्ब्रधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं। ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥ रविवारे च संक्रान्तौ शुभयोगे यथाविधि। वैधृतौ च व्यतीपाते विप्राणां च गृहे तथा ॥२॥ दवतायतने चैव नद्यां वै सङ्गमोत्तसे। अथवा स्वगृहे चैव शुभे स्थाने विशेषतः ॥३॥ स्त्रानं समाचरेद्रोगी मृतपुत्रः सुपुत्रकः। कर्मणा पीडितो योऽसौ नारी वा पुरुषोऽथवा ॥४॥ धात्रीफलानि लोघ्रं च गोमयं तिलसर्षपान्। मृत्तिकाः सप्त कर्पूरमुशीरं मुस्तसंतुलम् ॥५॥ औषधैः समभागैस्तु स्त्रानं कुर्यात्प्रयत्नतः। देवान् पितृंश्च संतर्प्य दत्वा सूर्याघ्र्यमेव च ॥६॥ एवं सर्वाविधिं कृत्वा संकल्पं कारयेत्ततः॥ अद्येहेत्यादि प्राचीनसंचितकर्मविलोकनार्थं मनःकामनासिद्धयर्थं विष्णोः पूजनपूर्वकं कर्मविपाकपुस्तकपूजनमहं करिष्ये। अङ्गन्यासपूर्वकं षोडशोपचारपूजासंकल्पः वैश्वदेवं श्राद्धं च। अत्रान्तरे देहशुद्धयर्थं पुरश्चरणाङ्गत्वेन गोमिथुनदानव्रतं कुम्भदानं च, प्रजापतिसंतुष्टये षोडश ब्राह्मणान् भोजयेत्। भोजनान्तरे प्रार्थनाऽऽचार्यस्यब्राह्मण त्वं महाभाग भूमिदेव द्विजोत्तम। यथाविधं प्रतिज्ञाय प्राचीनं च शुभाशुभम् ॥७॥ कथं मे कथयस्वाशु कृपां कृत्वा ममोपरि। एवं तु ब्राह्मणाचार्यं नमस्कृत्य प्रसादयेत् ॥८॥ दश पश्च तथा विप्रानुपवेश्य प्रयत्नतः। तेषामनुज्ञया सर्वं प्रायश्चित्तमुपक्रमेत् ॥९॥ वस्त्रालङ्गरणैराचार्थं पूजयित्वा प्रजापतिस्वरूपं गुरुं प्रार्थयेत् प्रजापते महाबाहो वेदवेदाङ्गपारग। पुत्रकामसमृद्धयर्थं पूजां गृहहीष्व ते नमः ॥१०॥

विष्णो त्वं पुण्डरीकाक्ष भुवनानां च पालकः। लक्ष्म्या सह हृषीकेश पूजां गृहहीष्व ते नमः ॥११॥ रुद्र त्वं दैन्यनाशाय सदा भस्माङ्गधारकः। नागहारोपवीती च पूजां गृहहीष्व ते नमः ॥१२॥ स्वर्गे सुराश्च गन्धर्वाः पाताले पन्नगादयः। मृत्युलोके मनुष्याश्च सर्वे ध्यायन्ति भास्करम् ॥१३॥

महायज्ञादिकं चैव अग्निहोत्रादि कर्म च। तीर्थस्त्रानं तथा ध्यानं वर्तने भास्करोदयात् ॥१४॥ ब्रह्मा विष्णुः शिवः शक्तिर्देवदेवो मुनीश्वराः। ध्यायन्ति भास्करं देवं साक्षीमूतं जगत्रये ॥१५॥ त्वं ब्रह्मा त्वं वै विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः। त्वमग्निस्त्वं वषट्कारस्त्वामाहुः सर्वसाक्षिणम् ॥१६॥ योगिनां प्रथमो ध्येयो यतीनां ब्रह्मचारिणाम्। आधिव्याध्योश्च हर्त्ता त्वं सर्वपापक्षयं कुरु ॥१७॥ दीनानां कृपणानां च सर्वेषां व्याधिनाशनम्। एवं च भास्करं ध्यात्वा नमस्कृत्य प्रसादयेत् ॥१८॥ पापी चैव दुराचारी परनिन्दापरो जनः। ब्रह्महा हेमहारी च सुरापी गुरुतल्पगः ॥१९॥ स्त्रीहन्ता बालघाती च अगम्यागमनं तथा। एवमादिकपापानि मया वै पूर्वजन्मनि ॥२०॥

कृतानि विविधान्येव सर्वाणि मार्ष्टुमर्हसि। शरणं तव संप्राप्तस्त्वं मामुद्धर्तुमर्हसि ॥२१॥ ममोपरि कृपां कृत्वा कर्म मे कथय प्रभो। लग्नं तात्कालिकं कृत्वा जन्मपत्रं निरीक्ष्य च ॥२२॥ लग्नग्रहविचारेण ज्ञातव्यं कर्म मामकम्। ग्रहलग्नविचारेण जानन्ति कर्म पण्डिताः ॥२३॥ सूत उवाच॥ कैलासशिखरे रम्ये सुखासीनं महेश्वरम् । प्रणम्य पार्वती भक्त्या पप्रच्छ च सदाशिवम् ॥२४॥ पार्वत्युवाच॥ देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रह कारक। लोकोपकारकं प्रश्नं वद मे परमेश्वर ॥२५॥ कलौ च मानवास्तुच्छाः पापमोहसमन्विताः। महारोगग्रहग्रस्ताः पुत्रकन्याविवर्जिता ॥२६॥ कुत्सिता रूपविभ्रष्टा मृतवत्सा नपुंसकाः। नारीणां पुरुषाणां च पूर्वकर्म च यत्प्रभो ॥२७॥ तत्सर्वं वद मे स्वामिन् सर्वज्ञोऽसि मतो मम। तच्च श्रुत्वा वचो देव्याः प्रीतिमान् स महेश्वरः ॥२८॥ प्रहस्य जगतमीशो वल्लभां प्रीतिसंयुताम्। उवाच प्रश्नं तद्गूढं त्रैलोक्ये चापि दुर्लभम् ॥२९॥ शिव उवाच॥ श्रृणु त्वं गिरिजे देवि नृणां कर्म विशेषतः। कथयामि न सन्देहो यत्ते मनसि वर्त्तते ॥३०॥

मर्त्याः सर्वे जगज्जाताः कर्म कुर्वन्ति सर्वदा। स्वकर्माणि ततो देवि भुज्यंते देवमानुषैः ॥३१॥ मानवैस्तु विशेषेण सुखदुःखादिकं च यत्। कर्मत्रयं च सर्वेषां तन्मध्ये संचितं च यत् ॥३२॥ वक्तव्यं नात्र सन्देहो यत्कृत्वा फलमाप्रुयात् प्रारब्धं विस्तरं कर्म वर्तमानं च दृश्यते ॥३३॥ अश्विन्यादिकनक्षत्रे सर्वेषां जन्म जायते। तदादिपादभेदेन ज्ञातव्यं च शुभाशुभम् ॥३४॥

इति कर्मविपाकसंहितायां प्रथमोऽध्यायः॥

श्री गुरु स्मरण तथा स्वस्तयन

श्री मंगल मूर्तये नमः। श्री हरि । श्री गणेशाय नम।

॥श्री माता पितृभ्यां नम:। श्रीगुरुभ्यो नम:॥

लम्बोदरम् परम सुन्दरमेकदन्तम् रक्ताम्बरम् त्रिनयनम् परम पवित्रम्। उद्यद्दिवाकर निभोज्जवल कान्तिकान्तम् विघ्नेश्वर सकलविघ्नहरम् नमामि॥

गुरु स्मरण

अज्ञानतिमिरान्द्यस्य ज्ञानाज्जन शलाकया।
चक्षुरून्मीलितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नम:॥
अखण्डमण्डलाकारम् व्याप्तंयेन चराचरम्।
तत्पदम् दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नम:॥

श्री गुरुवे नम :

पवित्र करण मन्त्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्माभ्यन्तरः शुचि:॥
ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु,
ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु।
आचाम्य प्राणानाम्यम् गुरुं गुरु मन्त्रं च स्मृत
ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नम:
ॐ माधवाय नम:
आचमन के बाद मुह को पोछ लें।
ॐ हृषीकेशाय नम:, ॐ गोविन्दाय नमः

पवित्री धारण मन्त्र -

"पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्काम: पुन: तत्छकेयम्।"

आसन पवित्रीकरण करने का मन्त्र

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वम् विष्णुना धृता।
त्वम् च धारय , मां देवि पवित्रम् कुरु च आसनम्॥

मंगल तिलक मंत्र

ॐ स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्वेवेदा, स्वस्तिन स्ताक्ष्र्यो अरिष्ट नेमि:, स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु।

"स्वस्त्ययन" (शान्ति पाठ)

ॐ आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वेतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सद्मिद् वृधे असंन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥

देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवाना रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीव से॥

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदिति दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत्॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता धौः।

तद् ग्रावाण: सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्णया युवम्॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदा:। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

पृषदश्वा मरुत: पृश्निमातर: शुभं यावानो विदथेषु जग्मय:। अग्नि जिह्वा मनव: सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह:॥ भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:। स्थिरैरङ्गेस्तुष्टुवा सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो:॥

अदितिधौरदिति रन्तरिक्षमदिति र्माता स पिता स पुत्र:। विश्वे देवा अदिति: पञ्चजना अदिति र्जातमदिति र्जनित्वम्॥

धौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषदय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्ति र्विश्वे देवा: शान्ति ब्रेह्म शान्ति: सर्व शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि॥

यतो यत: समीहसे ततो नो अंभयं कुरु। शं न: कुरु प्रजाभ्योऽभयं न पशुभ्य:॥ सुखशान्तिर्भवतु ॥

आध्यात्मिक उन्नति हेतु उत्तम चातुर्मास व्रत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार, आषाढ मास में शुक्लपक्ष की एकादशी की रात्रि से भगवान विष्णु इस दिन से लेकर अगले चार मास के लिए योगनिद्रा में लीन हो जाते हैं, एवं कार्तिक मास में शुक्लपक्ष की एकादशी के दिन योगनिद्रा से जगते हैं। इसलिये चार इन महीनों को चातुर्मास कहाजाता हैं। चातुर्मास का हिन्दू धर्म में विशेष आध्यात्मिक महत्व माना जाता हैं।

अषाढ मास में शुक्ल पक्ष कि द्वादशी अथवा पूर्णिमा अथवा जब सूर्य का मिथुन राशि से कर्क राशि में प्रवेश होता हैं तब से चातुर्मास के व्रत का आरंभ होता हैं। चातुर्मास के व्रत कि समाप्ति कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष कि द्वादशी को होती हैं। साधु संन्यासी अषाढ मासकि पूर्णिमा से चातुर्मास मानते हैं।

सनातन धर्म के अनुयायी के मत से भगवान विष्णु सर्वव्यापी हैं. एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांडा भगवान विष्णु कि शक्ति से हि संचालित होता हैं। इस लिये सनातन धर्म के लोग अपने सभी मांगलिक कार्यो का शुभारंभ भगवान विष्णु को साक्षी मानकर करते हैं।

शास्त्रो में लिखा गया है कि वर्षाऋतु के चारों मास में लक्ष्मी जी भगवान विष्णु की सेवा करती हैं। इस अवधि में यदि कुछ नियमों का पालन करते हुवे अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु व्रत करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

चातुर्मास में व्रत करने वाले साधक को प्रतिदिन सूर्योदय के समय स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर भगवान विष्णु की आराधना करनी चाहिये।

चातुर्मास के व्रत का प्रारंभ करने से पूर्व निम्न संकल्प करना चाहिये।

"हे प्रभु, मैंने यह व्रत का संकल्प आपको साक्षि मानकर उपस्थिति में लिया हैं। आप मेरे उपर कृपा रख कर मेरे व्रत को निर्विघ्न समाप्त करने का सामर्थ्य मुजे प्रदान करें। यदि व्रत को ग्रहण करने के उपरांत बीच में मेरी मृत्यु हो जाये तो आपकी कृपा द्र यह पूर्ण रुप से समाप्त हो जाये।

व्रत के दौरन भगवान विष्णु की वंदना इस प्रकार करें।

शांताकारंभुजगशयनंपद्मनाभंसुरेशं।
विश्वाधारंगगनसदृशंमेघवर्णशुभाङ्गम्॥
लक्ष्मीकान्तंकमलनयनंयोगिभिर्ध्यानगम्यं।
वन्दे विष्णुंभवभयहरंसर्वलोकैकनाथम्॥

भावार्थ:- जिनकी आकृति अतिशय शांत हैं, जो शेषनाग की शय्यापर शयन कर रहे हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो सब देवताओं द्वारा पूज्य हैं, जो संपूर्ण विश्व के आधार हैं, जो आकाश के सद्रश्य सर्वत्र व्याप्त हैं, नीले मेघ के समान जिनका वर्ण हैं, जिनके सभी अंग अत्यंत सुंदर हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किये जाते हैं, जो सब लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म-मरणरूप भय को दूर करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति,कमलनयन,भगवान विष्णु को मैं प्रणाम करता हूं।

स्कंदपुराण के अनुशार चातुर्मास का विधि-विधान और माहात्म्य इस प्रकार विस्तार से वर्णित हैं।

चातुर्मास में शास्त्रीय विभिन्न नियमों का पालन कर व्रत करने से अत्याधिक पुण्य लाभ प्राप्त होते हैं।

- जो व्यक्ति चातुर्मास में केवल शाकाहारी भोजन ग्रहण करता हैं, वह धन धान्य से सम्पन्न होता हैं।
- जो व्यक्ति चातुर्मास में प्रतिदिन रात्री चंद्र उदय के बाद दिन में मात्र एकबार भोजन करता हैं, उसे सुख समृद्धि एवं एश्वर्य कि प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति भगवान विष्णु के शयनकाल में बिना मांगे अन्न का सेवन करता हैं, उसे भाई-बंधुओं का पूर्ण सुख प्राप्त होता हैं।
- स्वास्थय लाभ एवं निरोगी रेहने के लिये चातुर्मास में विष्णुसूक्त के मंत्रों को स्वाहा करके नित्य हवन में चावल और तिल की आहुतियां देने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- चातुर्मास के चार महीनों में धर्मग्रंथों के नियमित स्वाध्याय से पुण्य फल मिलता हैं।
- चातुर्मास के चार महीनों में व्यक्ति जिस वस्तु को त्यागता हैं वह वस्तु उसे अक्षय रूप में पुनः प्राप्त हो जाती हैं।

चातुर्मास का सद उपयोग आत्म उन्नति के लिए किया जाता हैं। चातुर्मास के नियम मनुष्य के भितर त्याग और संयम की भावना उत्पन्न करने के लिए बने हैं।

चातुर्मास में किस पदार्थ का त्याग करें

व्रत करने वाले व्यक्ति को...

- श्रावण मास में हरी सब्जी का त्याग करना चाहिये।
- भाद्रपद मास में दही का त्याग करना चाहिये।
- आश्विन मास में दूध का त्याग करना चाहिये।
- कार्तिक मास में दालों का का त्याग करना चाहिये।
- व्रत कर्ता को शैय्या शयन, मांस, मधु आदि का सेवन त्याग करना चाहिये।

त्याग किये गय पदार्थो का फल निम्न प्रकार हैं।

- जो व्यक्ति गुड़ का त्याग करता हैं, उसकी वाणी में मधुरता आति हैं।
- जो व्यक्ति तेल का त्याग करता हैं, उसके समस्त शत्रुओं का नाश होता हैं।
- जो व्यक्ति घी का त्याग करता हैं, उसके सौन्दर्य में वृद्धि होती हैं।
- जो व्यक्ति हरी सब्जी का त्याग करता हैं, उसकी बुद्धि प्रबल होती हैं एवं पुत्र लाभ प्राप्त होता हैं।
- जो व्यक्ति दूध एवं दही का त्याग करता हैं, उसके वंश में वृद्धि होकर उसे मृत्यु उपरांत गौलोक में स्थान प्राप्त होता हैं।
- जो व्यक्ति नमक का त्याग करता हैं, उसकी समस्त मनोकामना पूर्ण होकर उसके सभी कार्य में निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं।

चातुर्मास में मांगलिक कार्य वर्जित क्यों ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शयन का अर्थ होता है सोना अर्थात निद्रा। हिन्दू धार्मिक मान्यता हैं की हिन्दू पंचांग के अनुशार आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी (अर्थात हरिशयन एकादशी) से लेकर अगले चार माह तक भगवान विष्णु शेषनाग की शैय्या पर सोने के लिये क्षीरसागर में चले जाते हैं अर्थात वे निद्रा में रहते हैं।
निद्रा में लिन होने के पश्चयात श्री हरि कार्तिक शुक्ल एकादशी (अर्थात् देवोत्थान या देवउठनी एकादशी) को वे उठ जाते हैं।

भारतीय परंपरा के अनुशार देवशयन एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल दशमी इन चार माह तक कोई भी मांगलिक कार्य नहीं किया जाता। क्योकि इन कार्यों में पंच देवता कि उपस्थिति आवश्यक होती हैं भगवान विष्णु पंचदेवता में व्योम अर्थात आकाश के अधिपति हैं अतः विशेष रुप से भगवान विष्णु की उपस्थिति आवश्यक्ता होती है। श्री विष्णु की निद्रा में खलल न पड़े इस लिए सभी शुभ कार्य हरिशयन एकादशी के बाद से बंद हो जाते हैं, जो देवोत्थान एकादशी से पुनः प्रारंभ होते हैं।
(मांगलिक कार्य अर्थात गृह प्रवेश, विवाह, देवताओं की प्राण-प्रतिष्ठा, यज्ञ-हवन, संस्कार आदि कार्य को भारतिय संस्कृति में मांगलिक कार्य कहां जाता हैं।)

योगिनी एकादशी व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- "हे प्रभु! अब आप कृपा करके आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम तथा माहात्म्य क्या है? आप मुझे विस्तारपूर्वक बतायें।"

श्रीकृष्ण ने कहा- "हे पाण्डु पुत्र ! आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम "योगिनी एकादशी" है। योगिनी एकादशी के व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

यह व्रत इसलोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाला है। हे अर्जुन! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। योगिनी एकादशीके व्रत से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

मैं तुम्हें पुराण में कही हुई कथा सुनाता हूँ, हे अर्जुन ध्यानपूर्वक श्रवण करो- कुबेर नाम का एक राजा अलकापुरी नाम की नगरी में राज्य करता था। वह परम शिव-भक्त था। राजा का हेममाली नामक एक यक्ष सेवक था, जो पूजा के लिए फूल लाया करता था। हेममाली की विशालाक्षी नाम की अति सुन्दर स्त्री थी।

एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प लेकर आया, किन्तु कामासक्त होने के कारण पुष्पों को रखकर अपनी स्त्री के साथ रमण करने लगा। इस भोग-विलास में दोपहर हो गई।

हेममाली की राह देखते-देखते जब राजा कुबेर को दोपहर हो गई तो राजा ने क्रोधपूर्वक अपने अन्य सेवकों को आज्ञा दी कि तुम जाकर पता लगाओ कि हेममाली अभी तक पुष्प लेकर क्यों नहीं आया। जब सेवकों ने उसका पता लगा के राजा के पास आकर बताया- 'हे राजन! वह हेममाली अपनी स्त्री के साथ रमण कर रहा है।'

इस बात को सुन राजा ने हेममाली को बुलाने की आज्ञा दी। डर से काँपता हुआ हेममाली राजा के सामने उपस्थित हुआ। उसे देखकर कुबेर को अत्यन्त क्रोध आया। राजा ने कहा- 'अरे अधम! तूने मेरे परम पूजनीय देवों के देव भगवान शिवजी का अपमान किया है। मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू स्त्री के वियोग में तड़पे और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी का जीवन व्यतीत करे।

कुबेर के श्राप से वह तत्क्षण स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा और कोढ़ी हो गया। उसकी स्त्री भी उससे बिछड़ गई।

मृत्युलोक में उसने अनेक भयंकर कष्ट भोगे, उसकी बुद्धि मलिन न हुई और उसे पूर्व जन्म की भी सुध रही। अनेक कष्टों को भोगता हुआ तथा अपने पूर्व जन्म के कुकर्मो को याद करता हुआ वह हिमालय पर्वत की तरफ चल पड़ा।

चलते-चलते वह मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में जा पहुँचा। मार्कण्डेय ऋषि अत्यन्त तपस्वी थे। मार्कण्डेय ऋषि दूसरे ब्रह्मा के समान प्रतीत हो रहे थे और उनका वह आश्रम ब्रह्माजी की सभा के समान शोभा दे रहा था। ऋषि को देखकर हेममाली वहाँ गया और उन्हें प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़ा।

हेममाली को देखकर मार्कण्डेय ऋषि ने कहा तूने कौन-से कर्म किये हैं, जिससे तू कोढ़ी हुआ और भयानक कष्ट भोग रहा है।

महर्षि की बात सुनकर हेममाली बोला हे मुनिश्रेष्ठ! मैं राजा कुबेर का अनुचर था। मेरा नाम हेममाली है। मैं प्रतिदिन मानसरोवर से फूल लाकर शिव पूजा के समय राजा कुबेर को दिया करता था। एक दिन स्त्री मोहँ में फँस जाने के कारण मुझे समय का ज्ञान ही नहीं रहा और मैं दोपहर तक पुष्प राजा तक न पहुँचा सका।

तब राजा ने क्रोध मे मुझे श्राप दिया कि तू अपनी स्त्री का वियोग और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी बनकर दुख भोग। इस कारण मैं कोढ़ी हो गया हूँ तथा पृथ्वी पर आकर कष्ट भोग रहा हूँ, अतः कृपा करके आप कोई ऐसा उपाय बतलाये, जिससे मेरी मुक्ति हो।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा 'हे हेममाली! तूने सत्य वचन कहे हैं, इसलिए मैं तुम्हारें उद्धार के लिए एक व्रत

बताता हूँ। यदि तूम आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की योगिनी नामक एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करोगेतो तेरे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे।

महर्षि के वचन सुन हेममाली अति प्रसन्न हुआ और महर्षि के वचनों के अनुसार योगिनी एकादशी का पूर्ण विधि-विधान से व्रत करने लगा। इस व्रत के प्रभाव से अपने पुराने स्वरूप में आ गया और अपनी स्त्री के साथ सुखपूर्वक रहने लगा।

योगिनी एकादशी हे राजन! इस योगिनी एकादशी की कथा का फल अट्ठासी सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराने के समान है। इसके व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में मोक्ष प्राप्त करके जीव स्वर्ग का अधिकारी बनता है।"

कथा-सार: मनुष्य को पूजा-अर्चना इत्यादि धार्मिक कार्य में आलस्य या प्रमाद नहीं करना चाहिए, अपितु मन को संयम में रखकर सदैव इष्ट सेवा करनी चाहिए।
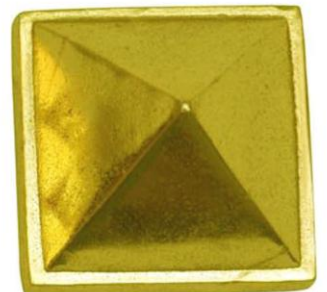
देवशयनी एकादशी व्रत कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- हे श्रीकृष्ण ! आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। उस दिन किस देवता का पूजन होता है? उसका क्या विधान है? कृपा कर यह सब विस्तारपूर्वक बतायें।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- "हे पाण्डु पुत्र ! एक बार नारदजी ने ब्रह्माजी से यही प्रश्न पूछा था। तब ब्रह्माजी ने कहा था कि नारद! तुमने कलियुग में प्राणिमात्र के उद्धार के लिए सर्व श्रेष्ठ प्रश्न पूछा है, क्योंकि एकादशी का व्रत सब व्रतों में उत्तम होता है। इसके व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी का नाम "देवशयनी एकादशी" है।

यह व्रत करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। इस सम्बन्ध में, मैं तुम्हें एक पौराणिक कथा सुनाता हूँ, आप ध्यानपूर्वक श्रवण करो मान्धाता नाम का एक सूर्यवंशी राजा था। मान्धाता सत्यवादी, महान तपस्वी और चक्रवर्ती थामान्धाता अपनी प्रजा का ध्यान सन्तान की तरह करता था। उसके राज्य की प्रजा धन-धान्य से परिपूर्ण थी और सुखपूर्वक जीवन-यापन कर रही थी। उसके राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ता था।

कभी किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा नहीं आती थी, परन्तु न जाने राजा से क्या भूल हो गई कि एक बार उसके राज्य में जबरदस्त अकाल पड़ गया और प्रजा भोजन की कमी के कारण अत्यन्त दुखी रहने लगी। राज्य में यज्ञ होने बन्द हो गए। अकाल से पीड़ित प्रजा एक दिन दुखी होकर राजा के पास जाकर प्रार्थना करने लगे हे राजन! समस्त संसार की सृष्टि का मुख्य आधार वर्षा है।

इसी वर्षा के अभाव से राज्य में अकाल पड़ गया है और अकाल से राज्य की प्रजा मर रही है। हे भूपति! आप कोई ऐसा उपाय कीजिये, जिससे हम लोगों का कष्ट धीघ्र दूर हो सके। यदि जल्द ही हमारे राज्य को अकाल से मुक्ति न मिली तो विवश होकर हमें को किसी दूसरे राज्य में शरण लेनी पड़ेगी।

प्रजाजनों की बात सुन राजा ने कहा आप लोग सत्य कह रहे हैं। वर्षा न होने से आप लोग बहुत दुखी हैं। राजा के पापों के कारण ही प्रजा को कष्ट भोगना पड़ता है। इस विषय में, मैं बहुत सोच-विचार कर रहा हूँ, फिर भी मुझे अपना कोई दोष दिखलाई नहीं दे रहा है। आप लोगों के कष्ट को दूर करने के लिए मैं बहुत उपाय कर रहा हूँ, परन्तु आप चिन्तित न हों, मैं इसका कोई-न-कोई उपाय अवश्य ही करूँगा।

राजा के वचनों को सुन प्रजाजन चले गये। राजा मान्धाता भगवान की पूजा कर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को साथ लेकर वन की ओर चल दिया। वन मे वह ऋषि-मुनियों के आश्रमों में घूमते-घूमते अन्त में अंगिरा ऋषि के आश्रम पर पहुँच गया। रथ से उतरकर राजा आश्रम में गया। ऋषि के सम्मुख पहुँचकर राजा ने उन्हें प्रणाम किया। ऋषि ने राजा को आशीर्वाद दिया, फिर पूछा- हे राजन! आप यहाँ किस प्रयोजन से पधारे हैं, वो कहिये।

राजा ने कहा हे महर्षि! मेरे राज्य में अकाल पड़ गया है, तीन वर्ष से वर्षा नहीं हो रही है और प्रजा कष्ट भोग रही है। राजा के पापों के प्रभाव से ही प्रजा को कष्ट मिलता है, ऐसा शास्त्रों में लिखा है। मैं धर्मानुसार राज करता हूँ, फिर यह अकाल कैसे पड़ गया, इसका मुझे अभी तक पता नहीं लग सका। अब मैं आपके पास इसी समस्या की निवृत्ति के लिए आया हूँ। आप कृपा कर मेरी इस समस्या का निवारण कर मेरी प्रजा के कष्ट को दूर करने के लिए कोई उपाय बतलाइये।

सब बात सुनने के बाद ऋषि ने कहा 'हे राजन! इस सतयुग में धर्म के चारों चरण सम्मिलित हैं। यह सतयुग सभी युगों में उत्तम है। इस युग में केवल ब्राहमणों को ही तप करने तथा वेद पढ़ने का अधिकार है, किन्तु आपके राज्य में एक शूद्र तप कर रहा है। इसी दोष के कारण आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। यदि आप प्रजा का कल्याण चाहते हैं तो शीघ्र ही

उस शूद्र का वध करवा दें। जब तक आप यह कार्य नहीं कर लेते, तब तक आपका राज्य अकाल की पीड़ा से कभी मुक्त नहीं हो सकता।' ऋषि के वचन सुन राजा ने कहा- 'हे मुनिश्रेष्ठ! मैं उस निरपराध तप करने वाले शूद्र को नहीं मार सकता। किसी निर्दोष मनुष्य की हत्या करना मेरे आचरण के विरुद्ध है और मेरी आत्मा इसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं करेगी। आप इस दोष से मुक्ति का कोई दूसरा उपाय बतलाइये।'

राजा को विचलित जान ऋषि ने कहा- 'हे राजन! यदि आप ऐसा ही चाहते हो तो आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा भी पूर्व की भाँति सुखी हो जाएगी, क्योंकि इस एकादशी का व्रत सभी सिद्धियों को देने वाला है और सभी कष्टों से मुक्त करने वाला है।'

ऋषि के इन वचनों को सुनकर राजा अपने नगर वापस आ गया और विधि-विधान से देवशयनी एकादशी का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से राज्य में अच्छी वर्षा हुई और प्रजा को अकाल से मुक्ति मिली।

इस एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं। इस व्रत के करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं, अतः मोक्ष की इच्छा रखने वाले मनुष्यों को इस एकादशी का व्रत करना चाहिए। चातुर्मास्य व्रत भी इसी एकादशी के व्रत से आरम्भ किया जाता है।"

कथा-सार: अपने कष्टों से मुक्ति पाने के लिए किसी दूसरे का अहित नहीं करना चाहिए। इष्टदेव पर श्रद्धा और आस्था रखकर सत्कर्म करने से बड़े से बड़े कष्टों से भी सरलता से मुक्ति मिल सकती है।

चातुर्मास्य व्रत कथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- हे श्रीकृष्ण ! विष्णु का शयन व्रत की कथा सुनाइये। भगवान विष्णु का शयन व्रत किस प्रकार किया जाता है। कृपा कर विस्तारपूर्वक बताइये।"

श्रीकृष्ण ने कहा "हे पाण्डु पुत्र ! अब मैं तुम्हें भगवान श्रीहरि के शयन व्रत का विस्तार से वर्णन सुनाता हूँ। इसे ध्यानपूर्वक श्रवण करो सूर्य के कर्क राशि मे प्रवेश होने पर भगवान विष्णु शयन करते हैं और जब सूर्य तुला राशि मे आते हैं तब भगवान जागते हैं। अधिक मास के दौरान भी विधि इसी प्रकार रहती है।

आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का विधानपूर्वक उपवास करना चाहिए। उस दिन भगवान विष्णु की मूर्ति बनानी चाहिए और चातुर्मास्य उपवास नियमपूर्वक करना चाहिए। सर्वप्रथम भगवान विष्णु की मूर्ति को स्नान कराना चाहिए। फिर श्वेत वस्त्रों को धारण कराकर भगवान विष्णु को तकियादार शैया पर शयन कराना चाहिए। भगवान विष्णु का धूप, दीप और नैवेद्यादि पूर्ण विधि-विधान से पूजन कराना चाहिए। भगवान का पूजन विद्वान ब्राह्मणों के द्वारा कराना चाहिए, विष्णु की इस प्रकार स्तुति करनी चाहिए- 'हे प्रभु! मैंने आपको शयन कराया है। आपके शयन से सम्पूर्ण विश्व सो जाता है।

इस तरह भगवान श्रीहरि के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिए- 'हे प्रभु! आप जब चार माह तक शयन करें, तब तक मेरे इस चातुर्मास्य व्रत को निर्विघ्न रखें।'

भगवान विष्णु की स्तुति करने के उपरान्त शुद्ध भाव से मनुष्यों को दातुन आदि के नियम को ग्रहण करना चाहिए। भगवान विष्णु के व्रत को आरम्भ करने के पाँच काल वर्णित किए गए हैं। देवशयनी एकादशी से लेकर देवोत्यानी एकादशी तक चातुर्मास्य उपवास करना चाहिए। द्वादशी, पूर्णमाशी, अष्टमी या संक्रांति को उपवास शुरू करना चाहिए और कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को समाप्त कर देना चाहिए। इस उपवास के मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस उपवास को प्रति वर्ष करते हैं, वह सूर्य के समान क्रान्तियुक्त विमान पर बैठकर विष्णु लोक को जाते हैं। हे राजन! अब आप इसमें दान का अलग-अलग फल जानें-

- देव मंदिरों में रंगीन पत्ते-पत्तियां बनाने वाले मनुष्य को सात जन्मों तक ब्राह्मण जन्म मिलता है।
- चातुर्मास्य के दिनों में जो मनुष्य भगवान विष्णु को दही, दूध घी, शहद और मिश्री आदि पंचामृत से स्नान कराता है, वह वैभवशाली होकर अनन्त सुख भोगता है।
- श्रद्धा पूर्वक भूमि, स्वर्ण, दक्षिणा आदि ब्राह्मणों को दानस्वरूप देने वाला मनुष्य स्वर्ग में जाकर देवराज के समान सुख भोगता है।
- विष्णु की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर जो मनुष्य उसका धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करता है, वह देवलोक मे जाकर अनन्त सुख भोगता है। चातुर्मास्य मे जो मनुष्य नित्य भगवान को तुलसी अर्पित करता है, वह बैठकर विष्णुलोक को जाता है।
- भगवान विष्णु का धूप-दीप से पूजन करने वाले मनुष्य को अक्षय धन की प्राप्ति होती है।
- देवशयनी एकादशी से कार्तिक के महीने तक जो मनुष्य भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, उन्हें विष्णुलोक की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य हस चातुर्मास्य व्रत में संध्या के समय देवताओं तथा ब्राह्मणों को दीप दान करते हैं तथा ब्राह्मणों को स्वर्ण के पात्र में वस्त्र दान देते हैं, वह विष्णुलोक को जाते हैं। भक्तिपूर्वक भगवान का चरणामृत लेने वाले मनुष्य इस संसार के आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाते हैं।

- जो मनुष्य भगवान विष्णु के मंदिर में प्रतिदिन १०८ बार गायत्री मन्त्र का जाप करते हैं, वे कभी पापों में लिप्त नहीं होते।
- पुराण तथा धर्मशास्त्र को सुनने वाले और वेदपाठी ब्राह्मणों को वस्त्रों का दान करने वाले मनुष्य दानी, धनी, ज्ञानी और यशस्वी होते हैं।
- जो मनुष्य भगवान, विष्णु या शिवजी का स्मरण करते हैं और उनकी प्रतिमा दान करते हैं, वे समस्त पापों से मुक्त होकर गुणवान बनते हैं।
- जो मनुष्य सूर्य को अर्घ्य देते हैं और समाप्ति में गौ-दान करते हैं, वे निरोगता, दीर्घायु, यश, धन और बल पाते हैं।
- जो मनुष्य चातुर्मास्य में गायत्री मन्त्र द्वारा तिल से होम करते हैं और चातुर्मास्य समाप्त हो जाने पर तिल का दान करते हैं, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और निरोग काया मिलती है तथा संस्कारी संतान की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत अन्न से होम करते हैं और समाप्त हो जाने पर घी, कलश और वस्त्रों का दान करते हैं, वे ऐश्वर्यशाली होते हैं। जो मनुष्य तुलसी को गले में धारण करते हैं तथा अन्त में भगवान विष्णु के निमित्त ब्राह्मणों को दान देते हैं, वह विष्णुलोक को पाते हैं।
- चातुर्मास्य उपवास में जो मनुष्य भगवान विष्णु के शयन के उपरान्त उनके मस्तक पर नित्य दूध चढ़ाते हैं और अन्त में स्वर्ण की दूर्वा दान करते हैं तथा दान देते समय जो इस प्रकार की स्तुति करते हैं कि- 'हे दूर्वे! जिस भाँति इस पृथ्वी पर शाखाओं सहित फैली हुई हो, उसी प्रकार मुझे भी अजर-अमर संतान दो', ऐसा करने वाले मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य भगवान शिव या विष्णु का स्मरण करते हैं, उन्हें रात्रि जागरण का फल प्राप्त होता है।
- चातुर्मास्य व्रत करने वाले मनुष्य को उत्तम ध्वनि वाला घण्ट दान करना चाहिए और इस प्रकार स्तुति करनी चाहिए- 'हे प्रभु! हे नारायण! आप समस्त पापों का नाश करने वाले हैं। मेरे न करने योग्य कार्यों को करने से जो पाप उत्पन्न हुए हैं, कृपा कर आप उनको नष्ट कीजिए।
- चातुर्मास्य में प्राजापत्य तथा चांद्रायण व्रत पद्धति का पालन भी किया जाता है। प्राजापत्य व्रत को १२ दिनों में पूर्ण करते हैं। व्रत के आरम्भ से पहले तीन दिन १२ ग्रास भोजन प्रतिदिन लेते हैं, फिर आगामी तीन दिनों तक प्रतिदिन छब्बीस ग्रास भोजन लेते हैं, इसके आगे के तीन दिनों तक २८ ग्रास भोजन लिया जाता है और इसके बाद बाकी बचे तीन दिन निराहार रहा जाता है। इस व्रत के करने से मनुष्य की इच्छित मनोकामना पूर्ण होती है। व्रत करने वाला साधक प्राजापत्य व्रत करते हुए चातुर्मास्य के हेतु उपयुक्त सभी धार्मिक कृत्य जैसे पूजन, जप, तप, दान, शास्त्रों का पठन-पाठन तथा कीर्तन आदि करता रहे।
- हे अर्जुन! इसी प्रकार चांद्रायण व्रत भी किया जाता है। अब इस व्रत का विधान सुनो- यह व्रत पूरा महीना किया जाता है। पापों से मुक्ति के लिए किया जाने वाला यह व्रत बढ़ता-घटता रहता है। इसमें अमावस्या को एक ग्रास, प्रतिपदा को दो ग्रास, द्वितीया को तीन ग्रास भोजन लेते हुए पूर्णिमा के पूर्व चौदह ग्रास और पूर्णिमा को पन्द्रह ग्रास भोजन लेना चाहिए। फिर पूर्णिमा के बाद चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह ग्रास इस क्रम में भोजन लेते हुए भोजन की मात्रा प्रतिदिन घटानी चाहिए।
- है अर्जुन! जो प्राजापत्य और चांद्रायण व्रत करते हैं, उन्हें इसलोक में धन सम्पत्ति, शारीरिक निरोगता तथा भगवान की कृपा प्राप्त होती है। इसमें कांसे का पात्र और वस्त्र दान की शास्त्रीय व्यवस्था है। चातुर्मास्य के समापन पर दक्षिणा से सुपात्र ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करने का विधान है।
- चातुर्मास्य व्रत के पूर्ण हो जाने के बाद ही गौ-दान करना चाहिए। यदि गौ-दान न कर सकें तो वस्त्र दान अवश्य करना चाहिए।
- नित्य जो मनुष्य ब्राह्मणों को प्रणाम करते हैं, उनका जीवन सफल हो जाता है और वे सभी पापों

से मुक्त हो जाते हैं। चातुर्मास्य व्रत पूर्ण होने पर जो ब्राह्मणों को भोजन कराता है, उसकी आयु तथा धन में वृद्धि होती है।

- जो मनुष्य अलंकार सहित बछड़े वाली कपिला गाय वेदपाठी ब्राह्मणों को दान करते हैं, वे चक्रवर्ती आयुवान, संतानवान राजा होते हैं और स्वर्गलोक में प्रलय के अन्त तक देवराज के समान राज्य करते हैं।
- सूर्यदेव तथा गणेशजी को जो मनुष्य नित्य प्रणाम करते हैं, उनकी आयु तथा लक्ष्मी बढ़ती है और यदि गणेशजी प्रसन्न हो जाएँ तो वे मनोवांछित फल पाते हैं। सूर्यदेव और गणेशजी की प्रतिमा ब्राह्मण को देने से समस्त कार्यों की सिद्धि होती हैं।
- दोनो ऋतुओं में जो मनुष्य शिवजी की प्रसन्नता के लिए तिल और वस्त्रों के साथ तांबे का पात्र दान करते हैं, उनके यहाँ स्वस्थ व सुन्दर शिवभक्त संतान उत्पन्न होती है। चातुर्मास्य व्रत के पूर्ण होने पर चाँदी या तांबा-पात्र गुड़ और तिल के साथ दान करना चाहिए।
- भगवान विष्णु के शयन करने के उपरान्त जो मनुष्य यथा शक्ति वस्त्र और तिल के साथ स्वर्ण का दान करते हैं, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और वे इसलोक में भोग तथा परलोक में मोक्ष प्राप्त करते हैं।
- चातुर्मास्य व्रत के पूर्ण होने पर जो मनुष्य शैया दान करते हैं, उनको अक्षय सुख की प्राप्ति होती है और वे कुबेर के समान धनवान होते हैं।
- जो मनुष्य वर्षा ऋतु में गोपीचंदन देते हैं, उन पर भगवान प्रसन्न होते हैं। चातुर्मास्य में एक बार भोजन करने वाला, भूखे को अन्न देने वाला, भूमि पर शयन करने वाला अभीष्ट को प्राप्त करता है। इन्द्रिय निग्रह कर, चातुर्मास्य व्रत का अनन्त फल प्राप्त किया जाता है।
- श्रावण में शाक, भादों में दही, आश्विन में दुग्ध और कार्तिक में दाल का त्याग करने वाले मनुष्य निरोगी होते हैं।
- चातुर्मास्य व्रत का नियमपूर्वक पालन करने पर ही उद्यापन करना चाहिए। जब प्रभु से शैया त्यागने का अनुरोध करें, तब विशेष पूजन करना चाहिए। इस अवसर पर निरभिमानी विद्वान ब्राह्मण को अपनी क्षमता के अनुसार दान-दक्षिणा देकर प्रसन्न करना चाहिए। हे अर्जुन! देवशयनी एकादशी और चातुर्मास्य का माहात्म्य अनन्त पुण्य फलदायी है, इस व्रत के करने से मानसिक शान्ति और भगवान विष्णु के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।

कथा-सार

चातुर्मास्य भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने के लिए चार मास तक किया जाने वाला व्रत है। इस व्रत को देवशयनी से देवोत्थान एकादशियों से जोड़ने से भगवान के प्रति आस्था सुदृढ़ होती है। चातुर्मास्य में जब भगवान विष्णु शयन करते हैं, उस समय कोई भी मांगलिक कार्य नहीं किए जाते, मांगलिक कार्यों का शुभारम्भ देवोत्थानी एकादशी से पुनः प्रारम्भ होता है।

फ़िरोजा एक विलक्षण रत्न

संकलन गुरुत्व कार्यालय

फ़िरोजा शब्द अंदाज से 16 वीं सदी के आसपास फ्रेंच भाषा के तुर्की (Turquois) से प्राप्त हुवा था या गहरे नीले रंग का पत्थर (pierre turquin) से प्राप्त हुवा होगा या, इस के नाम मे बहोत सारे सहस्य है! नकली फ़िरोजा के अस्तित्व लागू होने से असली फ़िरोजा का महत्व कम हो गया है, फ़िरोजा को कई नामों से जाना जाता है,

खनिज समूह: मरकत समूह.

प्राप्ति स्थान:

फ़िरोजा के प्राप्ति स्थान बहोत सारे है। जिनमें से कुछ ही का उल्लेख वाणिज्यिक के लिए उत्तम होता है।, जिसकी गुणवत्ता और प्रभाव अच्छा हो उस का उल्लेख किया जारहा है। ईरान के मा'डन (Ma'dan) से ४५-५० किमी उत्तर पश्चिम में नेइशाबुर(निशापुर) जिसे भारत मे निशापुरी के नाम से जाना जता है। निशापुरी सबसे अच्छा होता है इस्का रंग एवं प्रभाव बाकी जगाओ से प्राप्त से उत्तम होता है। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया. में चीन, ब्राजील, मेक्सिको, संयुक्त राज्य अमरीका, इंग्लैंड, बेल्जियम और भी बहोत सारी जगाहो से प्राप्त होता है।

प्राकृतिक सुंदर फ़िरोजा फ़ायदेमंद है।

मूल यह एक 100% प्राकृतिक रत्न पत्थर है। (खनन/खादान के माध्यम से प्राप्त)

फ़िरोजा के लाभ

- फ़िरोजा को एक आध्यात्मिक रूप में सहायता हेतु प्रयोग किया जाता है।
- किसी भी स्थिति में, जहां स्पस्ट बात करने की आवश्यक है, वहा व्यक्ति की बात मे एक प्रकार के गुण उत्पन्न करती है जो उसे दूसरो से अलग और ज्यदा स्पस्ट सुवक्ता बनने मे मदद करता है।
- व्यक्ति को दोस्तों के बीच खुले विचार, प्यार और नि:स्वार्थ संबंध के प्रवाह को सक्षम करने के लिए, फ़िरोजा उपयोगकर्ता के अंदर समग्र मानसिक स्थिति को बढ़ाने मे, सकारात्मक सोच, संपूर्णता, अंतर्ज्ञान, बुद्धि, मानसिक अधिक स्थिरता और आत्म का विकास कर उसको जानने के लिए अग्रणी बनाता है।
- फ़िरोजा के लिये कहा जाता ह। इस रत्न का लाभ सभी राशि के लोगो द्वारा उपयोग किया जा सकता है, इसे दुनिया मे सभी उम्र और सब धर्म के लोगो मे इस्तेमाल सबसे आम पहलू यह है, कि प्रत्येक संस्कृति और हर धर्म मे फ़िरोजा के लाभ का सम्मान करते है।
- पहनने वाला के परिवार को मुसीबत से बचाया है विशेष रूप से पति और पत्नी बीच , नफ़रत को नष्ट करता है और प्यार बढ़ाता है।
- इस रत्न की अदृश्य स्त्रोतों से आने वाली ऊर्जा आप के लिए उप्योगी हो सकती है।
- फ़िरोजा के रंग मे बदलाव होता रहता है।
- यदि यह गहरे नीले रंग का हो तो यह अच्छा शगुन है।
- यदि यह गहरे हरे रंग का हो तो यह माध्यम है।
- परन्तु अगर यह पीला हो जाता है यह एक बुरा शगुन है।
- फ़िरोजा को दोस्ती केलिये एक अच्छा संकेत माना जाता है अगर किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपहार मे प्राप्त हो।

- अगर इमे धागे के समान रेखा दिखाई देती है, यह शत्रुता उत्पन्न होने का संकेत है।
- यह भी अविवाहित लड़कियों को पेहनाने से उनके विवाह शीघ्र होता है।

लाभ:-

- यह चीन मे व्यापक रूप से फेंग शुई और क्रिस्टल चिकित्सा में इस्तेमाल किया है।
- शराब की लत छुडाने के लिए क्रिस्टल चिकित्सकों द्वारा फ़िरोजा की सिफारिश की जाती है।
- संक्रमण,ऊँचा रक्तचाप, अस्थम, दाँत और मुँह की समस्या एवं सूर्य के विकिरण से रक्षा होती है।
- यह ज्यादातर बाज़र मे बिकने वाले फ़िरोजा जेसे पत्थर असली नहीं होते।
- एक असली या नकली फ़िरोजा को पहचान ने के लिये, इसकी सतह को देखे असली कि सतह खुर्दरी और समतल या सपाट नहीं होती, एवं नकली फ़िरोजा की सतह समतल या सपाट होती है।

चिकित्सा अस्वीकृति

- ऊपर उल्लेख फ़िरोजा सब वर्णन के भारतीय और चीनी पौराणिक कथाओं के अनुसार हैं।

पत्थर के हीलिंग लाभ के लिये अपने चिकित्सक या अन्य स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर से सलाह ले एक विकल्प के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

स्वप्न द्वारा जाने धनप्राप्ति के योग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

- स्वप्न में देवी-देवता के दर्शन होने से धन लाभ के साथ-साथ सफलता दर्शाता है।
- स्वप्न में गाय का दूध निकालना य निकालते देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- सफेद घोडे को देखना धन की प्राप्ति एवं उज्जवल भविष्य का संकेत है।
- स्वप्न में नीलकण्ठ या सारस पक्षी को देखना धन लाभ एवं राज सम्मान कि प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में कदम्ब के वृक्ष को देखना धन प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, राजसम्मान प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में कानों में बाली या धारण किये देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में नृत्य करती स्त्री/कन्या को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में मृत पक्षी को देखना आकस्मिक धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में जलता हुवा दीपक देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में स्वर्ण को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में चूहों को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में सफेद चीटियाँ देखना धन लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में काले बिच्छू को देखना धन लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में नेवले का को देखना हीरे-ज्वाहरात कि प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में मधुमक्खी का छत्ता देखना धन लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में सर्प को फन उठाये देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में हाथी को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में महल को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में तोते को खाते देखना प्रबल धन प्राप्ति के योग का संकेत है।
- स्वप्न में अंगुली में अंगूठी पहनें हुवे देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में आम का बगिचा देखना आकस्मिक धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में पर्वत और वृक्ष पर चढ़ते देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में आंवले और कमल को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में गौ दुग्ध, घी, फल वाले वृक्ष देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में सर्प को बिल के साथ देखना आकस्मिक धन प्राप्ति का संकेत है।
- स्वप्न में गाय के दर्शन होने से अत्यन्त शुभ होता हैं, व्यक्ति को यश, वैभव एवं परिवार वृद्घि से लाभ प्राप्त होती है।
- स्वप्न में किसान को खेत में काम करते देखना धन प्राप्ति का संकेत है।

मंत्र सिद्ध काली हल्दी के विभिन्न लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विद्वानों का कथन हैं की ईश्वर की कृपा प्राप्ति हेतु एवं वांछित कार्य में सिद्धि की प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ति हेतु मंत्र, यंत्र और तंत्र के अनेक उपायो का वर्णन हिन्दूं धर्मग्रंथों में मिलता हैं।

आज के भौतिक युग में हर कार्य अर्थ (धन) के उपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुपसे निर्भर होता हैं इस लिये प्रत्येक व्यक्ति कि यही इच्छा होती हैं कि उसके पास भी इतना धन हो कि वह अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखो को भोग ने में समर्थ हों। हर व्यक्ति की चाह होती हैं की उसकी धन-संपत्ति दिन दोगुनी रात चौगुनी बढती रहें !

हिन्दू धर्म में धन और ऐश्वर्य की देवी मां महालक्ष्मी हैं जो धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। इस लिए माँ महालक्ष्मी की प्रसन्नता एवं कृपा से धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के सरल उपाय तंत्र शास्त्र में बताये गये हैं।

भारतीय परंपरा में हल्दी का विशेष महत्व बताया गया हैं, हल्दी का उपयोग प्रायः सभी व्यक्ति के जीवन में भोजन के अलावा अधिक्तर आध्यात्मिक व औषधि के रुप में भी होता हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में हल्दी के प्रयोगो से धन प्राप्ति संभव हैं!

हिन्दू संस्कृति में हल्दी को अत्यंत शुभ एवं गुणकारी माना जाता हैं इस लिए हल्दी का प्रयोग भोजन व औषधि के अलावा मांगलित कार्य, देवी-देवताओं के पूजन-अर्चन इत्यादि में विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। अधिकतर लोगों ने हल्दी केवल पीले रंग की ही देखी होगी। क्योकि पीली हल्दी का प्रयोग हर घरों में मसालों के रुप में प्रयोग होता ही हैं, इस लिए पीली हल्दी बाजारों में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

लेकिन हल्दी काले रंग की भी प्राप्त होती हैं। काली हल्दी को तंत्र शास्त्रों में अधिक दुर्लभ और देवीय गुणों से युक्त माना गया हैं। काली हल्दी औषधिय गुणों से भरपूर होती हैं, इसलिए इस का प्रयोग तंत्र प्रयोगो के अलावा औषधि के निर्माण इत्यादि में भी विशेष रुप से किया जाता हैं।

तंत्र विद्या के जानकार मानते हैं की धन प्राप्ति हेतु काली हल्दी एक अद्भुत चमत्कारी प्रभावों से युक्त होती हैं, उनका मानना हैं की काली हल्दी के विधि-विधान से पूजन से व्यक्ति असीम धन-संपत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने में समर्थ हो सकता हैं।

हल्दी को हरिद्रा भी कहा जाता है। तंत्र विद्या के जानकारों का तो यहां तक मानना हैं की असली काली हल्दी प्राप्त होना सौभाग्य की बात हैं। जिस घर में काली हल्दी का पूजन होता हो वह घर में निवास कर्ता सौभाग्यशाली होते हैं।

ऐसी धार्मिक मान्यता हैं की अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली, ग्रहण, गुरु पुष्यामृत योग, त्रिपुष्कर योग, द्विपुष्कर योग, कार्य सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग आदि किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर उसका नियमित पूजन करने से काली हल्दी का चमत्कारी प्रभाव आश्चर्यजन रुप से अति शीघ्र प्राप्त होता हैं।

धन प्राप्ति प्रयोग

- काली हल्दी को अपने पूजन स्थान में लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा या चित्र के पास स्थापित कर उसका विधिवत पूजन करें।
- विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी को घर में स्थापित कर पूजन करने से घर में निरंतर सुख-शांति की वृद्धि होने लगती है।
- तंत्र शास्त्र के जानकारों का कथन हैं की काली हल्दी के नियमित पूजन से व्यक्ति को कभी पैसा की कमी नहीं होती।
- काली हल्दी की गांठ को चांदी, स्टील या प्लास्टिक की डिब्बी में रख कर प्रति-दिन देवी-देवता के साथ धूप-दीप से पूजन करें।
- काली हल्दी की गांठ को सोने या चांदी के सिक्के के साथ लाल वस्त्र में बांधकर पोटली बना कर उसे अन्य देव प्रतिमाओं के साथ पूजा करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती है। (सोने या चांदी के सिक्के न हो तो रुपये-पैसे के नये सिक्के के साथ रखा जा सकता हैं)
- काली हल्दी की पोटली को को अपने गल्ले (कैश बॉक्स), तिजोरी आदि में भी रख सकते हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी के पूजन से धन से संबंधित समस्याएं दूर होती है, रोजगार में वृद्धि होती हैं।
- काली हल्दी के प्रभाव से नकारात्मक उर्जा को दूर किया जा सकता है।
- किसी शुभ मुहूर्त में काली हल्दी को सिंदूर में रखकर धूप-दीप से पूजन कर लाल कपड़े में एक सिक्के के साथ बांधर तिजोरी या गल्ले में रखने से धन की वृद्धि होने लगती है।

प्रबल धन प्राप्ति प्रयोग

प्रबल धन की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को मंत्र सिद्ध 11 गोमती चक्र, 11 पीली कौडियां और काली हल्दी के 11 टुकड़ों को दीपावली या धनत्रयोदशी आदि शुभ अवसर पर पूजन के समय मां लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के साथ स्थापित कर विधिवत पूजन करने से शीघ्र विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं। पूजन के पश्चयात गोमती चक्र, कौडि और हल्दी के टुकड़ों को पीले कपड़े में बांध कर पोटली बना कर अपनी तिजोरी या गल्ले में रखलें। नियमित यथा संभव लक्ष्मी मंत्र का जप करते रहें। इस विधि से पूजन करने से धन संबंधित रुकावट शीघ्र दूर होने लगती हैं और परिवार में निरंतर धन, सुख, समृद्धि में वृद्धि होती हैं।

यदि व्यवसाय में निरन्तर लाभ के स्थान पर घाटा हो रहा हो तो भी यह प्रयोग अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

कार्य सिद्धि प्रयोग

- काली हल्दी के टुकड़े पर मौली लगाकर गूगल और लोबान के धूप से शोधन करके अपने पूजा स्थान में रखदें, किसी महत्वपूर्ण कार्य पर जाते समय उसे हमेंशा अपनी जेब के उपरी हिस्से में या बैग में रखें, इस प्रयोग से कार्य बिना किसी बाधा विध्न के पूर्ण होने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं।
- किसी नये कार्य या महत्वपूर्ण कार्य के लिए जाते समय काली हल्दी को चंदन की तरह घीस कर उसका तिलक लगाकर जाने से कार्य में सफलता

प्राप्त होने की संभावना प्रबल हो जाती हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की नौकरी व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए यह प्रयोग अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

तांत्रिक प्रभाव निवारण प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति पर टोने-टोटके आदि तांत्रिक प्रभाव हो तो उसे काली हल्दी के छोड़े टुकड़े को छेद करके धागा में पिरोकर या किसी ताविज में भर कर धारण करवाया जाये तो शीघ्र ही अशुभ प्रभावों से मुक्ति मिल सकती हैं। कुछ विद्वानों का अनुभव हैं की काली हल्दी को नवग्रह मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करने से ग्रह जनित पीड़ाएं दूर होती हैं।

आकर्षण प्रयोग

विद्वानों का मत हैं की काली हल्दी को तंत्र शास्त्र में वशीकरण में अत्यंत लाभ प्रद जड़ी बूटी माना जाता है। तंत्र विद्या के जानकारों का मानना हैं की काली हल्दी में अद्भुत आकर्षण शक्ति होने के कारण वशीकरण आदि में भी काली हल्दी का प्रयोग विशेष लाभप्रद होता हैं।

प्रतिदिन काली हल्दी का तिलक लगाने से सभी प्रकार के इच्छित मनुष्यों का आकर्षण हो सकता हैं। काली हल्दी का तिलक एक अत्यंत सरल तंत्रोक्त प्रयोग है।

विशेष नोट: आकर्षण या वशीकरण हेतु काली हल्दी का प्रयोग करने से पूर्व काली हल्दी को किसी योग्य जानकार विद्वान से वशीकरण मंत्र से अभिमंत्रित एवं मंत्र सिद्ध अवश्य करवालें।

* आकर्षण प्रयोग केवल शुभ उद्देश्य हेतु लाभप्रद होता हैं, अनैतिक कार्य या उद्देश्य हेतु किया गया आकर्षण प्रयोग निश्चित रुप से अत्याधिक हानी कारक सिद्ध होता हैं।

स्वास्थ्य वर्धक प्रयोग

यदि कोई व्यक्ति हमेंशा बिमार या अस्वस्थ रहता हो, तो किसी भी गुरूवार से यह प्रयोग प्रारंभ कर के तीन गुरुवार तक प्रयोग करें। गेहूं के आटे के दो पेड़े बनाकर उसमें थोडी गीली चीने की दाल, थोड़ा गुड़ और थोड़ी सी पिसी हुइ काली हल्दी को दबाकर रोगी व्यक्ति के उपर से सात बार घड़ी की दिशा (दक्षिणावर्त/Clockwise) में उतार कर गाय को खिला दें। यह उपाय लगातार तीन गुरूवार करने से विशेष लाभ दिखने लगता हैं।

नजर रक्षा प्रयोग

- यदि किसी को नजर लग गयी है, तो काले कपड़े में काली हल्दी को बांधकर सात बार नज़र लगे व्यक्ति या बच्चे के उपर से घड़ी की दिशा (दक्षिणावर्त/Clockwise) में उतार कर बहते हुये जल में प्रवाहित कर दें या किसी विरान जगह में फैक दें।
- यदि किसी के कार्य या व्यवसायीक स्थान पर बार-बार किसी की नज़र लग गई हो तो काली हल्दी को काले कपड़े में बांधकर दोनों हाथों से पूरे कार्य स्थल के भितर सात बार घूमाकर बहते हुये जल में प्रवाहित कर दें या किसी विरान जगह में फैक दें।
- नज़र रक्षा के लिए काली हल्दी पर मौली लपेट कर पीले कपड़े में बांधकर अपने व्यवसायीक स्थान के मुख्य द्वार पर लटका दें। इस प्रयोग से नज़र से रक्षा होगी एवं धन की वृद्धि भी होती रहेगी।

ग्रह शांति प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में गुरू और शनि दोनो पीड़ित हो, तो ग्रह शांति हेतु किसी शुक्लपक्ष के प्रथम गुरूवार से नियमित रूप से काली हल्दी को चंदन की तरह घीस कर तिलक लगाने से यह प्रयोग दोनों पीड़ित ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं।

धन संचय हेतु प्रयोग

कुछ लोगों की आमदनी उत्तम होने के उपरांत भी धन संचय नहीं कर पाते। उन्हें किसी भी शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार को एक चांदी की डिब्बी में काली हल्दी, नागकेशर व लाल रंग का सिन्दूर को साथ में मिलाकर मां लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र के चरणों से

स्पर्श करवा कर धन रखने के स्थान पर रख दें। इस प्रयोग के प्रभाव से धन संचय होने लगता हैं।

*चांदी की डिब्बी उपलब्ध न हो तो स्टील या प्लास्टिक की डिब्बी का प्रयोग करें। डिब्बी को स्थापित करने हेतु शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार के अलावा अक्षय तृतीया, धनत्रयोदशी, दीपावली का मुहूर्त भी शुभ होता हैं।)

मशीनों को खराबी से बचाने हेतु प्रयोग

यदि व्यवसाय या उद्योग में मशीनों में बार-बार खराबी होती रहती हों, तो कालीहल्दी को चंदन की तरह केशर व गंगा जल मिलाकर घीस कर शुक्लपक्ष के प्रथम बुधवार को मशीन पर स्वास्तिक बना दें। इस प्रयोग से से मशीन बार-बार खराब नहीं होती।

मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति हेतु प्रयोग

दीपावली के दिन काली हल्दी और एक चांदी का सिक्का पीले वस्त्रों में लपेट कर उसे धन रखने के स्थान पर रख दें। इस प्रयोग को अगली दिपावली पर पुनः इसी प्रकार करें इस प्रयोग से वर्ष भर मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।

असली नकली की परख

यह काली हल्दी का रंग जब यह हरी होती हैं तब अंदर से हल्के नीले रंग की होती हैं वह सुख ने पर अंदर से गहरे कत्थई या काले रंग की हो जाती हैं। लेकिन असली काली हल्दी पूर्णतः काजल के समान काली नहीं होती, बाजारों में एकदम काजल के समान काली हल्दी मिल जाती हैं, जिसे काले रंग की स्याही या रंग आदि से रंग में डूबा कर तैयार किया जाता हैं। इस प्रकार की हल्दी को प्रायः तेल में भिगो कर कुमकुम सिंदूर आदि से लेप कर बेचा जाता हैं जिससे उसकी नकली होने की बात साधरण व्यक्ति को आसानी से नहीं चलती। लेकिन इस में कपूर से मिलती झुलती सुगन्ध नहीं होती।

असली काली हल्दी की सुगन्ध कपूर से मिलती-झुलती होती हैं यही असली काली हल्दी की पहचान हैं। असली काली हल्दी अंदर से ही गहरे रंग की या काले रंग की होती हैं उपर से नहीं उसका उपर का हिस्सा अदरख के उपरी हिस्से के समान कत्थई रंग से मिलता झुलता होता हैं।

तंत्र विद्या के जानकारों का मत हैं की किसी भी तंत्र प्रयोग को करने पर उससे प्राप्त होने वाले फल केवल प्रयोग कर्ता के आत्मविश्वास और श्रद्धा पर ही निर्भर करते हैं। तंत्र प्रयोग में किसी भी प्रकार की शंका अथवा संदेह होने पर तंत्र के प्रयोग नहीं करने चाहिए। शंका व संदेह भाव से किये गये प्रयोगों का फल नगण्य या प्राप्त नहीं होता हैं।

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

यंत्र द्वारा वास्तु दोष निवारण

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर भवन के निर्माण से उसमें शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के तत्त्व व्याप्त होते हैं। केवल शुभ तत्त्व हो या केवल अशुभ तत्त्व हो यह संभव नहीं हैं। दोनों तत्त्वों का मिश्रीत प्रभाव उस भवन पर होता हैं।

उसमें फर्क इतना ही होता हैं की कहीं शुभ तत्त्व की अधिक होती हैं तो कहीं अशुभ तत्त्व की अधिकता रहती हैं। इस लिए कोई भी भवन नातो पूर्ण रुप से शुभ तत्त्व से युक्त हो ता हैं नाहीं अशुभ तत्त्व से युक्त होता हैं।

शुभ तत्त्व की अधिकता से उसे शुभ संकेत समझा जाता हैं एवं अशुभ तत्त्व की अधिकता को दोष के रुप में जाना जाता हैं। अशुभ तत्त्व की अधिकता से ही वास्तु दोष उत्पन्न होता हैं।

इस लिए वास्तु यन्त्र एवं अन्य उपायों का सहायता से भवन के शुभ तत्त्वों की वृद्धि एवं अशुभ तत्त्वों अर्थात दोषों को कम किया जा सकता हैं।

वास्तु दोष दूर करने के उपाय यदि भवन में संबंधित दिशा में वास्तु दोष हो तो उस दिशा में वास्तु यंत्र लगाना चाहिए।

घर में वास्तु दोषनाशक यंत्र को विधि-विधान से स्थापित करना चाहिए।

गणेश प्रतिमा

मुख्य द्वार के उपरी हिस्से में अंदर-बाहर मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र, कनक धारा यंत्र और दक्षिणावर्ती स्फटिक गणेश जी (दाहिनी सूंढ) को स्थापित करने से उस भवन के द्वार दोष और वास्तु दोष दूर होते हैं।

भवन के मुख्य द्वार के उपर मध्य भाग में श्रीगणेश की प्रतिमा परशु और अंकुश लिए बुद्धिमत्ता और समृद्धि के दाता के रुप में शुभदाय है। मुख्य द्वार पर बैठे हुए गणेशजी की प्रतिमा द्वार के उपर शुभ मानी जाती है।

भगवान गणेश हमारे जीवन की सफलता के प्रतीक है। गणेश जी का विशाल उदर में पूरा ब्रह्मांड विद्यमान है। गणेशजी की सूंड विघ्नों को दूर करने के लिए मुड़ी हुई रहती है। हमारी संस्कृति में किसी भी शुभ कार्यों को प्रारंभ करने से पहले इनका प्रथम स्मरण करने का विधान हैं।

श्रीयंत्र

भवन के सभी प्रकार के दोष दूर करने के लिए मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित स्पफटिक श्रीयंत्र की स्थापना करने से एवं उसका प्रतिदिन पूजन-अर्चन करनी चाहिए।

मांगलिक चिह्न

भवन के मुख्य द्वार पर ॐ, स्वस्तिक शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि आदि मंगलदायक प्रतिक चिह्न लगाने चाहिए। भवन के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन गंगाजल का छिड़काव घर में करना चाहिए।

नवग्रह शांति यंत्र

नवग्रह ग्रहों के यंत्रों को उनकी संबंधित दिशाओं में इस प्रकार से लगाने चाहिए जहां ये आसानी से दिखाई देते हो। नवग्रह शांति यंत्र के पूजन एवं स्थापना से भी वास्तुदोषों का शमन होता है। उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य या ब्रहम स्थान में जहां भी वास्तु दोष हो उस दिशा में संबंधित देव का यंत्र स्थपित करे या उसे पूजा स्थान में स्थपित करे।

- भवन के उत्तर में बृहस्पति, कुबेर या वरुण यंत्र लगाना चाहिए।

- घर के आग्नेय कोण में वास्तु दोष हो तो आग्नेय कोण में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित चंद्र यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- यदि भवन में निवास करने वाले सदस्यों को मन नहीं लगने, इन्पफेक्शन, अंतड़ियों की समस्या, भय, आर्थिक हानि आदि समस्या ये रहती हो तो भवन का नैऋत्य कोण में दोष होता हैं। एसी स्थिती में भवन के नैऋत्य कोण में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित राहु यंत्र और मृत्यंजय यंत्र को स्थापित करना चाहिए। नैऋत्य कोण में 7 इंच का गड्ढा खोदकर उसमें सवा 5 से 7 रत्ती का अभिमंत्रित गोमेद दबा देना चाहिए।
- यदि भवन के दक्षिण भाग में दोष हो तो प्रायः समय उस भवन में निवासकर्ता चिंता-तनाव आदि से ग्रस्त रहते हैं। मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित त्रिकोण मंगल यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- यदि भवन के वायव्य कोण में दोष हो तो प्रायः निवास कर्ता को कार्य क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित केतु यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- यदि भवन के पश्चिम भाग में दोष हो तो मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शनि यंत्र को स्थापित करना चाहिए। भवन के मुख्य द्वार पर घोड़े की नाल को U आकार में लगाना चाहिए। उल्टा लगाने से विपरित परिणामों से सम्मुखिन होना पड़ता हैं।
- यदि भवन पूर्व भाग में दोष हो तो मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित सूर्य यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- भवन के ईशान कोण में दोष हो तो वास्तुदोषों को दूर करने हेतु मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित बृहस्पति यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- इससे इन दोनों दिशाओं जनित वास्तुदोष दूर होते हैं।
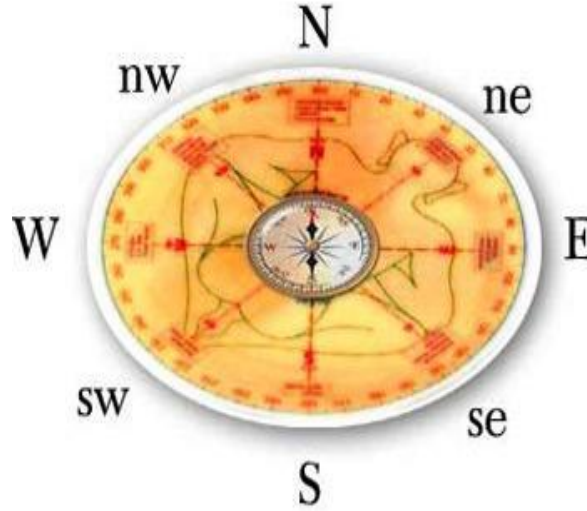
***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

हस्त रेखा एवं रोग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

व्यक्ति कि हथेली में विभिन्न प्रकार कि रेखाऎ, पर्वत एवं उन पर उभर कर आने वाले तरह तरह के चिह्न के बदलाव से व्यक्ति को होने वाली बीमारियों का अंदाजा लगाया जासकता हैं। हर ग्रह के कुछ निश्चित चिह्न होते हैं। इन चिह्नो का प्रभाव हथेली में ग्रह के पर्वत पर होंने के अनुरुप शुभ-अशुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।

जानिए हस्त रेखा से विभिन्न रोग के संकेत

* हमे शक्ति प्रदान करने वाली सूर्य रेखा एवं स्वास्थ्य रेखा सूर्य पवर्त के समीप पाई जाती हैं।
* यदि हथेली में शनि एवं सूर्य का संबंध हो जाए तो व्यक्ति कब्ज से पीडा होती हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा कमजोर होती हैं एवं भाग्य रेखा एकदम स्पष्ट हो, आयु रेखा से जुडी हुई कोई रेखा कनिष्ठिका के तीसरे पर्व तक जाती हो, या मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो, या उभरे हुए चंद्र पर्वत पर झंडे का चिह्न हो तो व्यक्ति बदहजमी, अपच, गैस इत्यादि रोग से पीड़ित होता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में गोल घेरे का ग्रहों के पर्वतों पर होना शुभ माना गया हैं, लेकिन गोल घेरे का रेखाओं पर होना अत्यंत अशुभ माना गया हैं। यदि गोल घेरे का हृदय रेखा पर होने से व्यक्ति को आंखो कि समस्या हो सकती हैं। मंगल पर्वत पर गोल घेरा होने से भी नेत्र संबंधित पीडा होती देखी गई हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत पर या आयु रेखा के अंत में क्रॉस या जालीदार रेखा का होना व्यक्ति को असाध्य रोग होने का संकेत देती हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ्य रेखा टूटी फूटी हो, या हृदय रेखा और मस्तक रेखा एक दूसरे समीप आ गई हो तो व्यक्ति को श्वास रोग होने की आशंका अधिक रहती हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा, हृदय रेखा और मस्तक रेखा के अंत में जालीदार रेखाएं हों या पर्वतों पर जालीदार रेखाएं हों, क्रॉस का चिह्न हो, हथेली पर काले या नीले रंग के धब्बे या बिंदु हों, नाखून गहरे नीले रंग के हों, नाखून टूटने वाले हों या अस्वाभाविक आकर के हों, या अंगुलियां मुड़ी हुई हों, या हथेली कि त्वचा नरम हो, हाथ हमेशा भीगा हुआ सा रहता हों, तो व्यक्ति जीवन भर किसी न किसी रोग से पीडित होकर अस्वस्थ रहता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा, हृदय रेखा और मस्तक रेखा तीनों एक जगह मिली हुई हो, या अंगुलियों के नाखूनों में खड़ी रेखाए हो, या नखून किनारों से टूटे हुए हों, नाखूनों के मूल पर चन्द्रमा काले रंगके हो या विलुप्त होगये हो, या शनि पर्वत पर जालीदार चिह्न का होना, व्यक्ति को गठिया रोग होने का संकेत देता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा पर क्रॉस होना किसी दुर्घटना ग्रस्त होने का संकेत होता हैं।
* आयु रेखा के अंत में काला धब्बा होना गंभीर चोट लगने का सूचक हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा पर काला बिंदु हो तो यह किसी बड़े रोग की सूचना देता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा अंत में दो मुखी हो जाए तो, व्यक्ति को मधुमेह होने का संकेत होता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा चौड़ी हो, या उसका रंग पीला हो, या जंजीरनुमा हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य हर समय
खराब रहता हैं।
* आयु रेखा का अचानक टूट जाना व्यक्ति की किसी बीमारी के कारभ अचनाक मृत्यु का संकेत माना गया हैं।

हस्त रेखा से जाने रोग

* हृदय रेख पर काला बिंदु होना, या आयु रेखा पर नीला धब्बा हो, या हाथ में स्वास्थ्य रेखाटूटी-फूटी हो, या मस्तक रेखा के मध्य में काला धब्बा हो तो व्यक्ति को ज्वर से पीड़ा होती हैं।
* यदि चंद्र पर्वत पर गहरी धारियां हों, या मस्तक रेखा धुमावदार या टूटी हुई हो, या मस्तक रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो, या मस्तक रेखा का शनि पर्वत के निकट अंत होती हों, तो व्यक्ति की मानसिक बीमारी से ग्रसित होता हैं।
* मस्तक रेखा शनि पर्वत के नीचे टूट कर खत्म होती हो, चंद्र पर्वत पर टेढी-मेढी रेखाए हों, हृदय रेखा जंजीर के समान हों कर अस्पष्ट हो, तो व्यक्ति को पथरी रोग होने कि संभावना रहती हैं।
* यदि हथेली कि रेखाएं पीली हो, या गुरु पर्वत अधिक उन्नत हुआ हो, या नख लंबे एवं काले हो,मस्तक रेखा और शनि पर्वत के नीचे कि रेखा जंजीरनुमा हो, तीनों मुख्य रेखाओं को कोई रेखा काट रही हो, तो व्यक्ति को क्षय रोग एवं फेफड़ों से संबंधित रोग हो जाता हैं।
* शनि पर्वत पर जाली हो, या कोई रेखा आयु रेखा एवं मस्तक रेखा को काटकर जाली को छुती हो, या चंद्रमा पर्वत पर क्रॉस हो, चंद्रमा पर्वत पर अस्त-व्यस्त रेखाएं हों, स्वास्थ्य रेख धुमती हुइ शुक्र पर्वत से जुडती हुइ कोई रेखा आयु रेखा को काटकर मस्तक रेखा को काटती हुई हृदय रेखा से मिलती हो, तो व्यक्ति मधुमेह से पीड़ित रहता हैं।
* यदि हथेली अधिक पतली एवं लंबी हो, अंगुलियां भी अधिक लचीली हो, या हथेली से थोडि बड़ी हो, या मस्तक रेखा तथा हृदय रेखा के बीच में अधिक अंतर हो, ग्रह पर्वतों की मुडने वाली ऊर्ध्वागामी रेखाएं अधिक हो, तो व्यक्ति मस्तक ज्वर से पीड़ित होता हैं।
* यदि चंद्र पर्वत काफी उन्नत हो चंद्र पर्वत के नीचे का भाग पर काफी रेखाएं हों, आयु रेखा को छुती हुई कोई रेखा चंद्र पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति व्यक्ति को मूत्र संबंधी बीमारियां पीड़ित करती हैं।

हस्त रेखा से लकवा से पीड़ित होने के लक्षण?

* यदि दोनों हाथों में शनि पर्वत पर नक्षत्र जेसा चिह्न हों।
* चंद्र पर्वत पर जालीदार रेखाएं हों।
* नखों की आकार त्रिकोण जेसा प्रतित होरहा हों।
* शनि पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हों।
* दोनों हाथों में आयु रेखा के अंत में नक्षत्र जेसा चिह्न या भाग्य रेखा के अंत में शनि पर्वत पर नक्षत्र जेसा चिह्न हों।
* मस्तक रेखा में से कोई रेखा निकलकर शनि पर्वत तक जाती हों या वहां तीन शाखा वाली रेखा हों।
* या तीन टुकड़ों में शुक्र मुद्रा हों। मस्तक रेखा में शनि या सूर्य पर्वत के नीचे यव का चिह्न हों।
* नाखून टुकडो में बटे हुवे दिखाई देतो हों।

उपरोक्त लक्षण में से यदि एक भी लक्षण व्यक्ति के हाथ में दिखाई दे, तो व्यक्ति को लकवा रोग पीड़ित होने कि संभावनाएं अधिक होजाती हैं।

नोट: उपरोक्त सभी वर्णन पूर्णतः सिद्धान्तों पर आधारित हैं। उपरोक्त लक्षण यदि व्यक्ति कि हथेली में हो, तो उसके सूक्ष्म परीक्षण से व्यक्ति के शरीर में पीड़ा देने वाली परेशानी या भविष्य में होने वाली बीमारी का पता लगाया जा सकता हैं। इस परीक्षण कि सार्थकरा परीक्षण करने वाले के विद्वान के ज्ञान एवं अनुभव पर निर्भर करता हैं।

स्वप्न से रोग एवं मृत्यु के संकेत

संकलन गुरुत्व कार्यालय

स्वप्ने मद्यं सह प्रेतैर्यः पिबन् कृष्यते शुना।
स मर्त्यो मृत्युना शीघ्रं ज्वररूपेण नीयते ॥४०॥
रक्तमाल्यवपुर्वस्त्रो यो हसन् ह्रियते स्त्रिया।
सोऽस्रपित्तेन महिषश्ववराहोष्ट्रगर्दभैः ॥४१॥
यः प्रयाति दिशं याम्यां मरणं तस्य यक्ष्मणा।
लता कण्टकिनी वंशस्तालो वा हृदि जायते ॥४२॥
यस्य तस्याशु गुल्मेन यस्य वह्निमनर्चिषम्।
जुह्वतो घृतसिक्तस्य नग्नस्योरसि जायते ॥४३॥
पद्मं स नश्येत्कुष्ठेन चण्डालैः सह यः पिबेत् ।
स्नेहं बहुविधं स्वप्ने स प्रमेहेण नश्यति॥४४॥
उन्मादेन जले मज्जेद्यो नृत्यन् राक्षसैः सह ।
अपस्मारेण यो मर्त्यो नृत्यन् प्रेतेन नीयते ॥४५॥
यानं खरोष्ट्रमार्जारकपिशार्दूलसूकरैः ।
यस्य प्रेतैः श्रृगालैर्वा स मृत्योर्वर्तते मुखे ॥४६॥।
अपूपशष्कुलीर्जग्ध्वा विबुद्धस्तद्विधं वमन् ।
न जीवत्यक्षिरोगाय सूर्येन्दुग्रहणेक्षणम् ॥
सूर्याचन्द्रमसोः पातदर्शनं दृग्विनाशनम्।

अर्थात: जो रोगी स्वप्न में प्रेतों के साथ बैठ कर मद्य पीता हैं और कुत्तों द्वारा खींचा-घसीटा जाता हैं उसकी मृत्यु ज्वर से होती हैं। जो व्यक्ति लाल रंग के फूलों की माला धारण किये हैं, अपने शरीर को लाल रंग से रंगा देखता हैं, लाल वस्त्र धारण किये हैं, हँसता हैं और स्त्री द्वारा खींचा जाता हैं उसकी रक्तपित्त द्वारा मृत्यु हो जाती हैं। जो व्यक्ति भैसा, कुत्ता, सूअर, ऊँट या गझ पर सवार हो कर दक्षिण दिशा को जाता हैं उसकी राज्यसभा से मृत्यु होजाती हैं। जिसके हृदय प्रदेश पर काण्डो वाली लता-वेल, बाँस अथवा ताड़ उत्पन्न होते दिखाई दे तो उसकी गुल्मरोग से मृत्यु हो जाती हैं। जो ज्वाला रहित अग्नि में आहुतियाँ डालता हैं, नंगा हो कर शरीर पर घृत (घी) का सेवन करता हैं और उसके शीने पर कमल उगता दिखे तो उसकी कुष्ठ से मृत्यु हो जाती हैं। जो चाण्डालों के साथ बैठ कर घृत (घी) तैल आदि अनेक प्रकार के द्रव्यों का पान करता हैं उसकी प्रमेह से मृत्यु हो जाती हैं। जो राक्षसों के साथ नाचता हुवा जल में डूब जाता हैं या डूबकी लगाता हैं उसकी उन्माद से मृत्यु हो जाती हैं। जो नाचता हुवा भूत-प्रेत द्वारा खींचा या घसीटा जाता हैं उसकी अपस्मार (मिर्गी) द्वारा मृत्यु हो जाती हैं।

जो रोगी-गधा, ऊँट, बिल्ली, बन्दर, शादूल तथा सूअर के साथ अथवा प्रेतों या सियारों के साथ चलता हैं या उन पर सवार हो कर चलता हैं उसकी मृत्यु हो जाती हैं। जो स्वप्न में मालपूआ- रोटी अथवा कचौरी खाता हैं और जागने पर वैसे ही वमन कर देता हैं वह जीवित नहीं रहता । स्वप्न में सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण देखना नेत्ररोगों का कारण और उसका पतन होते देखना दृष्टिनाश अर्थात अन्धेपन का कारण होता हैं।

मूर्ध्नि वंशलतादीनां सम्भवो वयसां तथा ॥४८॥
निलयो मुण्डता काक-गृध्राद्यैः परिवारणम् ।
तथा प्रेतपिशाचस्त्रीद्रविडाऽन्ध्रगवाशनैः ॥४९॥
सङ्गो वेत्रलतावंशतृणकण्टकसंकटे ।
श्वभ्रश्मशानशयनं पतनं पांसुभस्मनोः ॥५०॥
मज्जनं जलपङ्कादौ शीघ्रेण स्रोतसा हृतिः ।
नृत्यवादित्रगीतानि रक्तस्रग्वस्त्रधारणम् ॥५१॥
वयोङ्गवृद्धिरभ्यङ्गो विवाहः श्मश्रुकर्म च ।
पक्वान्नस्नेहमद्याशः प्रच्छर्दनविरेचने ॥५२॥
हिरण्यलोहयोर्लाभः कलिर्बन्धपराजयौ ।
उपानद्युगनाशश्च प्रपात पादचर्मणोः ॥५३॥
हर्षो भृशं प्रकुपितैः पितृभिश्चावभर्त्सनम् ।
प्रदीपग्रहनक्षत्र दन्तदैवतचक्षुषाम् ॥५४॥
पतनं वा विनाशो वा भेदनं पर्वतस्य च ।

कानने रक्तकुसुमे पापकर्मनिवेशने ॥५५॥
चितान्धकारसंबाधे जनन्यां च प्रवेशनम् ।
पातः प्रासादशैलादेर्मत्स्येन ग्रसनं तथा ॥५६॥
काषायिणामसौम्यानां नग्नानां दण्डधारिणाम् ।
रक्ताक्षाणां च कृष्णानां दर्शनं जातु नेष्यते ॥५७॥

अर्थात: जो स्वप्न में शिर पर बांस, लता एवं झाड़ियों को उगते देखना या पक्षियों का बैठना या घोंसला बनाना, अथवा शिर का मुण्डन या कौवा एवं गिद्ध आदि पक्षियों से घिर जाना तथा प्रेतों, पिचाशों, स्त्रीयों, किसी प्रदेश के निवासियों, अथवा गोमांस भक्षको द्वारा घिर जाना, वेतों के, लताओं के, बाँसों की, तृणों के तथा कांटों की झाड़ीयों में फस जाते देखना या गढ्ढा एवं श्मशान में सोना, धूलि तथा भस्म में गिरना, जय अथवा कीचड़ में डूबना या डुबकी लगाना, तेजधार वाली नदी-नाले में बह जाना, नाचना, बजाना तथा गाना, लाल फूलों की माला तथा वस्त्रों का धारण, उम्रको बढ़ते देखना, तथा अंगों की वृद्धि, अभ्यङ्ग, विवाह, क्षौर कर्म (बाल तथा दाढ़ी बनाना), पक्वान्न भक्षण, स्नेह पान, मद्य पान, वमन, बिरेचन क्रिया, सोना अथवा लोह मिलना, कलह, बँध जाना, पराजित होना, दोनो जूतों का खोना, पाँव की चमड़ी गिरते देखना, अधिक हर्ष, प्रकुपित पित्तरों द्वारा भिड़का जाना और दीपक, सूर्य आदि ग्रह, अश्विनी आदि नक्षत्र या तारे, दन्त, देव प्रतिमा तथा नेत्र का गिरना अथवा विनाश, पर्वत का फटना और वन में, लाल पुष्प में, पापीयों की घर में, अन्धकार में, भीड़ में, संकत में अथवा माता के गर्भ में प्रवेश, छत, वृक्ष या पर्वत आदि से गिरना, मछली द्वारा निगल जाना, और कषाय वस्त्र, धारियों का क्रूरों का, नग्नों का, दण्ड धारियों का, लाल आँख वालों का तथा काले वर्ण के लोगों का दिखना किसी भी दशा में शुभ नहीं हैं (अर्थात स्वस्थ्य या रोगी के लिए यह हानि कारक हैं।)

मृत्यु सूचक स्वप्न

कृष्णा पापाऽननाचारा दीर्घकेशनखस्तनी ।
विरागमाल्यवसना स्वप्ने कालनिशा मता ॥५८॥

अर्थात: स्वप्न में काले वर्ण वालीं, दुर्मुखी, दुराचारिणी, लम्बे केशों, नखों तथा स्तनों वाली, विकृत वर्ण वाली, माला तथा विकृत वर्ण वाले वस्त्रों वाली स्त्री का दिखना काल रात्रि के समान माना जाता हैं।

दुःस्वप्न का कारण

मनोवहानां पूर्णत्वात्स्रोतसां प्रबलैर्मलैः ।
दृश्यन्ते दारुणाः स्वप्ना रोगी यैर्याति पञ्चताम् ॥५९॥
अरोगः संशयं प्राप्य कश्चिदेव विमुच्यते ।

अर्थात: अत्यन्त प्रकुपित वातादि दोषों द्वारा मनोवाही स्त्रोत भर जाने से उक्त प्रकार के भयानक भीष्ण स्वप्न दिखते हैं, जिसके कारण रोगी की मृत्यु हो जाती हैं और स्वस्थ्य व्यक्ति भी रोगी हो जाता हैं तथा कुछ ही रोग मुक्त हो पाते हैं।

महर्षि चरक ने स्वप्न के लक्षण इस प्रकार बताये हैं।

नाति प्रसुप्तः पुरुषः सफलान अफलान अपि।
इन्द्रियेशेन मनसा स्वप्नान पश्यत्यनेकधा॥

अर्थात: जब मानुष्य गहरी निद्रा में नहीं होता तथा दशों इन्द्रियों के ईश्वरिय प्रेरक मन द्वारा वह अनेक प्रकार के स्वप्न देखता हैं। कभी श्रवण इन्द्रि से सुनता, चक्षुरिन्द्रिय से देखता हैं, त्वगिन्द्रिय से स्पर्श का अनुभव करता हैं, रसनेन्द्रिय से रस का और घ्रौणेन्द्रिय से गन्ध का अनुभव करता हैं। वागिन्द्रिय से बोलता हैं-हस्तेन्द्रिय से पकड़ता हैं, शुदेन्द्रिय से पुरिष (एवं मूत्र का) त्याग करता हैं, उपस्थेन्द्रिय (शिश्न एवं भग) से शुक्र (वीर्य) का त्याग कर्ता हैं, इसी को स्वप्नदोष कहा जाता हैं, जिसमें शुक्र स्राव का स्खलन होता हैं, और पादेन्द्रिय से चलता हैं इस प्रकार दस इन्द्रिय के स्वप्न दोष होते हैं और मनसू नामक इन्द्रिय से सुख-दुःख का अनुभव होता हैं यथा स्वप्न में डर लगता हैं, क्रोध एवं

शोक आदि का अनुभव होता हैं। यह 11 प्रकार के स्वप्नदोष हैं लेकिन अधिकतर उपस्थ का स्वप्नदोष अधिक होता हैं। वह भी युवावस्था में रात्रि भोजन में शुक्र वर्द्धक मलाई एवं दुग्ध आदि के सेवन से अथवा तीव्र मैथुनाभिलाष से।

नोटः जानकारों का मानना हैं की स्वप्नदोष पुरुष एवं स्त्री दोनो को होता हैं और ऋतुस्नाता स्त्री को तो कभी-कभी गर्भधान भी हो जाता हैं, फिर चाहे वह अस्थि आदि पैतृक गुणों से हीन होता हैं। शय्यामूत्र जो अधिकतर बालक-बालिकाओं को होता हैं और स्वप्नदोष जो युवक-युवतियों को होता हैं वह सब स्वप्न के दोष है।

देवान् द्विजान् गोवृषभान् जीवतः सुहृदो नृपान्।
साधून् यशस्विनो वह्निमिद्धं स्वच्छान् जलाशयान्॥
कन्याः कुमारकान् गौरान् शूक्लवस्त्रान्सुतेजसः ।
नराशनं दीप्ततनुं समन्ताद्रुधिरोक्षितम् ॥
यः पश्येल्लभते यो वा छत्रादर्शविषामिषम् ।
शुक्लाः सुमनसो वस्त्रममेध्यालेपनं फलम् ॥
शैलप्रासादसफलवृक्षसिंहनरद्विपान् ।
आरोहेद्गोऽश्वयानं च तरेन्नदह्रदोदधीन् ॥
पूर्वोत्तरेण गमनमगम्यागमनं मृतम् ।
संबाधान्निःसृतिर्देवैः पितृभिश्चाभिनन्दनम् ॥
रोदनं पतितोत्थानं द्विषतां चावमर्दनम् ।
यस्य स्यादायुरारोग्यं वित्तं बहु च सोऽश्नुते ॥

अर्थात: स्वप्न में जो देवताओं, द्विजों (ब्राहमण), साँढों, जीवित मित्रों, राजाओं, सज्जनों, यशस्वियों, इन्धन युक्त अग्नि, निर्मल जल के जलाशय, कन्या, बालक, गौर वर्ण वालों, श्वेत वस्त्र वालों, तेजस्वियों अथवा देदीप्यमान शरीर वाले रक्त से सिन्चित शरीरवाले राक्षस को देखता हैं और जो छत्र, दर्पण, विष, मांस, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, अपवित्र (पुरीष अर्थात मलमूत्र इत्यादी) पदार्थ के लेपन को अथवा आम्र आदि फलों को प्राप्त करता हैं, और जो पर्वत, भवन, फलवाले वृक्ष, सिंह, मानव की पीठ, हाथी अथवा गाय-बैल की तथा घोड़ा गाड़ी पर चढ़ता हैं, जो नदी, झील, तथा समुद्रको तैर कर पार करता हैं, जो पूर्वोत्तर की और जाता हैं (अर्थात पूर्वोत्तर की यात्रा करता हैं), अगम्य नारी से सहवास करता हैं, जो मृति-मरण को देखता हैं, भीड़ संकट में से निकल जाता हैं, जिसका देवताओं एवं पित्तरों द्वारा अभिनन्दन होता हैं, जो रोता हैं, जो गिर कर उठ खड़ा होता हैं तथा जो शत्रुओं का मर्दन करता हैं वह आयु को, आरोग्य को तथा अधिक मात्रा में धन को प्राप्त करता हैं।

***

स्वप्न की अशुभता निवारण हेतु सरल उपाय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अशुभ स्वप्नों के विषय में ग्रंथों में उल्लेख हैं

याति पापोऽल्पफलतां दानहोमजपादिभिः ।
अकल्याणमपि स्वप्नं दृष्ट्वा तत्रैव यः पुनः ॥
पश्येत्सौम्यं शुभं तस्य शुभमेव फलं भवेत् ।

अर्थात: पाप -अशुभ स्वप्न का अशुभ फल विधि पूर्वक दान, हवन तथा जप आदि करने से स्वल्प हो जाता हैं। अशुभ स्वप्न को देख कर जो पुनः सो जाता हैं और उसमें शुभ स्वप्न देखता हैं अथवा सुख दायक स्वप्न देखता हैं उसका फल शुभ होता हैं। और शुभ स्वप्न को देख कर पुनः अशुभ स्वप्न देखता हैं उसका फल अशुभ होता हैं।

स्वप्न की अशुभता निवारण के उपाय

- जो स्वप्न डरावने, अप्रिय, अशुभता सूचक, जिससे व्यक्ति निद्रा से उठ जाता हैं, एसे स्वप्न दिखने पर निंद खुलने पर किसी को नहीं बताने चाहिए।
- यदि किसी को एसे स्वप्न आते हैं तो व्यक्ति को अपने इष्ट को प्राथना करके पुनः सो जाना चाहिए।
- यदि किसी व्यक्ति को एसे स्वप्न आते हैं और यदि प्रातः उसे सर्वप्रथम गाय, मोर, देवालय, सौभाग्यवती स्त्री, भगवाने में श्रद्धा रखने वाले सात्विक व्यक्ति आदि शुभ शुकन वाले जीव या पदार्थ के दर्शन से स्वप्न की अशुभता समाप्त हो जाती हैं।
- यदि किसी कारण से उक्त साधनों की व्यवस्था या दर्शन संभव न हो सके तो, अशुभ स्वप्न में देखे हुए दृश्य को शौचालय में दोहाराना देना चाहिए इससे उसकी अनिष्टता नष्ट हो जाती हैं।
- यदि किसी व्यक्ति को अशुभ स्वप्न के कारण अधिक भय या उसकी अशुभता की चिंता सता रही हो तो व्यक्ति को प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो कर किसी जानकार या विद्वान से सलाह प्राप्त कर उसकी शांति के लिए हवन करना चाहिए। सुपात्र व्यक्ति को यथा शक्ति दान देकर इश्वर से अशुभता दूर करने हेतु प्राथना करनी चाहिए।

शुभ स्वप्न की शुभता में वृद्धि के लिए शास्त्रं में उल्लेख हैं

- यदि किसी व्यक्ति को शुभ, चित्त को प्रसन्न करने वाले, सुख-सौभाग्य के संकेत देने वाले स्वप्न दिखाई दे तो उस स्वप्न को गुप्त रखना चाहिए। स्वप्न की गोपनीयता में उसकी शुभता छिपी होती हैं। किसी को इन स्वप्न के बारें में बतादेने से स्वप्न की शुभता में कमी आति हैं ओर संभवत स्वप्न निष्फल भी हो सकता हैं।
- यदि स्वप्न में शुभ संकेत दिखाई दे तो व्यक्ति को प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो कर धूप-दीप आदि से इष्ट की पूजा अर्चना करके अपने इष्टदेव से शुभ स्वप्न के फल शीघ्र प्राप्त हो इस लिए विशेष प्राथना करनी चाहिए।
- स्वप्न में दिखे शुभ संकेत दिखे तो व्यक्ति को प्रातः अपने गुरु का दर्शन कर आशिर्वाद प्राप्त कर लेने चाहिए हिए जिससे शीघ्र लाभ प्राप्त हो सके हैं।

धनप्राप्ति में बाधक हैं मकड़ी के जाले

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय
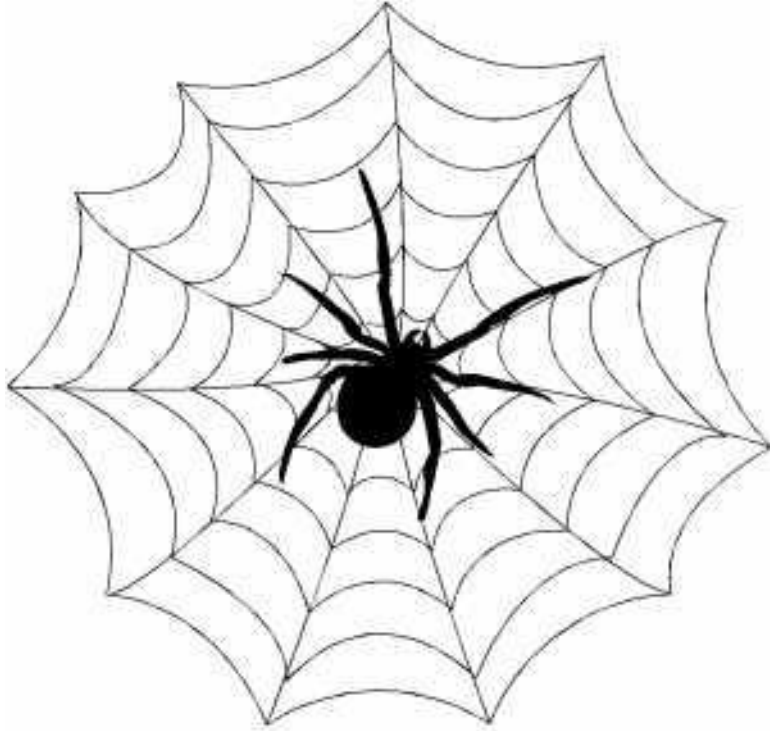
मकड़ी के जाले ज्यादातर घर, ओफिस, दुकान इत्यादि जगहो पर पाये जाते हैं, विद्वानो के मतानुशार वास्तुशास्त्र के अनुशार मकड़ी के जाले अशुभ होते हैं। मकड़ी के जाले से भवन में निवास कर्ता की आर्थिक उन्नति बाधित होती हैं, आर्थिक अभाव होने लगता हैं, स्वास्थ्य से संबंधी परेशानियां होने की संभावनाएं बढजाती हैं।

मकड़ी के जाले अशुभ क्यों माने जाते हैं?

वास्तु के अनुसार जिस भवन में मकड़ी के जाले होते हैं, ठीक नियमित साफ-सफाई नहीं होती, उस भवन में निवास या व्यवसाय करने वालो को धन की कमी बनी रहती हैं। मकड़ी के जाले की अशुभता के कारण व्यक्ति चाहे जितना धन कमा लें लेकिन बचत कर पाता, धन की कमी बनी रहती हैं। आय से व्यय अधिक होने लगते हैं। अनावश्यक खर्च बढजाते हैं, घर में रोग-बिमारी क्लेश इत्यादि घर कर जाते हैं शीघ्र समाप्त नहीं होते।

मकड़ी के जाले को दरिद्रता का प्रतीक माना जाता हैं। मकड़ी के जाले से घर की बरकत प्रभावित होती हैं। मकड़ी के जाले होते हैं वहां अलक्ष्मी निवास करती हैं धन की देवी महालक्ष्मी वहां निवास नहीं करती हैं। जिस घर में या भवन में नियमित साफ-सफाई होती रहती हैं उस घर में देवी लक्ष्मी की कृपा बरसती हैं, ऎसा शास्त्रोक्त विधान हैं।

अपने घर, दुकान, ओफिस इत्यादी में साफ-सफाई के उपरांत यदि मकड़ी के जाले लटकते हैं, तो जाले को देखते ही उसे उन्हें तुरंत निकाल दें।

मकड़ी के जाले निकलते ही धन का आगमन होगा और अनावस्यक खर्च कम होंगे और धन का संचय होने लगेगा। विद्वानो के मतानुशार मकड़ी के जाले स्वास्थ्य के लिए भी नुक्शानकारी होते हैं। इसी लिए मकड़ी के जाले भवन में नहीं रहने देना चाहिए।

मानाजाता हैं मकड़ी के जाले बुरी शक्तियों को अपनी और आकर्षित करते हैं, घर में सकारात्मक उर्जा खत्म होती हैं और नकारात्मक उर्जा का प्रभाव बढने लगता हैं। जिससे घर के सदस्यों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगता हैं। इस लिये भवन से मकड़ी के जाले दिखते ही हटा देने चाहिए।

नोट: हर शनिवार, अमावस्या को घरकी साफ-सफाई करना अधिक लाभप्रद होता हैं। इस दिन घर से पूराना कबाड़-भंगार(अनावश्यक चिज-वस्तु) इत्यादी भी निकाल दें।

श्रावन मास में रुद्राक्ष धारण करना परम कल्याणकारी हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रुद्र के अक्ष से प्रकट होने के कारण रुद्राक्ष को साक्षात शिव का लिंगात्मक स्वरुप माना गया हैं। विद्वानो का कथ हैं की रुद्राक्ष में एक विशिष्ट प्रकार की दिव्य उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। प्रायः सभी ग्रंथकारों व विद्वानो ने रुद्राक्ष को असहय पापों को नाश करने वाला माना हैं।

इस लिए शिव माहा पुराण में उल्लेख किया गया हैं।

शिवप्रियतमो ज्ञेयो रुद्राक्षः परपावनः।
दर्शनात्स्पर्शनाज्जाप्यात्सर्वपापहरः स्मृतः॥

अर्थात: रुद्राक्ष अत्यंत पवित्र, शंकर भगवान का अति प्रिय हैं। उसके दर्शन, स्पर्श व जप द्वारा सर्व पापों का नाश होता हैं।

रुद्राक्ष धारणाने सर्व दुःखनाशः

अर्थात: रुद्राक्ष असंखय दुःखों का नाश करने वाला हैं।

रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से गोदा का फल प्राप्त होता हैं।

रुद्राक्ष के विषय में रुद्राक्ष जावालोपनिषद में स्वयं भगवान कालग्नी का कथन हैं:

तद्रुद्राक्षे वाग्विषये कृते दशगोप्रदानेन
यत्फलमवाप्नोति तत्फलमश्नुते ।
करेण स्पृष्ट्वा धारणमात्रेण द्विसहस्त्र
गोप्रदान फल भवति ।
कर्णयोर्धार्यमाणे एकादश सहस्त्र गोप्रदानफलं भवति ।
एकादश रुद्रत्वं च गच्छति ।
शिरसि धार्यमाणे कोटि ग्रोप्रदान फलं भवति ।

अर्थात: रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से दश गोदान (गाय का दान) का फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष का स्पर्श करने व धारण करने से दो हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। दोनो कानो पर रुद्राक्ष धारण करने से ग्यारा हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। गले में रुद्राक्ष धारण करने से करोडो गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं।

अलग-अलग रंगों के रुद्राक्ष में अलग-अलग प्रकार की शक्तियां निहित होती हैं। इस लिये रंगो के अनुसार रुद्राक्ष का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्चेति शिवाज्ञया ।
वृक्षा जाताः पृथिव्यां तु तज्जातीयोः शुभाक्षमः ।
श्वेतास्तु ब्राह्मण ज्ञेयाः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः ॥
पीताः वैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्रा उदाहृताः ॥

अन्य श्लोक में उल्लेख हैं:

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा जाता ममाज्ञया ॥
रुद्राक्षास्ते पृथिव्यां तु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः ॥
श्वेतरक्ताः पीतकृष्णा वर्णाज्ञेयाः क्रमाद्बुधैः ॥
स्वजातीयं नृभिर्धार्यं रुद्राक्षं वर्णतः क्रमात् ॥

श्वेत रंग: सफेद रंग वाले रुद्राक्ष में सात्त्विक उर्जायुक्त ब्रहम स्वरुप शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए ब्राह्मण को श्वेत वर्ण का रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रक्तवर्णीय (ताम्र के समान आभायुक्त) : रक्त रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी उर्जायुक्त शत्रुसंहारक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए क्षत्रिय को रक्तवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पीतवर्णीय (कांचन या पीली आभायुक्त) : पीले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी व तामसी दोनों प्रकार की संयुक्त उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए वैश्य को पीतवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

कृष्णवर्णीय: काले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में तामसी उर्जायुक्त सेवा व समर्पणात्मक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए शूद्र को कृष्णवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

यह शास्त्रों मे उल्लेखित विद्वान ऋषियों का निर्देश है कि मनुष्य को अपने वर्ण के अनुरूप श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए। विशेषकर

भगवान शिव के भक्तो के लिये तो रुद्राक्ष को धारण करना परम आश्यक हैं।

वर्णैस्तु तत्फलं धार्यं भुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः ॥
शिवभक्तैर्विशेषेण शिवयोः प्रीतये सदा ॥
सर्वाश्रमाणांवर्णानां स्त्रीशूद्राणां।
शिवाज्ञया धार्याः सदैव रुद्राक्षाः॥

सभी आश्रमों (ब्रहमचारी, वानप्रस्थ, गृहस्थ और संन्यासी) एवं वर्णों तथा स्त्री और शूद्र को सदैव रुद्राक्ष धारण करना चाहिये, यह शिवजी की आज्ञा है!

रुद्राक्ष को तीनों लोकों में पूजनीय हैं। रुद्राक्ष के स्पर्श से लक्ष गुणा तथा रुद्राक्ष की माला धारण करने से करोड़ गुना फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष की माला से मंत्र जप करने से अनंत कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

जिस प्रकार समस्त लोक में शिवजी वंदनीय एवं पूजनीय हैं उसी प्रकार रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति संसार में वंदन योग्य हैं।

रुद्राक्ष धारण फलम्

रुद्राक्षा यस्य गोत्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्।
स चाण्डालोऽपि सम्म्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत्॥

अर्थातः जिसके शरीर पर रुद्राक्ष हो और ललाट पर त्रिपुण्ड हो, वह चाण्डाल भी हो तो सब वर्णों में उत्तम पूजनीय हैं।

अभक्त हो या भक्त हो, नींच से नीच व्यक्ति भी यदी रुद्राक्ष को धारण करता हैं, तो वह समस्त पातको के मुक्त हो जाता हैं।

जो मनुष्य नियमानुशार सहस्त्ररुद्राक्ष धारण करता हैं उसे देवगण भी वंदन करते हैं।

उच्छिष्टो वा विकर्मो वा मुक्तो वा सर्वपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्पर्शनेन वै॥

अर्थातः जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं या बुरे कर्म करने वाल व अनेक प्रकार के पापों से युक्त वह मनुष्य रुद्राक्ष का स्पर्श करते ही समस्त पापों से छूट जाते हैं।

कण्ठे रुद्राक्षमादाय म्रियते यदि वा खरः।
सोऽपिरुद्रत्वमाप्नोति किं पुनर्भुवि मानवः।

अर्थातः कण्ठ में रुद्राक्ष को धारण कर यदि खर(गधा) भी मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो वह भी रुद्र तत्व को प्राप्त होता हैं, तो पृथ्वीलोक के जो मनुष्य हैं उनके बारे में तो कहना ही क्या! आर्थात् सर्व सांसारिक मनुष्यों को स्वर्ग-प्राप्ति व लोक परलोक सुधारने के लिए रुद्राक्ष अवश्य धारण करने योग्य हैं।

रुद्राक्षं मस्तके धृत्वा शिरः स्नानं करोति यः।
गंगास्नानंफलं तस्य जायते नात्र संशयः॥

अर्थातः रुद्राक्ष को मस्तक पर धारण करके जो मनुष्य सिर से स्नान करता हैं उसे गंगा स्नान के समान परम पवित्र स्नान का फल प्राप्त होता हैं तथा वह मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता हैं इसमें संशय नहीं हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> **Shop Online** | **Order Now**

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > **Shop Online** | **Order Now**

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रहमा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र

श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र
ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

जुलाई 2018 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	रवि	आषाढ़	कृष्ण	तृतीया	17:43	श्रवण	21:36	विषकुंभ	-	विष्टि	17:43	मकर	-
2	सोम	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्थी	20:06	धनिष्ठा	24:34	विषकुंभ	05:56	बव	06:56	मकर	11:08
3	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	पंचमी	22:11	शतभिषा	27:13	प्रीति	06:53	कौलव	09:11	कुंभ	-
4	बुध	आषाढ़	कृष्ण	षष्ठी	23:48	पूर्वाभाद्रपद	29:22	आयुष्मान	07:31	गर	11:04	कुंभ	22:54
5	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	सप्तमी	24:48	उत्तराभाद्रपद	-	सौभाग्य	07:44	विष्टि	12:23	मीन	-
6	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	अष्टमी	25:5	उत्तराभाद्रपद	06:53	शोभन	07:25	बालव	13:02	मीन	-
7	शनि	आषाढ़	कृष्ण	नवमी	24:34	रेवति	07:39	अतिगंड	06:29	तैतिल	12:56	मीन	07:40
8	रवि	आषाढ़	कृष्ण	दशमी	23:17	अश्विनी	07:38	धृति	26:41	वणिज	12:01	मेष	-
9	सोम	आषाढ़	कृष्ण	एकादशी	21:16	भरणी	06:50	शूल	23:51	बव	10:21	मेष	12:32
10	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	द्वादशी	18:37	रोहिणि	27:15	गंड	20:31	कौलव	08:00	वृष	-
11	बुध	आषाढ़	कृष्ण	त्रयोदशी	15:28	मृगशिरा	24:43	वृद्धि	16:47	वणिज	15:28	वृष	14:02
12	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्दशी	11:58	आद्रा	21:54	ध्रुव	12:45	शकुनि	11:58	मिथुन	-
13	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	अमावस्या	08:17	पुनर्वसु	18:58	व्याघात	08:34	नाग	08:17	मिथुन	13:43
14	शनि	आषाढ़	शुक्ल	एकम-द्वितीया	25:0	पुष्य	16:06	वज्र	24:15	बालव	14:46	कर्क	-
15	रवि	आषाढ़	शुक्ल	तृतीया	21:43	आश्लेषा	13:27	सिद्धि	20:24	तैतिल	11:19	कर्क	13:28

16	सोम	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्थी	18:51	मघा	11:12	व्यतिपात	16:54	वणिज	08:13	सिंह	-
17	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	पंचमी	16:32	पूर्वाफाल्गुनी	09:27	वरियान	13:52	बालव	16:32	सिंह	15:07
18	बुध	आषाढ़	शुक्ल	षष्ठी	14:51	उत्तराफाल्गुनी	08:19	परिग्रह	11:20	तैतिल	14:51	कन्या	-
19	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	सप्तमी	13:52	हस्त	07:52	शिव	09:24	वणिज	13:52	कन्या	19:56
20	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	अष्टमी	13:36	चित्रा	08:09	सिद्ध	08:03	बव	13:36	तुला	-
21	शनि	आषाढ़	शुक्ल	नवमी	14:01	स्वाति	09:07	साध्य	07:16	कौलव	14:01	तुला	-
22	रवि	आषाढ़	शुक्ल	दशमी	15:03	विशाखा	10:43	शुभ	07:01	गर	15:03	तुला	04:17
23	सोम	आषाढ़	शुक्ल	एकादशी	16:38	अनुराधा	12:52	शुक्ल	07:13	विष्टि	16:38	वृश्चिक	-
24	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	द्वादशी	18:37	जेष्ठा	15:27	ब्रह्म	07:48	बालव	18:37	वृश्चिक	15:28
25	बुध	आषाढ़	शुक्ल	त्रयोदशी	20:53	मूल	18:21	इन्द्र	08:40	कौलव	07:43	धनु	-
26	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्दशी	23:20	पूर्वाषाढ़	21:25	वैधृति	09:43	गर	10:06	धनु	-
27	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	पूर्णिमा	25:50	उत्तराषाढ़	24:32	विषकुंभ	10:51	विष्टि	12:35	धनु	04:12
28	शनि	श्रावण	कृष्ण	एकम	28:16	श्रवण	27:37	प्रीति	12:00	बालव	15:04	मकर	-
29	रवि	श्रावण	कृष्ण	द्वितीया	-	धनिष्ठा	-	आयुष्मान	13:04	तैतिल	17:25	मकर	17:06
30	सोम	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	06:32	धनिष्ठा	06:31	सौभाग्य	13:57	गर	06:32	कुंभ	-
31	मंगल	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	08:31	शतभिषा	09:09	शोभन	14:36	विष्टि	08:31	कुंभ	-

जुलाई 2018 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	रवि	आषाढ़	कृष्ण	तृतीया	17:43	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोदय 20:46 पर)
2	सोम	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्थी	20:06	-
3	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	पंचमी	22:11	नाग पंचमी, कोकिला पंचमी
4	बुध	आषाढ़	कृष्ण	षष्ठी	23:48	-
5	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	सप्तमी	24:48	-
6	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	अष्टमी	25:5	शीतलाष्टमी, बोहरा अष्टमी
7	शनि	आषाढ़	कृष्ण	नवमी	24:34	-
8	रवि	आषाढ़	कृष्ण	दशमी	23:17	-
9	सोम	आषाढ़	कृष्ण	एकादशी	21:16	योगिनी एकादशी व्रत
10	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	द्वादशी	18:37	भौम प्रदोष व्रत
11	बुध	आषाढ़	कृष्ण	त्रयोदशी	15:28	शिव चतुर्दशी, मासिक शिवरात्रि व्रत
12	गुरु	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्दशी	11:58	रोहिणी व्रत (जैन)
13	शुक्र	आषाढ़	कृष्ण	अमावस्या	08:17	देव-पितृकार्य-स्नान-दान हेतु उत्तम अमावस्या, आषाढ़ी अमावस्या, श्राद्ध की अमावस्या, हलहारिणी अमावस्या, पुष्य नक्षत्र (18.58 से), क्षय तिथि गुप्त नवरात्रा प्रारंभ
14	शनि	आषाढ़	शुक्ल	एकम-द्वितीया	25:0	श्री जगन्नाथ रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया, चंद्रदर्शन, पुष्य नक्षत्र (रात्रि 16:06 तक)

15	रवि	आषाढ़	शुक्ल	तृतीया	21:43	-
16	सोम	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्थी	18:51	विनायकी गणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोस्त 21:57 पर)
17	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	पंचमी	16:32	सूर्य कर्क संक्रांति, स्कन्द पंचमीए
18	बुध	आषाढ़	शुक्ल	षष्ठी	14:51	सौर मास प्रारंभ श्रावण मास प्रारंभ, कंदर्भा षष्ठी, कुमार षष्ठी,
19	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	सप्तमी	13:52	विवस्ता सप्तमी
20	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	अष्टमी	13:36	दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा)
21	शनि	आषाढ़	शुक्ल	नवमी	14:01	भडल्या नवमी, भड़ली नवमी, गुप्त नवरात्रा समाप्त, मंसा पूजा
22	रवि	आषाढ़	शुक्ल	दशमी	15:03	आशा दशमी, गिरिजा पूजा दशमी,
23	सोम	आषाढ़	शुक्ल	एकादशी	16:38	देवशयनी, हरिशयनी एकादशी, रविनारायण एकादशी, चातुर्मास प्रारंभ, देव शयन
24	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	द्वादशी	18:37	वासुदेव द्वादशी, प्रदोष व्रत
25	बुध	आषाढ़	शुक्ल	त्रयोदशी	20:53	प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रत प्रारंभ,
26	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्दशी	23:20	चौमासी चौदस
27	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	पूर्णिमा	25:50	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजन, खग्रास चंद्रग्रहण, व्रत-स्नान-दान हेतु उत्तम पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा
28	शनि	श्रावण	कृष्ण	एकम	28:16	श्रावण मास प्रारंभ, श्रावण में शाक वर्जित, बृज मण्डल हिण्डोला आरंभ
29	रवि	श्रावण	कृष्ण	द्वितीया	-	-
30	सोम	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	06:32	श्रावण प्रथम सोमवार,
31	मंगल	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	08:31	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोदय 20:41), मंगला गौरी व्रत

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं। >> **Shop Online** | **Order Now**

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्‌वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इस लिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

राशी रत्न एवं उपरत्न

सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

जुलाई 2018 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
06	प्रातः 06:55 से अगले दिन प्रातः 05:02 तक	18	प्रातः 08:21 से अगले दिन प्रातः 05:06 तक
08	प्रातः 05:02 से प्रातः 07:39 तक	21	प्रातः 05:07 से प्रातः 09:08 तक
10	प्रातः 05:03 से प्रातः 05:021 तक	23	प्रातः 05:08 से दोपहर 12:54 तक
11	प्रातः 05:03 से रात 12:44 तक	27	रात 12:34 से रातभर
12	रात 09:55 से अगले दिन सांय 06:59 तक	29	सूर्योदय से रात 03:38 तक
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		**द्विपुष्कर योग (दौ गुना फल दायक)**	
10	प्रातः 05:03 से प्रातः 05:021 तक	29	प्रातः 04:20 से अगले दिन प्रातः 05:11 तक
विघ्नकारक भद्रा			
01	प्रातः 04:38 से सांय 05:55 तक (पाताल)	19	दोपहर 01:36 से रात्र 01:22 तक (पाताल)
04	रात 12:06 से अगले दिन दोप.12:42 तक (पृथ्वी)	22	रात 03:32 से अगले दिन सांय 04:24 तक (स्वर्ग)
08	दोपहर 12:16 से रात 11:31 तक (स्वर्ग)	26	रात 11:16 से अगले दिन दोप. 12:33 तक (पाताल)
11	दोपहर 03:34 से रात 01:50 तक (स्वर्ग)	31	रात 07:44 से अगले दिन प्रात: 08:43 तक (पृथ्वी)
16	प्रातः 08:04 से संध्या 06:41 तक (पृथ्वी)		

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।
- रविपुष्य योग अत्यंत शुभ योग माना गया हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach …………………………………	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ……………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach …………………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach …………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………..	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ……………………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach …………………………..	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach …………………………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………………………………	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………………………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ………………………….	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……….……	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ………………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………………………………..	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach …………………………….	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ……………………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach …………………………..	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……………………………..	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach …………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……………	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach …………………………………..	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……….....	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach …………………………	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach …………………………………	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ………………….	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………..	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach …………………………	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……………………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..……………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..………………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..………………..	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..………………..	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………...…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..…………...……….	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..……………………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………...…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..……………………………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..…………...……….	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..…………………..	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..……………………....	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach …………………………………..	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..……………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire **Bangkok**	(**बैंकोक** पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका जुलाई-2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

JULY 2018